समय पंचांग

विक्रम संवत् 2073
2016-17



डॉ. प्रेम गुप्ता
वास्तु एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ

9022031009 • 9820045774 • 9930318119
www.drpremgupta.com • info@drpremgupta.com

॥ चावली माता ॥



चावली माता की अनन्य शरण में ही
सदा वास करने वाले

पूज्य पिताजी स्व. श्री चिरंजीलालजी मुरारका
एवं ममतामयी
पूज्य माँ स्व. श्रीमती बदामीदेवी मुरारका
की पावन स्मृति को कोटि-कोटि
वंदन करते हुए

सादर
काशी मुरारका एवं परिवार
सी.बी. मुरारका चेरिटेबल ट्रस्ट बी-310, विरवानी इंडस्ट्रियल इस्टेट
गोरेगांव (पूर्व) मुंबई - 400 063

मुरारका भवन, लक्ष्मणगढ़, सीकर (राजस्थान)

हमारी भावनाएँ हमारा सच्चा स्वरुप नहीं हैं. हमारे मूड भी हमारा सच्चा स्वरुप नहीं है. हमारे विचार भी हमारा सच्चा स्वरुप नहीं है. हम इन चीजों के बारे में सोच सकते हैं, यह तथ्य हमें इन चीजों तथा प्राणी जगत से अलग करता है. आत्म-जागरुकता हमें अलग खड़े होने में सक्षम बनाती है और उस तरीके की जाँच करने में भी, जिससे हम खुद को ''देखते'' हैं.

दरअसल जब तक हम इस बात पर ध्यान नहीं देते कि हम खुद को किस तरह देखते हैं और दूसरों को किस तरह देखते हैं, तब तक हम यह नहीं समझ सकेंगे कि दूसरे स्वयं को और उनके संसार को किस तरह देखते तथा अनुभव करते हैं. यह ज्ञान न होने से हम उनके व्यवहार का विश्लेषण करते समय उन पर अपने इरादे थोप देंगे और इसके बावजूद खुद को निष्पक्ष समझेंगे.

यह हमारी व्यक्तिगत क्षमता को बहुत सीमित कर देता है और दूसरों से जुड़ने की हमारी योग्यता को भी. परंतु आत्म-जागरुकता की अनूठी मानवीय प्रतिभा की बदौलत हम अपनी 'जमी हुई धारणाओं' की जाँच कर सकते हैं. हम यह तय करने के लिए उनकी जाँच कर सकते हैं कि वे वास्तविकता या सिंद्धातों पर आधारित हैं या फिर वे कंडिशनिंग या परिस्थितियों का परिणाम हैं.

हिन्दू संस्कृति के सजग प्रहरी

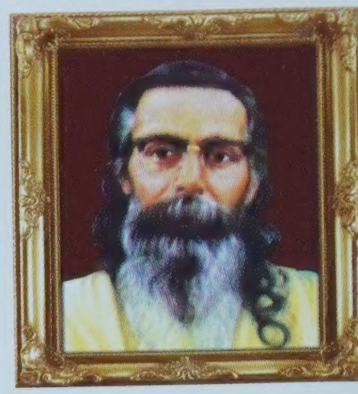
परम पूज्य
श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार



परम पूज्य
स्वामी अखंडानंद सरस्वती महाराज



परम पूज्य
श्री गोलवलकर गुरूजी





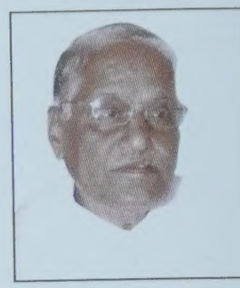
श्री काशी मोरारका



श्री सत्यनारायण काबरा



श्री कृष्ण कुमार पित्ती



श्री लक्ष्मीनारायण बियाणी



श्री देवकीनंदन जिंदल



श्री जगदीश तोदी



श्री हरिनंदन अग्रवाल



श्री सुरेश अग्रवाल



श्रीमती मंजू लोढा



श्रीमती उर्मिला रूंगटा



श्रीमती सरिता मानसिंगका



श्रीमती राजेश्वरी मोदी



श्री नंदू अग्रवाल



श्री पिंटू कुमावत



श्री वीरेन्द्र याज्ञिक



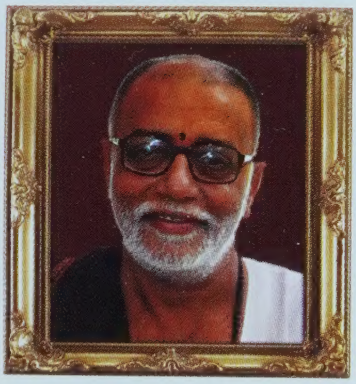
श्री राजेन्द्र तुलस्यान

हिन्दू संस्कृति के सजग प्रहरी

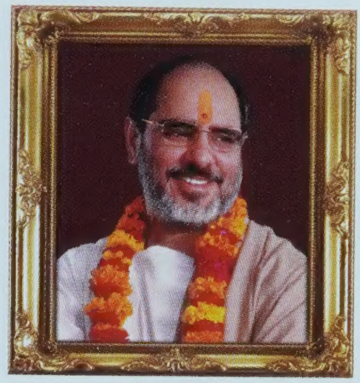
परम पूज्य
स्वामी सत्यमित्रानंद गिरिजी



परम पूज्य
संत श्री मोरारी बापु



परम पूज्य
श्री रमेश भाई ओझा

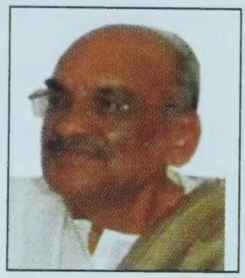




श्री अशोक गोयल



श्री विमल केड़िया



श्री स्वरूप चंद गोयल



श्री विश्वनाथ चौधरी



श्री सुरेश पंसारी



श्री एम.एल. सोनी



सी. ए. श्री वी. के. बेसवाल



श्री विनोद लाठ



श्री विनोद भीमराजका



श्री नवीन पंसारी



सी. ए. श्री विजय अग्रवाल



श्री पुरुषोत्तम खेतान



श्री योगेन्द्र राजपुरिया



श्री भंवरलाल अग्रवाल



श्री श्रीकांत मंत्री



श्री संजीव माहेश्वरी

हिन्दू संस्कृति के सजग प्रहरी

महामंडलेश्वर
स्वामी विद्यानंदजी सरस्वती



परम पूज्य
दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी



परम पूज्य
श्रीकांत जी बालव्यास





श्री विजय वासन



श्री देशबंधु कागजी



श्री रमन अग्रवाल



श्री जय कुमार गुप्ता



श्री मनसुखलाल ढोडिया



डॉ. श्याम अग्रवाल



श्री चन्द्रशेखर अग्रवाल



श्री सत्यनारायण मौर्य बाबा



श्री नारायण एम. अल्वा



श्री अशोक दीपचंद



श्री पंकज पारेख



श्री राम जाजोदिया

पंचांग का माहात्म्य

तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करणः इन पांचों का जिसमें स्पष्ट मान आदि रहता है, उसे पंचांग कहते हैं. जो यथासमय पंचांग का ज्ञान रखता है, उसे पाप स्पर्श नहीं कर सकता. तिथि का श्रवण करने से श्री की प्राप्ति होती है, वार के श्रवण से आयु की वृद्धि होती है, नक्षत्र का श्रवण पाप को नष्ट करता है, योग के श्रवण से रोग का निवारण होता है और करण के श्रवण से कार्य की सिद्धि होती है. यह पंचांग श्रवण का फल कहा गया है. पंचांग के फल को सुनने से गंगास्नान का फल प्राप्त होता है.

॥ जय श्री कृष्णा ॥

॥ अपनी बात ॥



राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कितना सटीक और सारगर्भित तथ्य लिखा है.

विज्ञान से भी फलित ज्योतिष हो रहा अब सिद्ध है।
यद्यपि अविज्ञों से हुआ वह निन्द्य और निषिद्ध है।।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रायः 'भविष्यवाणियाँ गलत पायी जाती हैं' पर इसमें ज्योतिष शास्त्र की कोई भूमिका नहीं होती बल्कि इसके कारण 'जन्म समय का सही नहीं होना, गणित की अशुद्धि, अनुभव का अभाव और ज्योतिर्विद का अल्पज्ञान होता है'. हम इस बात को कैसे नकार सकते हैं कि ग्रहों का प्रभाव जीवन पर नहीं पड़ता क्योंकि...

समुद्र में ज्वार-भाटे का कारण चन्द्रमा माना जाता है • अमावस्या और पूर्णिमा को अधिकांश हत्याकाण्ड एंव अपराध होते हैं • अमावस्या और पूर्णिमा के दिन फाइलेरिया रोग की वृद्धि होती है • अमावस्या और पूर्णिमा के आस-पास के दिनों में कामुकता, पागलपन और मिरगी के दौरे पड़ते हैं • सूर्य की गति के अनुसार, सूर्यमुखी पुष्प में परिवर्तन आते हैं. वह घूम जाते हैं • टेसू का फूल प्रातः सफेद रंग का, सुबह के बाद गुलाबी व दोपहर में लाल रंग का, हो जाता है • सूर्यग्रहण के समय पक्षी जंगल 24 घंटे पहले बोलना बंद कर देते हैं. जानवर भी भयभीत हो जाते हैं • कुमुदिनी का फूल केवल चन्द्रकिरणों से ही खिलता है. इसका रात्रि में खिलना मनोहारी घटना मानी जाती है • कमल दिन में खिलता है और रात में बंद हो जाता है • इसी तरीके से मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और राहु केतू ग्रहों का भी बहुत प्रभाव पड़ता है तभी तो वैज्ञानिक इन ग्रहों पर शोध कर-कर के परिणामों से आश्चर्यचकित होकर नयी-नयी प्रेरणा पाते रहते है.

पर आपको पता है कि ग्रहों स्थिति और गति को समझना है, तो पंचाग के अलावा और कोई साधन नहीं हैं और हमें पता है कि आपके पास यदि हमारा **समय पंचांग** है तो फिर चिंता की कोई बात नहीं है. हाँ एक बात और शास्त्र बताते हैं कि पंचांग के प्रचार प्रसार में सहयोग देने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है.

शेष भगवत् कृपा

डॉ. प्रेम गुप्ता
वास्तु एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ

विषय सूची

विषय सूची

विक्रम संवत् 2073 व्रत त्यौहार • श्रीमती प्रियंका प्रणाम गुप्ता

अप्रैल

01	शुक्र	शीतलाष्टमी व्रत
03	रवि	पंचक प्रारंभ, पापमोचनी एकादशी (स्मार्त)
04	सोम	पापमोचनी एकादशी (वैष्णव)
05	मंगल	भौम प्रदोष व्रत, वारुणी योग, मासशिवरात्रि व्रत
07	गुरु	चैत्र अमावस्या, पंचक समाप्त
08	शुक्र	वि. संवत् 2073 प्रारंभ, गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रारंभ, चेटीचंड, तैलाभ्यङ्ग
09	शनि	गणगौर तृतीया
11	सोम	श्री लक्ष्मी पंचमी, नाग पंचमी
13	बुध	अर्द्धकुंभी पर्व- मुख्य स्नान (हरिद्वार), वैशाख संक्रांति
14	गुरु	डॉ. आंबेडकर जयंती, श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी
15	शुक्र	श्रीराम नवमी, चैत्र नवरात्र समाप्त
17	रवि	कामदा एकादशी व्रत, दोलोत्सव
19	मंगल	श्री महावीर जयंती, भौम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत
21	गुरु	श्रीसत्यनारायण व्रत
22	शुक्र	श्री हनुमान जयंती, चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नानारंभ
25	सोम	श्री गणेश चतुर्थी व्रत

मई

01	रवि	महाराष्ट्र व विश्व मजदूर दिवस, पंचक प्रां.
03	मंगल	वरुथिनी एकादशी व्रत, वल्लभाचार्य जयंती
04	बुध	प्रदोष व्रत
05	गुरु	पंचक समाप्त, मासशिवरात्रि व्रत
06	शुक्र	वैशाख अमावस्या (स्नानदानादि)
07	शनि	रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती

मई

08	रवि	भगवान श्री परशुराम जयंती
09	सोम	अक्षय तृतीया, बदरी-केदार यात्रा
11	बुध	आद्यगुरु श्री शंकराचार्य जयंती
12	गुरु	श्रीगङ्गा-जयंती, गुरु-पुष्य योग
14	शनि	ज्येष्ठ संक्रांति, जानकी (सीता) नवमी, श्री दूर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
17	मंगल	मोहिनी एकादशी व्रत
19	गुरु	प्रदोष व्रत
20	शुक्र	नृसिंह जयंती
21	शनि	बुद्ध जयंती, वैशाख पूर्णिमा, वैशाख-स्नान समाप्त, कुंभ महापर्व (उज्जैन)-मुख्य शाही स्नान
22	रवि	श्री नारद जयंती, वीणादान
25	बुध	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
28	शनि	पंचक प्रारंभ

जून

01	बुध	पंचक समाप्त, अपरा एकादशी व्रत
02	गुरु	प्रदोष व्रत
03	शुक्र	मासशिवरात्रि व्रत
04	शनि	शनैश्वर जयंती पितृकार्येषु अमावस
05	रवि	ज्येष्ठ अमावस्या, श्रीगङ्गा स्नान प्रारंभ, करवीर व्रत
07	मंगल	महाराणा प्रताप जयंती, रमजान प्रारंभ
14	मंगल	आषाढ़ संक्रांति, गंगा दशहरा पर्व(हरिद्वार)
16	गुरु	निर्जला एकादशी व्रत
17	शुक्र	प्रदोष व्रत, वट पूर्णिमा व्रतारंभ
19	रवि	वटसावित्री व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत
20	सोम	ज्येष्ठ पूर्णिमा, संत कबीर जयंती

जून

23	गुरु	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24	शुक्र	पंचक प्रारंभ
29	बुध	पंचक समाप्त
30	गुरु	योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)

जुलाई

01	शुक्र	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
02	शनि	प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत
04	सोम	आषाढ़ी व सोमवती अमावस्या
05	मंगल	गुप्त नवरात्री प्रारंभ
06	बुध	श्री जगन्नाथपुरी रथ यात्रा, रमजान ईद
12	मंगल	श्री दूर्गाष्टमी
13	बुध	गुप्त नवरात्री समाप्त
15	शुक्र	देवशयनी एकादशी व चातुर्मास्य व्रत
16	शनि	श्रावण संक्रांति
17	रवि	प्रदोष व्रत
19	मंगल	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व कोकिला व्रत
23	शनि	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
26	मंगल	पंचक समाप्त, मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ
30	शनि	कामिका एकादशी व्रत
31	रवि	प्रदोष व्रत

अगस्त

01	सोम	मासशिवरात्रि व्रत, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव
02	मंगल	हरियाली (भौमवती) अमावस्या
05	शुक्र	मधुस्त्रवा, हरियाली-सिंधारा तीज
06	शनि	दूर्वा गणपति व्रत
07	रवि	नागपंचमी
08	सोम	श्री कल्कि जयंती
10	बुध	गोस्वामी तुलसीदास जयंती

अगस्त

11	गुरु	श्री दूर्गाष्टमी
14	रवि	पवित्रा-पुत्रदा एकादशी व्रत
15	सोम	भारत स्वतंत्रता दिवस, सोम प्रदोष व्रत
16	मंगल	भाद्रपद संक्रांति
17	बुध	पतेती, श्री सत्यनारायण व्रत
18	गुरु	श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, ऋषि तर्पन, गायत्री जयंती, कोकिला व्रत समाप्त
21	रवि	श्री गणेश बहुला चतुर्थी व्रत
24	बुध	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)
25	गुरु	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)
28	रवि	अजा एकादशी व्रत
29	सोम	सोम प्रदोष व्रत, वत्स द्वादशी (पूजा)
30	मंगल	मासशिवरात्रि व्रत, कैलाश यात्रा प्रा.

सितम्बर

01	गुरु	भाद्रपद व कुशग्रहणी-पिठोरी अमावस्या
04	रवि	हरितालिका व गौरी तृतीया, श्रीवराह जयंती
05	सोम	श्री गणेश चतुर्थी, कलंक चतुर्थी
06	मंगल	ऋषि पंचमी पर्व
09	शुक्र	दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.
12	सोम	बकरी ईद
13	मंगल	पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयंती
14	बुध	पंचक प्रारंभ, प्रदोष व्रत
15	गुरु	अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन, कदली व्रत
16	शुक्र	भाद्रपद पूर्णिमा, श्राद्ध प्रा., आश्विन संक्रांति
17	शनि	महालय श्राद्ध प्रारंभ, विश्वकर्मा पूजन
18	रवि	पंचक समाप्त, द्वितीया श्राद्ध
19	सोम	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया व चतुर्थी श्राद्ध
20	मंगल	भरणी व पंचमी श्राद्ध
21	बुध	षष्ठी श्राद्ध
22	गुरु	सप्तमी श्राद्ध

सितम्बर

23	शुक्र	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न, अष्टमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत
24	शनि	सौभाग्यवतीनां व नवमी श्राद्ध
25	रवि	दशमी श्राद्ध
26	सोम	इंदिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध
27	मंगल	संन्यासीनां व द्वादशी श्राद्ध
28	बुध	प्रदोष व्रत, मघा व त्रयोदशी श्राद्ध
29	गुरु	मृतों का व चतुर्दशी श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत
30	शुक्र	आश्विन (महालय) अमावस्या, श्राद्ध समाप्त, पितृ विसर्जन

अक्टूबर

01	शनि	शारदीय नवरात्रारंभ, दुर्गा पूजा, नाना श्राद्ध महाराजा अग्रसेन जयंती, घटस्थापना
02	रवि	महात्मा गाँधी व शास्त्री जयंती
06	गुरु	उपाङ्ग ललिता व्रत
09	रवि	श्रीदूर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती पूजन
10	सोम	महानवमी, नवरात्र समाप्त
11	मंगल	विजयादशमी (दशहरा), सरस्वती विसर्जन
12	बुध	पंचक प्रारंभ, पापांकुशा एकादशी व्रत
13	गुरु	प्रदोष व्रत
15	शनि	शरद पूर्णिमा, कोजागर पूजा, श्री सत्यनारायण व्रत
16	रवि	आश्विन पूर्णिमा, पंचक समाप्त, महर्षि वाल्मीकि जयंती
19	बुध	करवा चौथ व्रत, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
22	शनि	अहोई अष्टमी व्रत
23	रवि	राधाष्टमी, कालाष्टमी
26	बुध	रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी
28	शुक्र	धनत्रयोदशी, मासशिवरात्रि व्रत, प्रदोष व्रत, धनवंतरी व श्री हनुमान जयंती
29	शनि	नरक चतुर्दशी, रूप चौदस

अक्टूबर

30	रवि	दीपावली, लक्ष्मी पूजा, कार्तिक अमावस्या, महावीर निर्वाण दिवस, काली पूजा
31	सोम	अन्नकूट व गोवर्धन पूजा, बलिप्रतिपदा

नवम्बर

01	मंगल	भाई दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजन
06	रवि	छठ पूजा, सूर्य षष्ठी पर्व
08	मंगल	पंचक प्रारंभ, गोपाष्टमी
10	गुरु	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
11	शुक्र	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), चातुर्मास्य व्रत, तुलसी विवाह
12	शनि	पंचक समाप्त, प्रदोष व्रत
13	रवि	वैकुण्ठ चतुर्दशी
14	सोम	पं. नेहरू जयंती, बाल दिवस, श्री गुरुनानक जयंती, कार्तिक पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत
17	गुरु	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
21	सोम	कालभैरवाष्टमी
25	शुक्र	उत्पन्ना एकादशी व्रत
26	शनि	शनि प्रदोष व्रत
27	रवि	मासशिवरात्रि व्रत, श्री बालाजी जयंती
29	मंगल	मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस्या

दिसम्बर

04	रवि	श्रीराम विवाहोत्सव, नाग पंचमी
05	सोम	पंचक प्रारंभ
07	बुध	श्रीदूर्गाष्टमी
10	शनि	मोक्षदा एकादशी, श्री गीता जयंती, पंचक समाप्त
11	रवि	प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी
12	सोम	पिशाचमोचन श्राद्ध
13	मंगल	श्रीदत्तात्रेय जयंती, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत

दिसम्बर

15	गुरु	पौष संक्रांति
17	शनि	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
21	बुध	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध
24	शनि	सफला एकादशी व्रत
25	रवि	क्रिसमस डे, नाताल
26	सोम	सोम प्रदोष व्रत
27	मंगल	मासशिवरात्रि व्रत
28	बुध	पितृकार्येषु अमावस्या
29	गुरु	पौष अमावस्या

जनवरी

01	रवि	पंचक प्रारंभ, गौरी पूजन
05	गुरु	श्री गुरु गोविंद सिंह जयंती
06	शुक्र	पंचक समाप्त
08	रवि	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)
09	सोम	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)
10	मंगल	भौम प्रदोष व्रत
11	बुध	श्री सत्यनारायण व्रत
12	गुरु	पौष पूर्णिमा, स्वा. विवेकानंद जयंती, शाकम्भरी जयंती
13	शुक्र	लोहड़ी पर्व
14	शनि	माघ (मकर) संक्रांति
15	रवि	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, गौरी चतुर्थी, सुन्दरी व्रत
23	सोम	षट्तीला एकादशी व्रत, नेताजी सुभाषचंद्रबोस जयंती
24	मंगल	तिल द्वादशी
25	बुध	प्रदोष व्रत
26	गुरु	भारत गणतंत्र दिवस (68 वाँ), मासशिवरात्रि व्रत
27	शुक्र	माघ (मौनी) अमावस्या
29	रवि	पंचक प्रारम्भ

जनवरी

30	सोम	गौरी तृतीया (गोतंरी) व्रत
31	मंगल	अङ्गारकी श्रीगणेश तिल चतुर्थी

फरवरी

01	बुध	वसंत (श्री) पंचमी, सरस्वती पूजन
02	गुरु	पंचक समाप्त
03	शुक्र	श्री माधवाचार्य जयंती
04	शनि	भीष्माष्टमी
07	मंगल	जया एकादशी व्रत
08	बुध	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी
10	शुक्र	माघ पूर्णिमा, श्री गुरु रविदास जयंती, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री ललिता जयंती
12	रवि	फाल्गुन संक्रांति
14	मंगल	अङ्गारकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत
18	शनि	वसंत ऋतु प्रारंभ
19	रवि	जानकी व्रत
21	मंगल	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
22	बुध	विजया एकादशी व्रत
24	शुक्र	प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत
25	शनि	पंचक प्रारंभ
26	रवि	फाल्गुन अमावस्या
28	मंगल	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती

मार्च

01	बुध	पंचक समाप्त
05	रवि	होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णा अष्टमी
08	बुध	आमलकी एकादशी व्रत
09	गुरु	गोविन्द द्वादशी
10	शुक्र	प्रदोष व्रत
12	रवि	फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य जयंती
13	सोम	वसन्तोत्सव, होला-मेला, धुलण्डी
14	मंगल	चैत्र संक्रांति, संत तुकाराम जयंती

मार्च

16	गुरु	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
17	शुक्र	श्री रंग पंचमी
20	सोम	शीतला पूजन
24	शुक्र	पंचक प्रारंभ, पापमोचनी एकादशी व्रत
25	शनि	शनि प्रदोष व्रत
27	सोम	पितृकार्येषु अमावस्या
28	मंगल	चैत्र अमावस्या, वि. संवत् 2074 प्रारंभ, चैत्र नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापना व श्रीदुर्गा पूजा

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

दि.	महीना	दिन	व्रत व पर्व
01	अप्रैल	शुक्र	वरसी तप प्रारंभ
14	अप्रैल	गुरु	ओली तप प्रारंभ
19	अप्रैल	मंगल	श्रीमहावीर जयंती
22	अप्रैल	शुक्र	ओली तप समाप्त
09	मई	सोम	वरसी तप समाप्त
16	मई	सोम	केवलज्ञान दिवस
05-07	जून	----	मे. चक्रश्वरीदेवी (सरहिंद)
19	जुलाई	मंगल	चातुर्मास्य नियम प्रारंभ
19	जुलाई	मंगल	तेरापन्थ स्थापना दिवस
31-02	जु.-अग	----	जैन महोत्सव
30	अगस्त	मंगल	पर्युषण पर्व प्रारंभ
06	सितम्बर	मंगल	सम्वत्सरी महापर्व(पंचक पक्ष)
07	सितम्बर	बुध	श्रीकालू निर्वाण दिवस
10	सितम्बर	शनि	आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण
30	अक्टूबर	रवि	श्रीमहावीर निर्वाण
31	अक्टूबर	सोम	श्रीवीर संवत् 2542 प्रारंभ
01	नवम्बर	मंगल	आचार्य श्रीतुलसी जन्म
05	नवम्बर	शनि	ज्ञान पंचमी
14	नवम्बर	सोम	चातुर्मास्य व्रत समाप्त
23	नवम्बर	बुध	श्रीपाश्वनार्थ जयंती
सन् 2017 ई.			
25	जनवरी	बुध	मेरू त्रयोदशी
03	फरवरी	शुक्र	मर्यादा महोत्सव
10-12	मार्च	----	जैन महोत्सव (कांगड़ा)
19	मार्च	रवि	ऋषभदेव जयंती
21	मार्च	मंगल	वरसी तप प्रारंभ
03	अप्रैल	सोम	ओली तप प्रारंभ

मुस्लिम त्यौहार

दि.	महीना	दिन	व्रत व पर्व
09-14	अप्रैल	----	उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती(अजमेर)
21	अप्रैल	गुरु	जन्म श्रीहजरत अली
05	मई	गुरु	शबे-मिराज
23	मई	सोम	शबे-बारात
07	जून	मंगल	रमज़ान (रोज़े शुरू)
27	जून	सोम	शहादत-ए-हजरत अली
01	जुलाई	शुक्र	जमातुलविदा
03	जुलाई	रवि	शबे-कदर
07	जुलाई	गुरु	ईद-उल-फितर
13	सितम्बर	मंगल	ईदुलजुहा (बकरीद)
03	अक्टूबर	सोम	मुहर्रम (हिजरी 1438 प्रा.)
12	अक्टूबर	बुध	मुहर्रम (ताजिया)
20	नवम्बर	रवि	चेहलुम
29	नवम्बर	मंगल	शहादत-ए-इमामहसन
30	नवम्बर	बुध	आखिरी-चहार
13	दिसम्बर	मंगल	ईद-ए-मिलाद
18	दिसम्बर	रवि	ईद-ए-मौलाद
सन् 2017 ई.			
10	जनवरी	मंगल	ग्यारवीं शरीफ

क्रिश्चियन त्यौहार

03	अप्रैल	रवि	लॉ (Low) संडे
01	मई	रवि	रोगेशन संडे
15	मई	रवि	विंटसंडे-(Pentecost)
25	दिसम्बर	रवि	क्रिसमस डे
सन् 2017 ई.			
01	जनवरी	रवि	नववर्ष प्रारंभ
14	अप्रैल	शुक्र	गुड फ्राइडे
16	अप्रैल	रवि	ईस्टर संडे

कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व-उज्जैन

सिंहस्थ (उज्जैन) कुम्भपर्व की मुख्य स्नान तिथियां:

1. **प्रथम स्नान:** चैत्र शुक्ल सप्तमी, बुधवार 13 अप्रैल, 2016 ई.
2. **द्वितीय स्नान:** चैत्र शुक्ल एकादशी, रविवार 17 अप्रैल, 2016 ई.
3. **तृतीय स्नान:** चैत्री पूर्णिमा, शुक्रवार 22 अप्रैल, 2016 ई.
4. **चतुर्थ स्नान (वरूथिनी एकादशी):** वैशाख कृष्ण एकादशी, मंगलवार 03 मई, 2016 ई.
5. **पंचम स्नान:** वैशाख अमावस, शुक्रवार 06 मई, 2016 ई.
6. **षष्ठ स्नान:** वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार 09 मई, 2016 ई.
7. **सप्तम स्नान:** वैशाख शुक्ल पंचमी, बुधवार 11 मई, 2016 ई.
8. **अष्टम स्नान:** वैशाख शुक्ल एकादशी, मंगलवार 17 मई, 2016 ई.
9. **नवम (प्रमुख शाही) स्नान:** वैशाख पूर्णिमा, शनिवार 21 मई, 2016 ई. को कुम्भ पर्व की प्रमुख स्नान तिथि होगी. इस दिन विभिन्न अखाड़ों एवं साधु-महात्माओं की शाही शोभा यात्राएं निकलेंगी. इस दिन उज्जैन में 05 घं. 48 मिं. पर होगा, परन्तु स्नानादि का विशेष पुण्यकाल प्रातः 04 घं. मिं. से ही प्रारम्भ हो जाएगा.

विशेष- उज्जयिनि के सिंहस्थ कुम्भ में शाही स्नान एक बार ही होता है.

यदि अरुणोदय काल में भीड़ आदि के कारण कुम्भ या अर्धकुम्भी स्नान सम्भव न हो, तो सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी कर लेना चाहिए. कुम्भ महापर्व का माहात्म्य तो सारा दिन ही रहेगा. ●



वासंतिक नवरात्रि 08 अप्रैल 2016, शुक्रवार	नवरात्रि	शारदीय नवरात्रि 01 अक्टूबर 2016, शनिवार

चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन को नवरात्रि कहते हैं. इस प्रकार एक वर्ष में चार नवरात्रि होती है, इनमें चैत्र की नवरात्रि 'बासन्तिक नवरात्रि' और आश्विन की नवरात्रि 'शारदीय नवरात्रि' कहलाती है. इनमें आद्यशक्ति भगवती दुर्गा की विशेष आराधना की जाती है.

विधिः चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन बासन्तिक नवरात्रि प्रारंभ होती हैं, अतः इस दिन दुर्गापूजन एवं घट-स्थापना की जाती है. नवरात्रि करने वाले व्यक्ति को एक दिन पूर्व से ही इस कार्य में संलग्न हो जाना चाहिए. उस माँ दुर्गा का स्मरण करते हुए सायंकाल उपवास करना चाहिए और दूसरे दिन अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर नवरात्र, घट-स्थापन एवं दुर्गा-पूजन का संकल्प करना चाहिए. तदुपरान्त घट स्थापन एवं दुर्गापूजन का कार्य आरंभ करना चाहिए.

नवदुर्गा के नौ नैवेद्य

प्रथम नवरात्रि के दिन मां के चरणों में गाय का शुद्ध घी अर्पित करने से आरोग्य का आशीर्वाद मिलता है तथा शरीर निरोगी रहता है.

दूसरे नवरात्रि के दिन मां को शक्कर का भोग लगाएं व घर में सभी सदस्यों को दें. इससे आयु वृद्धि होती है.



तृतीय नवरात्रि के दिन दूध या दूध से बनी मिठाई खीर का भोग मां को लगाकर ब्राह्मण को दान करें. इससे दुखों की मुक्ति होकर परम आनंद की प्राप्ति होती है.

मां दुर्गा को चौथी नवरात्रि के दिन मालपुए का भोग लगाएं और मंदिर में ब्राह्मण को दान दें. जिससे बुद्धि का विकास होने के साथ-साथ निर्णय शक्ति बढ़ती है.

नवरात्रि के पांचवें दिन मां को केले का नैवैद्य चढ़ाने से शरीर स्वस्थ रहता है.

छठवीं नवरात्रि के दिन मां को शहद का भोग लगाएं. जिससे आपके आकर्षण शक्ति में वृद्धि होगी.

सातवें नवरात्रि पर मां को गुड़ का नैवेद्य चढ़ाने व उसे ब्राह्मण को दान करने से शोक से मुक्ति मिलती है एवं आकस्मिक आने वाले संकटों से रक्षा भी होती है.

नवरात्रि के आठवें दिन माता रानी को नारियल का भोग लगाएं व नारियल का दान कर दें. इससे संतान संबंधी परेशानियों से छुटकारा मिलता है.

नवरात्रि की नवमी के दिन तिल का भोग लगाकर ब्राह्मण को दान दें. इससे मृत्युभय से राहत मिलेगी. साथ ही अनहोनी होने की घटनाओं से बचाव भी होगा. ●

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् 2073

सन् 2016-17 में कुल 5 ग्रहण लग रहे हैं. जिसमें 2 सूर्य ग्रहण तथा 3 चन्द्र ग्रहण होंगे. परंतु भारतवर्ष में दो चन्द्र ग्रहण एवं एक सूर्यग्रहण दिखाई देगा. जो इस प्रकार हैं:

23 मार्च, 2016	प्रथम उपच्छाया चंद्रग्रहण	भारत में दृश्य
01 सितम्बर, 2016	कंकण सूर्यग्रहण	भारत में अदृश्य
16/17 सितम्बर, 2016	द्वितीय उपच्छाया चंद्रग्रहण	भारत में दृश्य
10/11 फरवरी, 2017	तृतीय उपच्छाया चंद्रग्रहण	भारत में दृश्य
26 फरवरी, 2017	कंकण सूर्यग्रहण	भारत में अदृश्य





1. प्रथम उपच्छाया चन्द्रग्रहण बुधवार, 23 मार्च, 2016 ई., फाल्गुन पूर्णिमा :

यह उपच्छाया चंद्रग्रहण आंशिक रूप से समाप्ति के समय भारत में देखा जा सकेगा. इसके स्पर्शादिकाल भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार इस प्रकार हैं-

	घंटा	मिनिट
(Enter Penumbra) स्पर्श	15 -	09
(परमग्रास) मध्य	17 -	07
(Leaves Penumbra) मोक्ष	19 -	24

इस बात का ध्यान रहे कि उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चंद्रग्रहण नहीं होता. इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चाँदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता है. इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक, स्नानदानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा. भारत में मोक्ष के समय इसे दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा.

2. कंकण सूर्यग्रहण गुरुवार, 01 सितम्बर, 2016 ई., भाद्रपद अमावस्याः

यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा. यह ग्रहण केवल दक्षिणी एशिया के देशों (मारिशस आदि), पूर्वी आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के देशों (नैरोबी, कीनिया, तन्ज़ानिया, कोंगो आदि), एंटलांटिक-हिन्द महासागर तथा अण्टार्क्टिका में दिखाई देगा. भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारंभ और समाप्ति काल इस प्रकार होगा-

	घंटा	मिनट
ग्रहण प्रारंभ	11 -	41
कंकण प्रारंभ	12 -	46
परमग्रास	14 -	30
कंकण समाप्त	16 -	24
ग्रहण समाप्त	17 -	29

इस कंकण सूर्यग्रहण संबंधी स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य का विचार भारतवर्ष में नहीं होगा क्योंकि भारत में नहीं होगा क्योंकि भारत में यह ग्रहण बिल्कुल दृष्टिगोचर नहीं होगा. हाँ, भाद्रपद

अमावस्या संबंधी दान, स्नान, पितीतर्पण आदि कार्य तो करने ही चाहिए.

3. द्वितीय उपच्छाया चन्द्रग्रहण शुक्रवार, 16 सितम्बर, 2016 ई., भाद्रपद पूर्णिमा :

इस उपच्छाया ग्रहण का प्रारंभ एवं समाप्ति भारत में दृश्य होगी. इसके स्पर्शादि काल का (भा.स्टैं.टा.) में विवरण इस प्रकार है-

	घंटा		मिनट
स्पर्श (Penumbra Ecl. Begin)	22	-	24
मध्य	00	-	24
मोक्ष (Penumbra Ecl. Ends)	19	-	24

इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के सूतकादि, धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा.

4. तृतीय उपच्छाया चन्द्रग्रहण शुक्रवार, 10 फरवरी, 2017 ई., भाद्रपद पूर्णिमा :

इस उपच्छाया ग्रहण का केवल प्रारंभ एवं मध्य ही विशेष लैंस या दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा. स्पर्शादिकाल इस प्रकार होंगे-

	घंटा		मिनट
स्पर्श	04	-	04
मध्य	06	-	13
मोक्ष	08	-	23

इस उपच्छाया ग्रहण के स्नान, सूतकादि का विचार नहीं होगा.

5. कंकण सूर्यग्रहण 26 फरवरी, 2017 ई., फाल्गुन अमावस्या, रविवारः

यह ग्रहण भी भारत में दृष्टिगोचर नहीं होगा. इस कंकण सूर्यग्रहण संबंधी धार्मिक कार्य भारतवर्ष में नहीं करणीय होंगे. अमावस्या को दान, पितृ-तर्पण तो करना ही चाहिए. यह ग्रहण दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका (अंगोला आदि), दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी-पश्चिमी देशों (ब्राजिल आदि) में, प्रशान्त-एटलांटिक एरां हिन्द महासागर तथा अण्टार्क्टिका में दिखाई देगा. भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण के प्रारंभसमाप्ति काल इस प्रकार होगा-

	घंटा		मिनट
ग्रहण प्रारंभ	17	-	41
कंकण प्रारंभ	18	-	46
परमग्रास	20	-	23
कंकण समाप्त	22	-	01
ग्रहण समाप्त	23	-	06

ध्यान रहेः भारतीय ज्योतिष के प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों में भी इस उपच्छाया या धुंधलेपन का धार्मिक महत्त्व नहीं बतलाया गया. उपच्छाया ग्रहण में न तो अन्य पूर्ण अथवा खण्डग्रास ग्रहणों की भाँति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ती है, न ही सौरपिण्डों (सूर्य-चन्द्र) की भाँति उनका वर्ण काला होता है. केवल चन्द्रमा की आकृति में उसका प्रकाश कुछ धुंधला सा हो जाता है. ●

सिंधारा

05 अगस्त 2016, शुक्रवार

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरियाली तीज या कजली तीज के नाम से जाना जाता है. यदि इस तिथि को श्रवण नक्षत्र हो तो इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है.

विधिः भगवान विष्णु का पूजन करके व्रत करना श्रेयस्कर है. भगवान विष्णु की षोडशोपचार पूजा करें, उनकी दिव्य कथाओं एवं चरित्रों का श्रवण करते हुए विष्णु सहस्त्रनाम तथा ॐ नमो नारायणाय, ॐ विष्णुवे नमः आदि मंत्रों का जप करें. व्रत में व्रतदेवता के मंत्र का उच्चारण करते हुए विशिष्ट हविद्रव्य से हवन करना चाहिए. विद्वान सदाचारी ब्राह्मण को ब्राह्मणी सहित भोजन कराकर दक्षिणा, द्रव्य एवं वस्त्रभूषणादि के साथ विदा करें. इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सहज प्राप्ति होती है. इस पावन दिन में गोदान, अन्नदान, वस्त्रदान, धनदान, विद्यादान इत्यादि करने से कल्याण होता है. सुख-संपत्ति, आयुष्य एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है.



इस तिथि को स्त्रियां भवानी पार्वती का भी पूजन करती हैं. इस व्रत में तीन बातें त्याज्य हैं - पति से छल कपट, दुर्व्यवहार तथा परनिंदा.

इस पावन व्रत को करने के लिए प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व ही दैनिक क्रियाओं से निवृत्त हो संकल्प लेकर ही भगवत् आराधना करें, क्योंकि संकल्प ही सिद्धियों का मूल है.

प्रातः काल उद्यानों से विभिन्न वृक्षों जैसे आम, पीपल, अशोक, कदंब आदि के पत्तों सहित टहनियां तथा पुष्प गुच्छ लाकर पूजा स्थान के पास स्थापित झूले को सजाते हैं.

इस पवित्र दिन सुंदर से सुंदर विभिन्न प्रकार के पकवान बनाकर बेटियों को भेजे जाते हैं.

राजस्थान में तीज पर्व ऋतु उत्सव के रूप में सानंद मनाया जाता है. इस दिन आसमान में घुमड़ती काली घटाओं के कारण इस पर्व को **कजली तीज** अथवा धरती पर हरियाली होने के कारण **हरियाली तीज** के नाम से भी पुकारते हैं.

श्रावण शुक्ल तृतीया को बालिकाएं एवं नवविवाहिताएं इस पर्व को मनाने के लिए एक दिन पूर्व अपने हाथों तथा पांवों में कलात्मक ढंग से मेहंदी लगाती हैं जिसे मेहंदी-मांडणा कहते हैं. दूसरे दिन वे प्रसन्नता से अपने पिता के घर जाती हैं, जहां उन्हें नई पोशाकें, गहने आदि दिए जाते हैं तथा भोजन-पकवान आदि से तृप्त किया जाता है. ●

नाग पंचमी

07 अगस्त 2016, रविवार

श्रावण शुक्ल पंचमी को 'नागपंचमी' के रूप में मनाया जाता है. इस दिन नागों की पूजा की जाती है. कहीं-कहीं यह पर्व श्रावण कृष्ण पंचमी को भी मनाया जाता है.

विधिः नागपंमी के दिन सर्पों को दूध पिलाने तथा अपने घर के द्वार को दोनों ओर गोबर को सर्पाकृति बना कर दही, दूध, गन्ध, अक्षत, पुष्प, मिष्ठान आदि से पूजन करने पर वर्षभर घर सर्पभय से मुक्त रहता है.



कथाः प्राचीन काल में किसी ब्राह्मण की सात बहुएँ थीं. श्रावण मास लगते ही छः बहुएँ तो अपने भाइयों के साथ मायके चली गईं, लेकिन अभागी सातवीं बहू का तो कोई भाई था ही नहीं. उसे लेने कौन आता? बेचारी अत्यन्त दुखी हुई. उसने पृथ्वी को धारण करने वाले शेष-नाग को ही भाई के रूप में याद किया. उसकी वेदना को सुनकर शेष जी के मन में करुणा जागी और वे वृद्ध ब्राह्मण के रूप में उसके ससुराल जा पहँचे. उन्होंने अपना परिचय बहू के भाई के रूप में दिया और उसे लेकर चल दिए. थोड़ा रास्ता तय होने के बाद उन्होंने अपना वास्तविक स्वरूप धारण कर लिया और उस युवती को अपने फनपर बैठाकर नागलोक ले गए.

वह युवती नागलोक में निश्चित होकर रहने लगी. उन्हीं दिनों शेषजी के कुल में नागों के बहुत-से बच्चों ने जन्म लिया. वे बच्चे वहाँ यत्र-तत्र-सर्वत्र विचरण करते रहते. युवती को सदा यह भय बना रहता कि कहीं कोई बच्चा उसके पैरों के नीचे न आजाए. तब एक दिन नागरानी ने उसे पीतल का एक दीपक देकर कहा कि इसके प्रकाश से तुम अँधेरे में भी देख सकोगी. एक दिन युवती के हाथ से अचानक वह दीपक नीचे टहलते नाग शिशुओं पर गिर गया, जिससे उनकी पूँछें थोड़ी कट गईं.

भाई के घर बहन आख़िर कब तक रहती? इस घटना के कुछ ही समय बाद उसे वापस उसके ससुराल पहुँचा दिया गया. जब अगला श्रावण आया, तो वह युवती दीवार पर नागदेवता की प्रतिमा उकेर कर उनकी विधिवत पूजा तथा मंगल कामना करने लगी. उधर जब नाग बालकों को उनकी माताओं से अपनी पूँछें कटने का कारण ज्ञात हुआ, तो वे क्रोध से भरकर उस बहू से बदला लेने निकल पड़े. बहू के घर पहुँच कर उसे अपनी ही पूजा में संलग्न देखकर उनका क्रोध समाप्त हो गया और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक युवती के हाथ से प्रसादस्वरूप दूध तथा चावल का भोग ग्रहण किया. विदा होते समय नाग बालकों ने उसे सर्पकुल से निर्भय होने का वरदान तथा उपहार में मणिमाला प्रदान की. साथ ही यह वचन भी दिया कि श्रावण मास की शुक्ल पंचमी को जो भी भाई के रूप में हमारी पूजा करेगा, उसकी हम सदैव रक्षा करेंगे.

तभी से नागपंचमी श्रद्धा पूर्वक मनाई जाती है. ●

रक्षाबंधन

18 अगस्त 2016, गुरुवार

रक्षाबंधन का त्यौहार श्रावन की पूर्णिमा को मनाया जाता है जो भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधे रखता है.



विधि: रक्षाबन्धन का अर्थ है अपनी रक्षा के लिए किसी को बाँध लेना. इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगा कर उसकी कलाई पर राखी बाँधती है, जिसका अभिप्राय है- हे भाई! मेरी सब प्रकार से रक्षा करना.

कथा: एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण से कहा- "हे अच्युत! मुझे रक्षाबन्धन की वह कथा सुनाइए, जिससे मनुष्यों की प्रेतबाधा तथा अन्य दुःख दूर होते हैं."

तब भगवान ने कहा- "हे पाण्डव श्रेष्ठ! एक बार बारह वर्षों तक चले देवासुर संग्राम में देवराज इन्द्र की पराजय हुई. देवता श्रीहीन हो गए. इन्द्र विजय की आशा छोड़ कर देवताओं सहित अमरावती चले गए. विजेता दैत्यराज ने तीनों लोकों पर आधिपत्य कर लिया. उसने घोषित किया कि इन्द्र राज्यसभा में न आएँ तथा देवता एवं मनुष्य यज्ञकर्म न करें. सब लोग मेरी पूजा करें और जिसे इसमें आपत्ति हो, वह राज्य छोड़ कर चला जाए."

दैत्यराज की इस आज्ञा से यज्ञ, वेदों का पठन-पाठन तथा धार्मिक उत्सव समाप्त हो गए. धर्म का नाश होने से देवों का बल और घटने लगा. दानवों से भयभीत इन्द्र ने देवगुरु बृहस्पति से निवेदन किया कि "गुरुदेव, मैं दानवों से निर्णायक संग्राम करना चाहता हूँ, भले ही उसमें प्राणान्त हो जाए. होनहार बलवान होती है. जो होना होगा, वो तो होकर रहेगा."

देवगुरु ने इन्द्र को समझाया कि अभी समय अनुकूल नहीं है, अतः क्रोध एवं दुस्साहस करना व्यर्थ होगा. लेकिन इन्द्र की हठ एवं उत्साह को देखकर अन्ततः उन्होंने रक्षाविधान करने का परामर्श दिया. तदनुसार श्रावण पूर्णिमा को प्रातः काल रक्षाविधान सम्पन्न किया गया. इन्द्र की सहश्रर्मीणी इन्द्राणी ने ब्राह्मण पुरोहित द्वारा स्वस्ति वाचन कराकर **"ये न बद्धो बलिर्राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिवहनामि रक्षे मा चल मा चल॥"** के मंत्रोच्चार के साथ इन्द्र के दाएँ हाथ में पोटली बाँध दी. उसी के बल पर इन्द्र ने दानवों को परास्त कर विजयी श्री प्राप्त की और देवगण पुनः शक्तिसम्पन्न हो सके.

वर्तमान समय में रक्षाबन्धन का पर्व भले ही भाई-बहनों के बीच उपहारों के आदान प्रदान तक सीमित हो कर रह गया हो, किन्तु उसका वास्तविक अभिप्राय देवन्त के गुणों की रक्षा तथा आसुरी वृत्तियों के विनाश हेतु शक्ति अर्जित करना ही है. ●

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

24 अगस्त 2016, बुधवार



श्री जन्माष्टमी मासि भाद्रपदे अष्टम्यां निशीथे कृष्ण पक्ष के शशांके वृषराशिस्थे ऋक्षे रोहिणी संज्ञके। अर्थात् मास की भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को अर्द्धरात्रि के समय रोहिणी नक्षत्र में भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था. उस समय चन्द्रमा वृष राशि में था.

जिस दिन अर्द्धरात्रि के समय चंद्रोदय एवं अष्टमी तथा रोहिणी नक्षत्र का संयोग हो उस दिन भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना और व्रत करने से भगवान की विशेष कृपा प्राप्त होती है तथा इस जन्म में और दूसरे जन्म में भी सुख-शांति प्राप्त होती है. भगवान कृष्ण अपने भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न होते हैं.

विशेष: जो लोग गुरू प्रदत्त विशेष वैष्णव दीक्षा से दीक्षित होते हैं वे वैष्णव कहलाते हैं. वे सूर्योदय व्यापिनी अष्टमी तिथि के दिन परम उत्साह के साथ व्रत करते हैं. ●

श्री गणेश चतुर्थी

05 सितम्बर 2016, सोमवार

भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी 'गणेश चतुर्थी' कहलाती है.

विधि: समस्त मांगलिक कार्यों में प्रथमपूज्य श्रीगणेशजी को देवसमाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. उन्हें विद्या-बुद्धि का देवता तथा विघ्नविनाशक कहा जाता है. गणेशजी का वाहन चूहा है. श्री गणेश जी का जन्म भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मध्याहन काल में हुआ था. उनका सर्वप्रिय भोग बूँदी, मोतीचूर के लड्डू अथवा मोदक है.



कथा: एक बार महादेव शिवजी स्नान करने के लिए भोगावती गए. उनके जाने के पश्चात पार्वतीजी ने अपने तन के मैल से एक पुतला बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा की और उसे 'गणेश' नाम दिया. फिर पार्वती ने उस बालक से कहा कि हे पुत्र! मैं स्नान करने जा रही हूँ. तुम एक मुग्दर लेकर द्वार पर बैठ जाओ. जबतक मैं स्नान न कर लूँ, किसी भी पुरुष को भीतर मत आने देना.

माता की आज्ञा मान कर गणेशजी द्वार पर बैठ गए. जब शिवजी स्नान करके लौटे, तो गणेश जी ने उन्हें द्वार पर ही रोक लिया. शिवजी इसे अपना अपमान समझ कर अत्यन्त क्रोधित हुए. उन्होंने उस बालक का मस्तक धड़ से अलग कर दिया और भीतर चले गए. पार्वती जी ने जब शिव जी को क्रोध में देखा, तो उन्हें लगा कि भोजन में विलम्ब होने के कारण वे कुपित हैं. उन्होंने तत्काल दो थालियों में भोजन परोसा और शिव जी को आमन्त्रित किया.

दो थाल देख आश्चर्यचकित शिवजी ने पूछा- ''यह दूसरा थाल किसके लिए?''

पार्वती जी ने उत्तर दिया- ''पुत्र गणेश के लिए, जो बाहर द्वार पर पहरा दे रहा है.''

यह सुनकर शिवजी आश्चर्यचकित हुए. उन्होंने पूछा- ''तुम्हारा पुत्र पहरा दे रहा है?''

''हाँ नाथ! क्या आपने उसे देखा नहीं?''

शिवजी बोले- ''देखा तो था, किन्तु मुझे रोके जाने पर उसे कोई उद्दण्ड बालक समझ कर मैंने उसका मस्तक काट दिया.''

यह सुनते ही पार्वती जी विलाप करने लगीं. तब पार्वती जी को प्रसन्न करने के लिए शिवजी ने एक हाथी के बच्चे का सिर काटकर उस बालक के धड़ से जोड़ दिया. अपने पुत्र को इस नए रूप में पाकर पार्वतीजी अत्यन्त प्रसन्न हुईं. उन्होंने पति तथा पुत्र को प्रेमपूर्वक भोजन कराकर तत्पश्चात स्वयं भोजन ग्रहण किया. ●

करवा चौथ

19 अक्टूबर 2016, बुधवार

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाई जाने वाली 'करवा चौथ' स्त्रियों का सर्वाधिक प्रिय व्रत है. सौभाग्यशाली स्त्रियाँ अपने पति के स्वास्थ्य के एवं दीर्घायु की मंगलकामना से यह व्रत करती हैं.

एक बार पाण्डुपुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगीरि पर्वत पर चले गए. इधर पाण्डवों के जीवन में अनेक विपत्तियाँ पहले से ही व्याप्त थीं. इससे चिन्तित हो कर द्रोपदी ने श्री कृष्ण का ध्यान किया. भगवान के दर्शन होने पर जब द्रौपदी ने उनसे अपने कष्टों के निवरण का उपाय पूछा, तो श्री कृष्ण ने कहा- "हे द्रौपदी! ऐसा ही प्रश्न एक बार माता पार्वती ने शंकर जी से पूछा था. तब शंकर जी ने उन्हें करवा चौथ का व्रत बतलाया.



कथाः प्राचीन काल में एक गुणी, बुद्धिशाली व धर्मपरायण ब्राह्मण रहता था. उसके चार पुत्र तथा एक पुत्री थी. गुणवती, सुशीला पुत्री ने विवाहित होने पर करवा चौथ का व्रत किया, किन्तु चन्द्रोदय से पूर्व ही भूख-प्यास ने उसे व्याकूल कर दिया. उसके दयालू भाईयों से बहन की दशा देखी नहीं गई, तो उन्होंने छलपूर्वक पीपल की आड़ से उसे कृत्रिम चन्द्र के दर्शन करा दिए. युवती ने चन्द्र को अर्ध्य देकर भोजन कर लिया किन्तु भोजन करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई. इससे दुखी हो कर उसने अन्न-जल का त्याग कर दिया.

उसी रात्रि में इन्द्राणी भूलोक में विचरण करने आईं. ब्राह्मण युवती ने उनसे अपने दुर्भाग्य का कारण पूछा, तो इन्द्राणी ने बताया कि करवा चौथ के व्रत में चन्द्र दर्शन के पूर्व भोजन कर लेने के कारण तुम्हें यह कष्ट मिला है. तब उस युक्ति ने इन्द्राणी से करबद्ध निवेदन मिला कि इस कष्ट से मुक्ति का कोई उपाय बताएँ. इन्द्राणी ने कहा कि यदि तुम पुनः विधिवत करवा चौथ का व्रत करो, तो निश्चित ही तुम्हारे पति पुनर्जीवित हो जाएँगे.

इन्द्राणी के निर्देशानुसार उस युवती ने वर्ष भर प्रत्येक चतुर्थी का व्रत कर पुनः पतिसुख प्राप्त किया. हे द्रौपदी! यदि तुम भी इस व्रत को करोगी, तो तुम्हारे समस्त संकट दूर हो जाएँगे.

द्रौपदी ने विधिपूर्वक करवा चौथ का व्रत किया, जिसके फलस्वरूप पाण्डव विजयी हुए. अतः सौभाग्य, पुत्र-पौत्रादि और धन-धान्य की इच्छुक महिलाओं को विधिपूर्वक यह व्रत करना चाहिए. ●

॥ दीपावली होती है पाँच दिनों की ॥

प्रथम दिवस 28 अक्टूबर 2016, शुक्रवार

पंचपर्व के प्रथम दिन अर्थात् कार्तिक कृष्ण त्र्योदशी को धनत्र्योदशी अथवा **धन तेरस** भी कहा जाता है. यह पर्व वैद्यों के लिए बड़ा महत्व का है, क्योंकि धन्वन्तरी देव आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं.

धन तेरस के रूप में इस दिन धनाध्यक्ष कुबेर की पूजा होती है. इस दिन शुभ धातु के बर्तन खरीदना समृद्धिदायक माना जाता है. यह पर्व घर में सुख-समृद्धि के लिए मनाया जाता है. इसलिए इस दिन किसी भी व्यक्ति को धन उधार नहीं देना चाहिए और धन का अपव्यय भी नहीं करना चाहिए.

सायंकाल मुख्यद्वार के दोनों ओर दीपदान करना चाहिए. यह दीपदान इस पर्व के पाँचों दिन किया जाता है. इसमें दीपदान करने से यमराज प्रसन्न रहते हैं जिससे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है.

द्वितीय दिवस 29 अक्टूबर 2016, शनिवार

इस पर्व के द्वितीय दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को नरकचतुर्दशी भी कहा जाता है. इस तिथि को **रूपचतुर्दशी** भी कहते हैं. इस दिन सूर्योदय से पहले उबटन लगाकर स्नान किया जाता है. स्नान से पहले तिल के तेल से शरीर की मालिश करनी चाहिए, क्योंकि इस दिन तेल में लक्ष्मी का और जल में गंगा का निवास माना जाता है. स्नान के पश्चात् यमतर्पण किया जाता है. (इस दिन को छोटी दीपावली के रूप में भी मनाते हैं. दीपावली के समान ही इस दिन दीपदान किया जाता है.)

तृतीय दिवस 30 अक्टूबर 2016, रविवार

इस पर्व का तीसरा दिन अर्थात् कार्तिक अमावस्या **दीपावली पर्व** के रूप में मनाई जाती है. कमला जयंती होने के कारण इस दिन माँ लक्ष्मी की पूजा-उपासना की जाती है. इस त्यौहार को मनाए जाने के कई कारण हैं. भगवान् श्रीराम इसी दिन 14 वर्ष का वनवास पूरा करके अपने राज्य में लौटे थे. लक्ष्मी पूजन के अतिरिक्त इस दिन व्यापारी द्वारा अपने व्यापारिक स्थल की पूजा, तुला पूजन, बहीखाते का पूजन, लेखनी का पूजन, दवात का पूजन और कुबेर का पूजन किया जाता है. लक्ष्मी पूजन के अतिरिक्त इस दिन भगवान् गणेश, महाकाली, माँ सरस्वती का पूजन भी करते हैं. ये सभी पूजन प्रदोषकाल एवं स्थिर लग्न में श्रेष्ठ होते हैं. इस दिन घर में दीपमालिकाएं लगाई जाती हैं. घरों को प्रकाशित करने के लिए विभिन्न सजावटी वस्तुओं से सजाया जाता है.

चतुर्थ दिवस 31 अक्टूबर 2016, सोमवार

इस पंचपर्व का चौथा दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा और **अन्नकूट** के रूप में मनाया जाता है. कृष्ण भगवान् के अवतार से पहले इस दिन इन्द्र की पूजा की जाती थी परंतु भगवान् श्रीकृष्ण ने गोवर्धन की पूजा आरंभ करवाई. इस दिन मंदिरों में अन्नकूट का आयोजन होता है और प्रसादी का वितरण होता है. गोवर्धन को **गौ दिवस** के रूप में भी मनाया जाता है. इस दिन गायों की सेवा करने का विशेष महत्त्व है.

पंचम दिवस 01 नवम्बर 2016, मंगलवार

इस महापर्व का पाँचवां दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल द्वितीया **भाईदूज** और यमद्वितीया के रूप में मनाई जाती है. इस दिन भाई अपनी बहन के घर जाकर भोजन करते हैं तथा भाई अपनी बहन को श्रद्धानुसार भेंट प्रदान करते हैं. यमी ने अपने भाई यम से वर मांगा कि जो बहन इस दिन अपने भाई को भोजन करवाए तथा टीका करे, उनकी रक्षा होनी चाहिए. इसलिए इस त्यौहार को 'यमद्वितीया' कहा जाता है. इस दिन चित्रगुप्त जी एवं विश्वकर्मा जी की पूजा एवं उपासना भी की जाती है. ●

दीपावली: पूजन सामग्री की सूची

दीपावली का प्रमुख पर्व लक्ष्मी पूजन होता है. इस दिन रात्रि को जागरण करके धन की देवी लक्ष्मी माता का पूजन विधिपूर्वक करना चाहिए एवं घर के प्रत्येक स्थान को स्वच्छ करके वहां दीपक लगाना चाहिए, जिससे घर में लक्ष्मी का वास एवं दरिद्रता का नाश होता है। दीपावली पर पूजन सामग्री का विशेष महत्व है. आपके लिए प्रस्तुत है दीपावली के पूजन सामग्री की सूची–

लक्ष्मीजी का चित्र अथवा मूर्ति, गणेशजी की मूर्ति, सरस्वती का चित्र, धूप बत्ती अगरबत्ती, चंदन, कपूर, केसर, यज्ञोपवीत 5, कंकू रोली, चावल, अबीर, गुलाल, अभ्रक, हल्दी, सौभाग्य द्रव्य, मेहँदी, चूड़ी, काजल, पायजेब, बिछुआ आदि आभूषण.

नाड़ा, रुई, रोली, सिंदूर, सुपारी, पान के पत्ते, पुष्पमाला, कमलगट्टे, खड़ा धनिया, सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, कुशा व दूर्वा, पंचमेवा, गंगाजल, शहद (मधु), शक्कर, शुद्ध घी, दही, दूध, ऋतुफल (गन्ना, सीताफल, सिंघाड़े इत्यादि), नैवेद्य या मिष्ठान्न (पेड़ा, मालपुए इत्यादि), छोटी इलायची, लौंग, मौली, इत्र की शीशी, तुलसी दल, चौकी या आसन, पंच पल्लव (बड़, गूलर, पीपल, आम और पाकर के पत्ते), औषधि (जटामॉसी, शिलाजीत आदि), चांदी का सिक्का, लक्ष्मीजी एवं गणेशजी को अर्पित करने हेतु वस्त्र, अम्बिका को अर्पित करने हेतु वस्त्र, जल कलश (ताँबे या मिट्टी का), सफेद कपड़ा (आधा मीटर), लाल कपड़ा (आधा मीटर), पंच रत्न (सामर्थ्य अनुसार), दीपक, बड़े दीपक के लिए तेल, ताम्बूल (लौंग लगा पान का बीड़ा), श्रीफल (नारियल), धान्य (चावल, गेहूं), लेखनी (कलम), बही खाता, स्याही की दवात, तुला (तराजू), पुष्प (गुलाब एवं लाल कमल), एक नई थैली में हल्दी की गाँठ, खड़ा धनिया व दूर्वा आदि, खील-बताशे, अर्घ्य पात्र सहित अन्य. •

धनतेरस

कार्तिक कृष्ण त्र्योदशी को वैदिक देवता यमराज का पूजन किया जाता है.

विधि: इस दिन यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखा जाता है. रात को घर की स्त्रियां दीपक में तेल डालकर चार बत्तियां जलाती हैं. जल, रोली, चावल, गुड़, फूल, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर यम का पूजन करती हैं. इस दिन धनवंतरी जी के पूजन का भी विशेष महत्व है.

इस दिन पुराने बर्तनों को बदलना व नए बर्तन खरीदना शुभ माना गया है. चांदी के बर्तन खरीदने से तो अत्यधिक पुण्य लाभ होता है.

इस दिन हल जुती मिट्टी को दूध में भिगोकर उसमें सेमर की शाखा डालकर तीन बार अपने शरीर पर फेरना तथा कुमकुम लगाना चाहिए. कार्तिक स्नान करके प्रदोष काल में घाट, गौशाला, बावली, कुआं, मंदिर आदि स्थानों पर तीन दिन तक दीपक जलाना चाहिए तथा तुला राशि के सूर्य में चतुर्दशी व अमावस्या की संध्या को जलती लकड़ी की मशाल से पितरों का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए. •

दीपावली सरल पूजन विधि

दीपावली का त्यौहार हर व्यक्ति के लिए खुशहाली का पर्व है. इस दिन धनदात्री महालक्ष्मी देवी का श्रद्धा भाव से यथा शक्ति पूजन करने से घर में धन की बरकत बनी रहती है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख एवं आनंद की अनुभूति होती है. दीपावली के दिन सर्व प्रथम घर की अच्छी प्रकार से सफाई करें, स्वच्छ वस्त्र धारण करें. सायंकाल में लक्ष्मी पूजन के मुहूर्त में संपूर्ण पूजा सामग्री एकत्रित करके लक्ष्मी, गणेशजी की मूर्तियों को सम्मुख रखकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके साफ कपड़े से पोंछकर पूजा घर में शुद्ध आसन पर स्थापित करें. कम से कम पाँच अथवा ग्यारह, दीपक जलाकर घर में रखें. गणेशजी के पूजन के बाद मां लक्ष्मी को सर्व प्रथम मौली (कलावा) तथा वस्त्र-आभूषण अर्पण करें. रोली, सिंदूर आदि लगाएं, चावल चढ़ाएं, पुष्प माला अर्पण करें. धूप-दीप से पूजा करें, नैवेद्य मिठाई, खीर, बताशे, फल आदि का भोग लगाएं तथा दक्षिणा अर्पण करें. अन्त में कपूर से आरती करें तथा पूजा आदि में कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए क्षमा प्रार्थना करें.

व्यापारिक प्रतिष्ठानों में पूजा

विनायक पूजन या देहरी या दहलीज की पूजा

व्यापारी गण, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, फैक्ट्री, दूकान, कार्यालय आदि की देहरी और दीवारों पर स्वस्तिक चिन्ह शुभ लाभ आदि मांगलिक शब्दों को सिंदूर से लिखकर पूजन मंत्र

ॐ देहली विनायकाय नमः

बोलकर गंध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें.

श्री महाकाली पूजन यानी दवात पूजन

स्याही से भरी दवात को महालक्ष्मी के सामने पुष्पों और अक्षतों के आसन पर रखकर उस पर रोली से स्वस्तिक बनाकर, मौली बांधकर

ॐ श्री महाकाल्यै नमः

मंत्र से गंध, अक्षत, पुष्प, धूप,नैवेद्य से भगवती महाकाली का पूजन करें.

सरस्वती पूजन यानी लेखनी और बहीखाता पूजन

कलम पर मौली बांधकर सामने रखें, तथा

ॐ लेखनी स्थाये देव्यै नमः

मंत्र से रोली, पुष्प, अक्षत से पूजन करें.

एक स्वच्छ वस्त्र की थैली पर रोली से स्वस्तिक का चिन्ह बनायें तथा थैली में पाँच हल्दी की गांठें साबुत धनिया, कमलगट्टा, अक्षत, दूर्वा, और द्रव्य (सिक्का) रखकर उस थैली में महासरस्वती नाम मंत्र '**श्री सरस्वत्यै नमः**' से महासरस्वती का गंध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें.

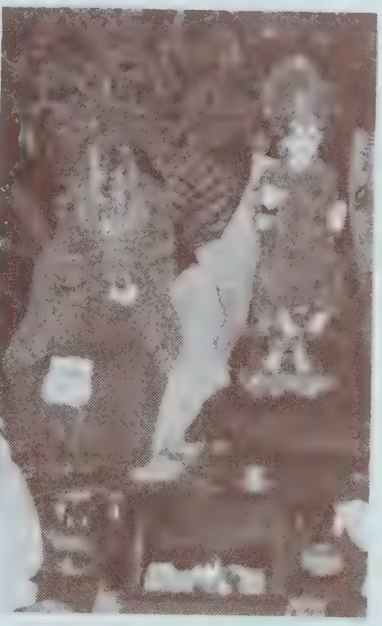
कुबेर-पूजन

तिजोरी, गल्ला या घर में धन रखने वाले स्थान में कुबेर देवता का आह्वान करें. तथा '**ॐ कुबेराय नमः**' मंत्र से गंध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें तथा उसके बाद पूर्व पूजित थैली (हल्दी की गांठें, धनिया, कमलगट्टा, अक्षत, दूर्वा, द्रव्य) को तिजोरी आदि में रख दें. तराजू पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर गंध, अक्षत से पूजन करें, नमस्कार करें तथा अंत में एक पात्र में विषम संख्या 1,3,5 आदि में दीपक जलाकर सभी जगह रख दें, तथा इसके बाद गणेशजी एवं लक्ष्मीजी का पूजन करें. सपरिवार भगवती लक्ष्मी की आरती करें तत्पश्चात प्रसाद आदि ग्रहण करके सौभाग्य को देदिप्यमान बनायें. ●

तुलसी विवाह

12 नवम्बर 2016, शनिवार

तुलसी पूजा एवं तुलसी विवाह का बड़ा महात्म्य है. **कार्तिक** स्नान करने वाली स्त्रियाँ कार्तिक मास के सुक्ल पक्ष की एकादशी को तुलसी तथा शालिग्राम जी का विवाह रचाती हैं.



विधि: तुलसी को कन्या मान कर व्रत करने वाले व्यक्ति यथाविधि भगवान विष्णु को कन्यादान करके तुलसी-विवाह सम्पन्न करते हैं. यह आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाता है.

कथा: प्राचीन काल में जलन्धर नामक एक राक्षस ने बड़ा उत्पात मचा रखा था, किन्तु देवता भी उसका कुछ बिगाड़ न पाते थे. जलन्धर की शक्ति का रहस्य था- उसकी पत्नी वृन्दा का पातिव्रत धर्म. अन्ततः जलन्धर से भयभीत ऋषि-मुनि व देवता भगवान विष्णु के पास गए और उनसे अपनी रक्षा की प्रार्थना की. काफ़ी सोच-विचार कर भगवान विष्णु ने वृन्दा का पातिव्रत भंग करने का निश्चय किया.

भगवान विष्णु ने योगमाया द्वारा एक मृत शरीर वृन्दा के आँगन में फिंकवा दिया. माया के प्रभाव से वृन्दा को वह शव अपने पति जलन्धर का प्रतीत हुआ और वह विलाप करने लगी, उसी समय एक साधु उसके पास जाकर बोले कि बेटी! विलाप मत करो. मैं इस मृत शरीर में पुनः प्राण डाल दूँगा.

साधु द्वारा मृत शरीर में प्राण फूँकते ही वह उठ बैठा. हर्षातिरेक में वृन्दा ने उसका आलिंगन कर लिया, जिससे उसका पातिव्रत भंग हो गया. वृन्दा का सतीत्व नष्ट होते ही उसका पति जलन्धर, जो देवताओं से युद्ध कर रहा था, मारा गया. जब वृन्दा को भगवान विष्णु के इस छल का ज्ञान हुआ, तो क्रोधित हो कर उसने उन्हें शाप दे दिया कि ''जिस प्रकार तुमने छल से मुझे पति वियोग दिया है, उसी प्रकार अपनी स्त्री का छलपूर्वक अपहरण होने पर पत्नी-वियोग सहने के लिए तुम मृत्युलोक में जन्म लोगे.'' यह शाप दे कर वृन्दा अपने पति के शव के साथ सती हो गई.

भगवान विष्णु अपने छल पर बड़े लज्जित हुए. तब देवताओं व ऋषियों ने कई प्रकार से उन्हें समझाया तथा पार्वती जी ने वृन्दा की चिता भस्म में आँवला, मलिती व तुलसी के पौधे लगाए. भगवान विष्णु ने तुलसी को वृन्दा का ही रूप समझा. वृन्दा के शाप के कारण ही कालान्तर में रामावतार के समय श्रीराम को सीता का वियोग सहना पड़ा.

कहीं-कहीं प्रकारान्तर से एक अन्य कथा भी प्रचलित है, जिसके अनुसार वृन्दा ने भगवान विष्णु को शाप दिया था कि ''तुमने छलपूर्वक मेरा धर्म भंग किया है, अतः तुम शिला (पत्थर) बनोगे.''

भगवान विष्णु ने वृन्दा का शाप शिरोधार्य करते हुए कहा- ''हे वृन्दा! तुम मुझे लक्ष्मी से भी अधिक प्रिय हो गई हो. तुम्हारे सतीत्व के फलस्वरूप तुम तुलसी बन कर मेरे साथ रहोगी और जो मनुष्य तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेगा, वह परमधाम को प्राप्त होगा.''

मान्यता है कि वृन्दा के शाप के कारण ही विष्णु भगवान ने पाषाण स्वरूप धारण किया और इसी कारण शालिग्राम या विष्णु-शिला की पूजा तुलसी दल के बिना अधूरी मानी जाती है. ●

गनगौर

09 अप्रैल 2016, शनिवार

चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन सुहागन स्त्रियाँ गणगौर व्रत रखती हैं. कहा जाता है कि इसी दिन भगवान शंकर ने अपनी अर्द्धांगिनी पार्वती को तथा पार्वती ने समस्त स्त्रियों को सौभाग्य का वरदान दिया था.

विधिः पूजन के समय की गौरी (गौर) बना कर उस पर चूड़ी, महावर, सिन्दूर चढ़ाने का विशेष फल है. चन्दन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करने, सुहाग सामग्री चढ़ाने तथा भोग लगाने का विधान है. यह व्रत रखने वाली स्त्रियों को गौर पर चढ़े सिन्दूर को अपनी माँग में लगाना चाहिए.



कथाः एक समय भगवान शंकर, पार्वती एवं नारद को साथ लेकर पृथ्वी पर भ्रमण करते हुए एक गाँव में पहुँचे. उस दिन चैत्र शुक्ल तृतीया थी. गाँव वालों को जब शंकर-पार्वती के गाँव में आगमन की सूचना मिली, तो धनीमानी स्त्रियाँ उनके पूजनार्थ नाना प्रकार के रुचिकर व्यजंन बनाने में लग गईं. इस प्रयास में उन कुलीन स्त्रियों को काफ़ी विलम्ब हो गया.

दूसरी ओर निर्धन घरों की स्त्रियाँ जैसे बैठी थीं, वैसे ही थाल में हलकी, कुमकुम, अक्षत तथा जल लेकर चल दीं और भक्तिपूर्वक शिव-पार्वती की पूजा की. अपार श्रद्धा में निमग्न उन निर्धन स्त्रियों की आस्था को पार्वती ने पहचाना तथा उनकी पूजन सामग्री को स्वीकार कर उन सबके ऊपर सुहागरूपी हलदी छिड़क दी. इस प्रकार मातेश्वरी गौरी से आशीर्वाद प्राप्त कर वे महिलाएँ विदा हो गईं.

तत्पश्चात कुलवन्त स्त्रियाँ सोलहों शृंगार किए, छप्पन प्रकार के व्यंजन सोने के थाल में सजा कर आईं. तब भगवान शंकर ने पार्वतीजी से पूछा- "तुमने तमाम सुहाग-प्रसाद तो साधरण स्त्रियों को बाँट दिया. अब इन सबको क्या दोगी?"

पार्वतीजी ने कहा– "आप इसकी चिन्ता न करें. उन्हें केवल ऊपरी पदार्थों से निर्मित रस दिया है, इसलिए उनका सुहाग साड़ी से रहेगा, परन्तु इन स्त्रियों को मैं अपनी उँगली चीरकर रक्त सुहाग रस दूँगी, जिससे ये मेरे समान ही सौभाग्यशालिनी बन जाएँगी."

भवानी के ये आशीर्वचन सुनकर उन्हें प्रणाम करके कुलीन स्त्रियाँ भी अपने-अपने घर लौट गईं. पार्वती द्वारा छिड़का हुआ रक्त जिसके ऊपर जैसा पड़ा था, उसने वैसा ही सौभाग्य प्राप्त किया.

उधर पार्वतीजी ने पति की आज्ञा से नदी में जाकर स्नान किया, बालू से शिवलिंग बनाकर पूजन किया, भोग लगाया तथा प्रदक्षिणा कर बालू के दो कणों का प्रसाद खा कर अपने मस्तक पर तिलक लगाया. उसी समय उस पार्थिव लिंग से शिवजी प्रकट हुए तथा पार्वती को वरदान दिया कि आज से जो भी स्त्री मेरा पूजन तथा तुम्हारा व्रत करेगी, उसके पति चिरंजीव रहेंगे तथा अन्त में उन्हें मोक्ष मिलेगा. यह वरदान देकर शिवजी अन्तर्धान हो गए.

चूँकि पार्वतीजी ने इस व्रत को छिपा कर किया था, उसी परम्परानुसार आज भी गणगौर-पूजन के अवसर पर पुरुष उपस्थित नहीं रहते हैं. ●

शीतलाष्टमी (बासौड़ा)

01 अप्रैल 2016, शुक्रवार

चैत्र कृष्ण अष्टमी या चैत्रमास के प्रथम पक्ष में होली के बाद पड़ने वाले पहले सोमवार अथवा गुरुवार को शीतलाष्टमी मनाई जाती है.

विधि: एक दिन पूर्व पुआ, पूरी, दाल-भात, मिठाई, लापसी, तरकारी आदि का भोग लगाएँ तथा शीतला स्तोत्र का पाठ करके रात को जगराता और दीपमालाएँ प्रज्वलित करें.

फल: इस व्रत को करने से व्रती के कुल में दाह ज्वर, पित्त ज्वर, विस्फोट, दुर्गन्धयुक्त फोड़े, समस्त प्रकार के नेत्रयोग, शीतला की फुन्सियों के चिन्ह और शीतलाजनित सर्वरोग दूर होते हैं. तथा शीतलामाता सदैव सन्तुष्ट रहती हैं.

कथा: एक बार एक राजा के इकलौते पुत्र को शीतला (चेचकी) निकली. उसी के राज्य में एक काछी के पुत्र को भी शीतला निकली हुई थी. काछी परिवार बहुत ग़रीब, मगर भगवती का उपासक था. वह दृष्टि से ज़रूरी समझे जाने वाले सभी नियमों को बीमारी के दौरान भी भली भाँति निभाता रहा. घर में साफ़-सफ़ाई का विशेष ध्यान रखा जाता था. नियम से भगवती की पूजा होती थी. नमक खाने पर पाबन्दी थी. न सब्जी में छौंक लगता था, न कोई वस्तु तली-भूनी जाती थी. गरम वस्तु न वह काछी स्वयं खाता, न शीतला पीड़ित बालक को देता. इस सबका परिणाम यह हुआ कि उसका पुत्र शीघ्र ही स्वास्थ्य हो गया.

उधर जब से राजा के पुत्र को शीतला का प्रकोप हुआ था, उसने भगवती के मण्डप में शतचण्डीका पाठ शुरू करवा रखा था. रोज़ हवन व बलिदान होते थे. राजपुरोहित सदा भगवती के पूजन में निमग्न रहते. पाकशाला में प्रतिदिन कढ़ाही चढ़ती. विविध प्रकार के गर्म स्वादिष्ट व्यजंन बनते. सब्जी के साथ कई प्रकार के मांसाहार भी बनाए जाते. उन स्वादिष्ट व्यजनों की सुगन्ध से राजकुमार का मन मचल उठता. वह उन्हें खाने के लिए ज़िद करता. एक तो राजपुत्र, ऊपर से इकलौता, उसकी अनुचित हठ भी पूरी कर दी जाती.

परिणाम स्वरूप शीतला का प्रकोप घटने की बजाय बढ़ने लगा. राजकुमार को बड़े-बड़े फोड़े भी निकलने लगे, जिनमें खुजली व जलन अधिक होती थी. अज्ञानतावश राजा के यहाँ सभी कार्य उलटे हो रहे थे. पुत्र की दशा देख राजा और अधिक परेशान हो उठा. उसी बीच उसके गुप्तचरों ने उसे बताया कि काछी-पुत्र को भी शीतला निकली थी, पर वह बिलकुल ठीक हो गया है. यह जान कर राजा सोच में पड़ गया कि मैं शीतला की इतनी सेवा कर रहा हूँ, फिर भी मेरे पुत्र को लाभ नहीं हो रहा है, जबकि काछी-पुत्र बिना सेवा-पूजा के ही भला चंगा हो गया. आखिर इसका क्या कारण है?

एक दिन इसी सोच में राजा को नींद आ गई. स्वप्न में श्वेतवस्त्रधारिणी भगवती ने उसे दर्शन देकर कहा- "हे राजन! तुम्हारी सेवा- अर्चना से मैं प्रसन्न हूँ, इसीलिए तुम्हारा पुत्र अभी तक जीवित है. उसके स्वस्थ्य न होने का कारण यह है कि तुमने शीतला के समय पालन करने योग्य नियमों का उल्लंघन किया. तुम्हें नमक का प्रयोग बन्द करना चाहिए, क्योंकि नमक से रोगी के फोड़ों में खुजली होती है. घर की सब्जियों में छौंक नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि उसकी गन्ध से रोगी का मन उन वस्तुओं को खाने के लिए ललचाता है. रोगी का किसी के पास जान-आना वर्जित है, क्योंकि संक्रमण से यह रोग दूसरों को भी होने का भय रहना है. तुम इन नियमों का पालन करो, तुम्हारा पुत्र अवश्य ठीक हो जाएगा."

इस प्रकार समझा-बुझाकर देवी अन्तर्धान हो गईं. अगले दिन प्रातः काल से ही राजा ने देवी की आज्ञानुसार समस्त व्यवस्थाएँ कर दीं. राजकुमार के स्वास्थ्य पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा और वह शीघ्र ही पूरी तरह ठीक हो गया.

इस कथा के माध्यम से हमें यह जानकारी मिलती है कि शीतला रोग के समय क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए. ●

पूर्णिमा के पर्व

पूर्णिमा का भारतीय जनजीवन में अत्याधिक महत्व है. हर माह की पूर्णिमा को कोई न कोई पर्व अवश्य मनाया जाता है. जैसेः

- **चैत्र** की पूर्णिमा के दिन हनुमान जयंती
- **वैशाख** की पूर्णिमा के दिन बुद्ध जयंती
- **ज्येष्ठ** की पूर्णिमा के दिन वट सावित्री व्रत
- **आषाढ़** मास की पूर्णिमा को गुरू-पूर्णिमा कहते हैं. इस दिन गुरू पूजा का विधान है. इसी दिन कबीर जयंती भी मनाई जाती है.
- **श्रावण** की पूर्णिमा के दिन रक्षाबंधन पर्व
- **भाद्रपद** की पूर्णिमा के दिन उमा माहेश्वर व्रत.
- **आश्विन** की पूर्णिमा के दिन शरद पूर्णिमा
- **कार्तिक** की पूर्णिमा के दिन पुष्कर मेला और गुरूनानक जयंती
- **मार्गशीर्ष** की पूर्णिमा के दिन श्री दत्तात्रेय जयंती
- **पौष** की पूर्णिमा के दिन शाकंभरी जयंती जैन धर्म के मानने वाले पुष्यभिषेक यात्रा प्रारंभ करते हैं. बनारस में दशाश्वमेध तथा प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर स्नान को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है.
- **माघ** की पूर्णिमा के दिन संत रविदास जयंती, श्री ललित और श्री भैरव जयंती मनाई जाती है. माघी पूर्णिमा के दिन संगम पर माघ-मेले में जाने और स्नान करने का बड़ा महत्व है.
- **फाल्गुन** की पूर्णिमा के दिन होली का पर्व

चार महाकुंभ पर्व

1. अर्द्धकुंभ हरिद्वार
2. कुंभ उज्जैन
3. कुंभ हरिद्वार
4. कुंभ प्रयागराज

कुंभ मेला

अर्द्धकुंभ हरिद्वारः 13 अप्रैल 2016 को अर्द्धकुंभ महापर्व हरिद्वार होगा.

कुंभ उज्जैनः 21 मई 2016 को कुंभ महापर्व उज्जैन होगा.

कुंभ हरिद्वारः 14 अप्रैल 2021 को कुंभ महापर्व हरिद्वार होगा.

कुंभ प्रयागराजः 29 जनवरी 2025 को कुंभ महापर्व प्रयागराज होगा.

हरिद्वार व प्रयागराज में अर्धकुंभी पर्व भी होते हैं.

पर्व-दिन

चतुर्दशी, कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा ये पाँचों और सूर्य की संक्रांति का दिन, ये पर्व कहलाते हैं.

विक्रम संवत् 2073 श्राद्ध पक्ष 16 सितम्बर से 01 अक्टूबर 2016

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है.

16 सितंबर	शुक्र	प्रोष्ठपदी/ पूर्णिमा श्राद्ध
17 सितंबर	शनि	एकम का श्राद्ध
18 सितंबर	रवि	दूज का श्राद्ध
19 सितंबर	सोम	तीज का श्राद्ध/चतुर्थी का श्राद्ध
20 सितंबर	मंगल	पंचमी का श्राद्ध
21 सितंबर	बुध	षष्ठी का श्राद्ध
22 सितंबर	गुरु	सप्तमी का श्राद्ध
23 सितंबर	शुक्र	अष्टमी का श्राद्ध
24 सितंबर	शनि	नवमी/सौभाग्यवती का श्राद्ध
25 सितंबर	रवि	दशमी का श्राद्ध
26 सितंबर	सोम	ग्यारस का श्राद्ध
27 सितंबर	मंगल	बारस/संन्यासियों का श्राद्ध
28 सितंबर	बुध	तेरस का श्राद्ध
29 सितंबर	गुरु	चौदस का श्राद्ध
30 सितंबर	शुक्र	अमावस/अज्ञात तिथि श्राद्ध
30 सितंबर	शुक्र	सर्वपितृ श्राद्ध
01 अक्टूबर	शनि	नाना/नानी का श्राद्ध

॥ विशेष त्यौहारों के मुहूर्त ॥

राखी मुहूर्त

गुरुवार, 18 अगस्त, 2016
06.24 से 14.56 बजे तक
13.57 से 14.56 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रातः 06.24 से 07.59 बजे तक
दोपहरः 11.08 से 15.51 बजे तक
सुबहः 17.26 से 19.00 बजे तक

गुप्त नवरात्रि मुहूर्त

मंगलवार, 05 जुलाई, 2016
06.09 से 10.32 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 09.27 से 14.22 बजे तक
दोपहर : 16.00 से 17.38 बजे तक

शनिवार, 28 जनवरी, 2017
09.48 से 11.00 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 08.41 से 10.05 बजे तक
दोपहर : 12.52 से 17.02 बजे तक

चैत्र नवरात्रि मुहूर्त

शुक्रवार, 08 अप्रैल, 2016
06.30 से 10.37 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 06.30 से 11.08 बजे तक
दोपहर : 12.40 से 14.13 बजे तक
शाम : 17.18 से 18.51 बजे तक

तुलसी विवाह मुहूर्त

शुक्रवार, 11 नवम्बर, 2016

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 06.48 से 10.59 बजे तक
दोपहर : 12.23 से 13.46 बजे तक
शाम : 16.34 से 17.58 बजे तक

शारदीय नवरात्रि मुहूर्त घटस्थापना

शनिवार, 01 अक्टूबर, 2016
06.32 से 07.39 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 08.02 से 09.30 बजे तक
दोपहर : 12.28 से 16.34 बजे तक

दीपावली मुहूर्त

धनतेरस मुहूर्त गुरुवार, 27 अक्टूबर, 2016
19.12 से 10.35 बजे तक

प्रदोष काल : 18.08 से 20.35 बजे तक
वृषभ काल : 19.12 से 21.12 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 06.40 से 08.06 बजे तक
: 10.57 से 15.13 बजे तक
शाम : 16.39 से 18.04 बजे तक

लक्ष्मीपूजन मुहूर्त रविवार, 30 अक्टूबर, 2016
19.00 से 20.34 बजे तक

प्रदोष काल : 18.02 से 20.34 बजे तक
वृषभ काल : 19.00 से 21.00 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 08.07 से 12.22 बजे
दोपहर : 13.47 से 15.12

दीपावली पूजन सदैव स्थिर लग्न में ही किया जाता है. स्थानीय प्रदोष काल (वृषभ लग्न) सिंह लग्न दीपावली का मुख्य समय है.

भाई-दूज मुहूर्त

01 नवम्बर, 2016, मंगलवार
13.29 से 15.45 बजे तक

चौघड़िया मुहूर्त
प्रात : 09.32 से 13.47 बजे तक
शाम : 15.12 से 16.37 बजे तक

होली दहन मुहूर्त

रविवार, 12 मार्च, 2017 को पूर्णिमा के प्रदोष-व्यापिनीकाल में भा. स्टै. टा. अनुसार 18 घं. 43 मि. से 20 घं. 23 मि. तक के समय-काल में होलिका दहन निःसंदेह रूप से किया जा सकता है. प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका-दहन किया जाता है. यथा-"**सा प्रदोषव्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या॥**" (धर्मसिन्धु). यदि प्रदोषकाल के समय भद्रा हो और मुद्र निशीथकाल (लगभग अर्द्धरात्रि) से पहले ही समाप्त हो रही तो भद्रा के बाद और निशीथकाल से पहले होलिका दहन करने का विधान है. परंतु यदि भद्रा निशीथकल से पहले समाप्त न हो, अगले दिन प्रातः तक जा रही हो तथा अगले दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी भी न हो, तब पहले ही दिन भद्रा का मुख छोड़कर प्रदोषकाल में ही होलिका दहन कर लेना चाहिए.

विवाह मुहूर्त विक्रम संवत् 2073, शाक संवत् 1938

अप्रैल

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
चैत्र शुक्ल	10	शनि	16-04-2016
चैत्र शुक्ल	11	रवि	17-04-2016
चैत्र शुक्ल	12	सोम	18-04-2016
चैत्र शुक्ल	13	मंगल	19-04-2016
चैत्र शुक्ल	14	बुध	20-04-2016
चैत्र शुक्ल	15	शुक्र	22-04-2016
वैशाख कृष्ण	01	शनि	23-04-2016
वैशाख कृष्ण	02	रवि	24-04-2016
वैशाख कृष्ण	03	सोम	25-04-2016

जुलाई

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
आषाढ़ शुक्ल	09	बुध	13-07-2016
आषाढ़ शुक्ल	10	गुरु	14-07-2016
आषाढ़ पूर्णिमा	15	मंगल	19-07-2016
श्रावण कृष्ण	01	बुध	20-07-2016
श्रावण कृष्ण	02	गुरु	21-07-2016
श्रावण कृष्ण	05	रवि	24-07-2016
श्रावण कृष्ण	06	शनि	25-07-2016
वैशाख कृष्ण	10/11	रवि	29-07-2016

अगस्त

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
श्रावण शुक्ल	01	बुध	03-08-2016
श्रावण शुक्ल	02	गुरु	04-08-2016
श्रावण शुक्ल	04	शनि	06-08-2016
श्रावण शुक्ल	05	रवि	07-08-2016
श्रावण शुक्ल	5/6	सोम	08-08-2016
श्रावण शुक्ल	6/7	मंगल	09-08-2016

अगस्त

श्रावण शुक्ल	11	रवि	14-08-2016
श्रावण पूर्णिमा	15	गुरु	18-08-2016
भाद्रपद कृष्ण	2/3	शनि	20-08-2016
भाद्रपद कृष्ण	3/4	रवि	21-08-2016
भाद्रपद कृष्ण	08	गुरु	25-08-2016
भाद्रपद कृष्ण	9/10	शुक्र	26-08-2016

सितम्बर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
भाद्रपद शुक्ल	01	शुक्र	02-09-2016
भाद्रपद शुक्ल	2/3	शनि	03-09-2016
भाद्रपद शुक्ल	3/4	रवि	04-09-2016

अक्टूबर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
आश्विन शुक्ल	09	सोम	10-10-2016
आश्विन शुक्ल	10	मंगल	11-10-2016
आश्विन शुक्ल	13	शुक्र	14-10-2016
कार्तिक कृष्ण	4/5	बुध	19-10-2016
कार्तिक कृष्ण	05	गुरु	20-10-2016
कार्तिक कृष्ण	10/11	मंगल	25-10-2016
कार्तिक कृष्ण	11/12	बुध	26-10-2016

नवम्बर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
कार्तिक शुक्ल	02	मंगल	01-11-2016
कार्तिक शुक्ल	03	बुध	02-11-2016
कार्तिक शुक्ल	04	गुरु	03-11-2016
कार्तिक शुक्ल	4/5	शुक्र	04-11-2016
कार्तिक शुक्ल	7/8	सोम	07-11-2016

नवम्बर

कार्तिक शुक्ल	8/9	मंगल	08-11-2016
कार्तिक शुक्ल	11/12	शुक्र	11-11-2016
कार्तिक शुक्ल	13	शनि	12-11-2016
कार्तिक कृष्ण	2/3	बुध	16-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	10	बुध	23-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	11	गुरु	24-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	11/12	शुक्र	25-11-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	01	बुध	30-11-2016

दिसम्बर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
मार्गशीर्ष शुक्ल	02	गुरु	01-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	04	शनि	03-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	05	रवि	04-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	09	गुरु	08-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	10	शुक्र	09-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	11/12	शनि	10-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	13	सोम	12-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	14/15	मंगल	13-12-2016

जनवरी

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
माघ कृष्ण	3/4	रवि	15-01-2017
माघ कृष्ण	4/5	सोम	16-01-2017
माघ कृष्ण	5/6	मंगल	17-01-2017
माघ कृष्ण	06	बुध	18-01-2017
माघ कृष्ण	10	रवि	22-01-2017
माघ कृष्ण	11	सोम	23-01-2017
माघ कृष्ण	12	मंगल	24-01-2017
माघ शुक्ल	02	रवि	29-01-2017

फरवरी

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
माघ शुक्ल	05	बुध	01-02-2017
माघ शुक्ल	06	गुरु	02-02-2017
माघ शुक्ल	07	शुक्र	03-02-2017
माघ शुक्ल	09	रवि	05-02-2017
माघ शुक्ल	10	सोम	06-02-2017
माघ शुक्ल	11	मंगल	07-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	04	मंगल	14-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	05	बुध	15-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	07	शनि	18-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	08	रवि	19-02-2017
फाल्गुन शुक्ल	01	सोम	27-02-2017
फाल्गुन शुक्ल	02	मंगल	28-02-2017

मार्च

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
फाल्गुन शुक्ल	6/7	शनि	04-03-2017

कन्या का विवाह जन्मकाल से सम वर्षों में तथा लड़के का विवाह जन्म काल से विषम वर्षों में करना शुभ होता है.

मेलापक प्रक्रिया में मांगलीक और अष्टकूट तत्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है. उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की संभावनाएँ हो जाती है.

आवश्यक मुहूर्त विचार

सभी मुहूर्तों में अधिक मास, पितृ पक्ष, रिक्ता तिथि (4,9,14), वैधृति आदि दुष्ट योगों एवं गुरु/शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा.

नाम मुहूर्त	शुभ तिथियां	शुभ वार, मास	शुभ नक्षत्र
नामकरण संस्कार	1 (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की 2, 3, 7, 10, 11, 13 (शुक्ल) तिथियाँ व पूर्णिमा	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) 10, 12, 13, 16 आदि दिनों में तथा चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत और रेवती
विद्या प्रारंभ	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल), 14, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (14जन. से 15जुला. आषाढ़ तक)5 वें या 7वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, हस्त, श्ले, पूर्वा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा-तीनों
मुंडन संस्कार	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 6 7, 10, 11, 13 (शुक्ल), 15 शुभ तिथियाँ	जन्म से 1,3,5 इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये, आषा (मास तक), माघ, फाल्गु (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त चित्रा, स्वा, ज्ये, श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य
नौकरी	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 15 तिथियाँ	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, पूर्वा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती
गाड़ी खरीदना	1 (कृष्ण), 2, 3, 5 , 6, 7, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल), 15	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में. तथा द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव, रेवती
गृहारम्भ (मकान बनाना)	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13(शुक्ल), 15	चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भाद्र, मार्ग, माघ,फाल्गु प्रशस्त हैं.	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियाँ ग्राह्य	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य. सुप्त भूमि के प्रविष्टे (5, 7, 9, 15, 21, 24 त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्टे
नूतन गृहप्रवेश	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 (शुक्ल) 15 तिथियाँ	वैशा, ज्ये, कार्ति, मार्ग, माघ एवं फाल्गु. पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, वार- चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र व शनि	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेवती
सगाई	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल),15 शुभ तिथियाँ	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आषाढ़, श्रावण, भाद्र, आश्वि, मार्ग, माघ, और फाल्गुन	अश्वि, रोह, मृग, मघा, पूर्वा 3, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, रेवती
विवाह	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल), 15	वैशा, ज्ये, आषा, श्राव, भाद्र, अश्वि, मार्ग, माघ, फाल्गु तथा कार्तिक (पर्वतीय केवल) रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त, मंगल, शनि (मध्यम)	रोह, मृग, मघा, उत्तरा 3 (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रवण, धनि, रेवती
अनाज भंडार	2, 3, 5, 7, 8, 11, 12, 13 (शुक्ल), 15	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेव
ऑप्रेशन का	2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13	रवि, मंगल, गुरु, शनि	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
भूमि खरीदना	1 (कृष्ण) तथा 5, 6, 10, 11, 15	मंगल, गुरु, शुक्र	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा 3, मूल, रेवती
मुकद्दमा दायर करना	3, 5, 8, 10, 13 (शुक्ल) 15, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिए	रवि, मंग, बुध, गुरु वार प्रशस्त	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा 3, ज्ये, मूल, नक्षत्र
पशु खरीदना	1 (कृष्ण), 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल), 15	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शनि	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती
औषधि सेवन	1,(कृष्ण),2,3,5,7,10, 11,12,13 (शुक्ल)	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं.

गृहारम्भ, नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त वास्तुपूजन विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938

अप्रैल

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
चैत्र शुक्ल	08	गुरु	14-04-2016
चैत्र पूर्णिमा	15	शुक्र	22-04-2016
वैशाख कृष्ण	01	शनि	23-04-2016
वैशाख कृष्ण	03	सोम	25-04-2016

जुलाई

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
आषाढ़ शुक्ल	10	गुरु	14-07-2016
आषाढ़ शुक्ल	11	शनि	15-07-2016

अक्टूबर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
कार्तिक कृष्ण	05	गुरु	14-10-2016
कार्तिक कृष्ण	07	शनि	22-10-2016
कार्तिक शुक्ल	12	गुरु	27-10-2016
कार्तिक शुक्ल	01	सोम	31-10-2016

नवम्बर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
कार्तिक शुक्ल	03	बुध	02-11-2016
कार्तिक शुक्ल	07	सोम	07-11-2016
कार्तिक शुक्ल	10	बुध	09-11-2016
कार्तिक शुक्ल	12	शुक्र	11-11-2016
कार्तिक शुक्ल	13	शनि	12-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	03	गुरु	17-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	05	शुक्र	18-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	06	शनि	19-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	10	बुध	23-11-2016
मार्गशीर्ष कृष्ण	11	गुरु	24-11-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	11/12	शुक्र	25-11-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	12	शनि	26-11-2016

दिसम्बर

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
मार्गशीर्ष शुक्ल	06	सोम	05-12-2016
मार्गशीर्ष शुक्ल	11	शनि	10-12-2016

जनवरी

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
मार्गशीर्ष कृष्ण	06	बुध	18-01-2017
मार्गशीर्ष कृष्ण	11	सोम	23-01-2017
माघ शुक्ल	30	सोम	30-01-2017

फरवरी

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
माघ शुक्ल	05	बुध	01-02-2017
माघ शुक्ल	06	गुरु	01-02-2017
माघ शुक्ल	07	शुक्र	01-02-2017
माघ शुक्ल	10	सोम	01-02-2017
माघ शुक्ल	12	बुध	01-02-2017
माघ शुक्ल	13	गुरु	01-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	03	सोम	01-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	05	बुध	01-02-2017
फाल्गुन कृष्ण	5/6	गुरु	01-02-2017

मार्च

पक्ष	तिथि	वार	दिनांक
फाल्गुन शुक्ल	5/6	गुरु	01-02-2017

शुभ भूमि- चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, फूस, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एरां समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है.

गृह निर्माण का आरंभ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ.
आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दस नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे.

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार- आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें. **'आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥'**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है. ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है.

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृग जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है.

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्‌वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः जन्ममासेऽथ पुत्राद्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए. तैलादि मंगल कार्य हेतू, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए. उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर कन्या को विवाह से दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए. इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें.

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
दिन	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

भूमि खरीदने का मुहूर्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं.

शुभ तिथियाँः प्रतिपदा (कृष्ण-पक्ष), कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष 2,5,6,10,11,15 तिथियाँ.

शुभ नक्षत्रः मृगशिरा, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूल, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र.

शुभवारः सोमवार, बुधवार, रविवार, शुक्रवार.

ऋण का मुहूर्त

ऋण लेने या देने नाम से मुहूर्त निकालना चाहिए, मुहूर्त के अभाव में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखें

- कर्ज मंगलवार, शनिवार व अमावस्या को नहीं लेना चाहिए.
- बुधवार को कर्ज नहीं देना चाहिए.
- राहू-काल में कर्ज नहीं लेना चाहिए.
- अमृत, शुभ, लाभ के चौघड़ियों में कर्ज लेना ठीक रहता है.

शुभ कार्यों में वर्जित समय विचार

देवशयन

आषाढ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते हैं. इन्हें देवशयन या चातुर्मास कहते हैं, इन दिनों में विवाह, उपनयन, गृहारम्भ, शान्ति, पौष्टिक कर्म, देव-स्थापना आदि का निषेध है.

होलाष्टक

होली से 8 दिन पूर्व (फाल्गुन शुक्ल अष्टमी) से होलाष्टक माना गया है. इसमें कुछ क्षेत्रों (सतलज, रावी, व्यास नदियों तथा पुष्कर सरोवर के तटवर्ती भाग) में विवाहादि मांगलिक कार्य वर्जित है. अन्य क्षेत्रों में वर्जित नहीं है.

गृहारंभ मुहूर्त विचार

शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, मृगशिरा, पुष्य, अनु, श्रव. धनि. हस्त, चित्रा स्वा. रोहिणी, रेवती
शुभ मास	वैशा. श्राव. मार्ग. फाल्गु. तथा मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ, केतु, सूर्य में
वार	सोमवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार एवं शनिवार शुभ है.
शुभ तिथियां	1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 एवं 15 शुभ.
शुभ लग्न	2, 3, 5, 6, 9, 8, 11 एवं 12 अपने स्वामी एवं शुभग्रह से दृष्ट.
लग्न शुद्धि	लग्न से 1, 4, 7, 10, 5, 9 में शुभ ग्रह 3, 6, 11 में पाप ग्रह हो तथा 8, 12 के ग्रह वर्जित रहने पर शुभ है.
त्याज्य	भद्रा, कुयोग, अष्टमगत् चंद्र.

गृहप्रवेश मुहूर्त विचार

शुभ मास	वैशाख, ज्येष्ठ, माघ तथा फाल्गुन महीने में नये घर तथा इनके सहित श्रावण, मृगशिर, कार्तिक मासों में जीर्णगृह या अग्निभय से निर्मित नूतन गृह में भी प्रवेश शुभ होता है.
नक्षत्र	तीनों उत्तरा, अनुराधा, रोहिणी, मृगशिर, चित्रा एवं रेवती नक्षत्र में शुभ
शुभ वार	सोमवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार एवं शनिवार शुभ है.
तिथि	1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13
लग्न	2, 5, 8, 11 शुभ तथा 3, 6, 9, 12 मध्य
लग्न शुद्धि	जन्म लग्न तथा राशि लग्न से उपचय स्थान की स्थिर राशि में, लग्न से 1, 2, 3, 5, 7, 9, 10, 11 स्थानों में शुभ ग्रह 3, 6, 11 में पाप ग्रह तथा 4, 8 शुद्ध रहने पर वाम रवि में गृह प्रवेश शुभ होता है.

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

1. सूर्य वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारंभ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें.
2. सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या तुला) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारंभ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें.
3. सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का आरंभ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें.
4. सूर्य मेष, कुंभ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरंभ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें.

राहु काल में शुभ कार्य न करें

राहु काल में शुभ कार्य करना, यात्रा करना, सौदा करना या किसी भी अच्छे कार्य के लिए समय को टालना ही हित में हैं. भारत के दक्षिणी प्रान्त में इस काल को बहुत ही अशुभ माना जाता है.

प्रातः काल 6 बजे के आधार पर राहु काल का विवरण दिया गया है.

वार	समय	राहुकाल समय
रवि	सायं	04.30 बजे से 06.00
सोम	प्रातः	07.30 बजे से 09.00
मंगल	दोपहर	03.00 बजे से 04.30
बुध	दोपहर	12.00 बजे से 01.30
गुरू	दोपहर	01.30 बजे से 03.00
शुक्र	प्रातः	10.30 बजे से 12.00
शनि	प्रातः	09.00 बजे से 10.30

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो

एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परंतु अति आवश्यकता में 9 दिन का अंतर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें, इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें.

ज्येष्ठ विचार

ज्येष्ठ पुत्र व कन्या ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है. अत्यावश्यकता में कृतिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें. ●

नामकरण मुहूर्त विचार

सूतक-समाप्ति पर देशानुसार 10, 11, 12, 13, 16, 19, 22 वें दिन संस्कार करना चाहिए. एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को 10 या 12वें दिन, क्षत्रिय को 11 या 12वें दिन वैश्य को 16 या 20वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए. नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मंत्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए.

शुभ तिथियां: 1 (कृष्ण), 2, 3, 7, 10, 11, 12, 13 (शुक्ल).

शुभ वार: चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र.

शुभ नक्षत्र: अश्विन, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती.

शुभ लग्न: 1, 4, 6, 7, 9,12 लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों. भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रांति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछकर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरूषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है. ●

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह-लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है.

गोधूलि काल: जब सूर्यास्त न हुआ हो अर्थात सूर्यास्त होने वाला हो और गाय आदि चौपाय अपने - अपने घरों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें तो उस काल को मुहूर्तकारों ने गोधूलि काल का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है. यह लग्न मुहूर्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को प्रायः नष्ट कर देता है. ●

वास्तुदोष के महत्वपूर्ण टोटके

● पूरब दिशा प्रकाश तथा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्ति का मुख्य स्रोत है. इस दिशा से प्रकाश तथा हवा निर्बाध व शुद्ध रूप से प्राप्त हो सके, ऐसी व्यवस्था करें. पूर्व दिशा को साफ रखें. पश्चिम की अपेक्षा नीची हल्की खाली रखें. इस दिशा में तुलसी का पौधा लगायें. जूते आदि इस दिशा में न रखें.

● घर में आलस्य, अशांति, कलह, नशा, कबाड़, गंदगी, अंधकार तथा अव्यवस्था पसरे रहते हों तो लक्ष्मी घर में नहीं आती. आ भी जाए तो टिकती नहीं. अतः उपरोक्त दोषों से बचें. गृहणी का विशेषतः बिना घर की सफाई व स्नान किए रसोई में जाकर भोजन बनाना धन व सुख-शांति की दृष्टि से शुभ नहीं होता. खाना बनाना व खिलाना ये कार्य गृहणी को स्वयं करने चाहिए. नौकर से सफाई, बर्तन धुलाना, कपड़े धुलाना आदि करायें.

● गृहणी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है. घर के बुजुर्गों तथा अतिथि को देवता कहा जाता है. जिन घरों में गृहणी प्रताड़ित होती तथा दुःखी रहती है, बुजुर्गों का सम्मान न होकर उनकी उपेक्षा होती है. अतिथि प्रसन्न व संतुष्ट होकर नहीं जाते उस घर में लक्ष्मी का प्रवेश या निवास कभी नहीं रहता.

● पूर्व तथा उत्तर में द्वार खिड़कियों का न होना धनागम की दृष्टि से शुभ नहीं होता तो दक्षिण तथा पश्चिम में द्वार खिड़कियों का होना धन के रुकने की दृष्टि से शुभ नहीं होता. इन दिशाओं में द्वार खिड़की नहीं होने चाहिए. यदि हों तो पूर्व तथा उत्तर की अपेक्षा कम व छोटे होने चाहिए. यदि हों तो पूर्व तथा उत्तर की अपेक्षा कम व छोटे होने चाहिए. ऐसा न हो तो उन्हें सदा बन्द रखें, प्रयोग में न लायें वरना रोगों, झगड़ों, विपत्तियों, मुकदमों, जुए, नशे आदि में धन व्यय होता रहता है.

● ब्रह्मस्थान (वास्तु का केन्द्र) पर सीढ़ी, खम्बा, गड्ढा, हैंडपम्प, बोरिंग, दबाव होना, नैऋत्य दिशा में बोरिंग, नल, पानी की टंकी होना भी धन को घर में टिकने नहीं देता, स्वास्थ्य तथा आयु को भी प्रभावित है, विशेषतः घर के मुखिया की. अतः इस प्रकार के दोषों को घर में नहीं आने दें, हों तो दूर करें.

● पानी का अपव्यय, सीलन, कीचड़, फिसलन, गंदे पानी का घर या आसपास जमा होना, काई लग जाना, नल को या पाईपों का टपकते रहना, छत का टपकना, अपना पानी पड़ोसी के घर द्वार पर जाना या पड़ोसी का पानी अपने घर द्वार पर आना अथवा तालाब पाटकर घर बनाना या शुद्ध जल का स्रोत ईशान/उत्तर के अलावा अन्यत्र दिशाओं में होना 'जल सम्बन्धी वास्तुदोष व जलदोष' बनाता है. इसके कारण धन घर में नहीं रुकता.

● यदि शौचालय ईशान या पूर्व या उत्तर में हो, अथवा रसोईघर उत्तर में या ईशान में हो या पूजाघर नैऋत्य दिशा में हो, घर की छत पर कबाड़ एकत्रित रहे, तो बरकत नहीं रहती. रोग, कलह, झगड़े आदि बढ़कर धन दवाओं, मुकदमों में खर्च होता है.

● सीढ़ियों का घर के भीतर उतरना, सीढ़ियों का अधिक मात्रा में होना, सीढ़ियों का ईशान पूर्व में होना सीढ़ियों के नीचे रसोई आदि का होना या सीढ़ियों के पायदानों की संख्या सम होनी चाहिए जैसे 2,4,6,8,10आदि धन सम्बन्धी परेशानियाँ देता है. सुख-शांति की हानि करता है. सीढ़ियों में पायदानों की संख्या विषम हो, किन्तु ऐसी कि 3 से भाग देने पर 2 शेष बचें. जैसे 5, 11, 17 आदि.

● पूर्व/ईशान दिशा में तुलसी लगानी चाहिए. उसके सम्मुख प्रातः तथा सायं घृत दीप जलाना चाहिए. प्रातः उसे जल देकर उसकी परिक्रमा करनी चाहिए. इससे उन्नति होती है.

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि 3 या 3 से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जानें, तीन से आगे की संख्या से 6 तक की संख्या में मिले तो बुध के मुख में आहुति जानें. इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें.

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	3	3	3	3	3	3	3	3	3
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

चौघड़िया

शीघ्रता में कोई भी यात्रा मुहूर्त न बनता हो या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो इस अवसर के लिए विशेष रुप से चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग किया जाता था लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यक शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है.

एक चौघड़िया 90 मिनट का होता है. चौघड़िया जिस वार को देखना हो, उस दिन के सूर्यास्त और सूर्यास्त का समय ग्रहण करें. उसमें 1.30 घण्टा जोड़कर इसका मान प्राप्त करें. उद्वेग, रोग और काल का चौघड़िया अशुभ माना जाता है, इसको त्याग देना चाहिए.

दिन की चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

गुरु-शुक्र अस्त में वर्जित कर्म

बगीचा, कुआँ, मकान का प्रारम्भ और प्रतिमा, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, दान, गोदान प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, मुण्डन, देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपू देवीतीर्थ-दर्शन, संन्यास, यज्ञ, समावर्तन, चातुर्मास्य, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये क गुरु, शुक्र के अस्त, बाल वृद्धत्व तथा मलमास में करना निषिद्ध है. ●

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षाबन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन, स्त्री प्रसंग, यज्ञ, स्नान, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, ऑपरेशन, मुकदमा, किसी वस्तु को काटना, अग्नि सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं.

भद्रा लोक वास - मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग** लोक में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में - अर्थात् **सम्मुख रहती है.** जब भद्रा **भू - लोक में (सम्मुख)** रहती है, तब **अशुभ फल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है.

स्थिताभूर्लोकस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा (मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू-लोक
चन्द्रराशि	1,2,3,8	6,7,9,10	4,5,11,12
भद्रा-मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः।
मृत्यलोके यदा-भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है. कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है. **मतान्तर से,** दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है. बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है.

भद्रा दोष, मंगल-शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है.

।। भद्रा परिहार ।।

सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूतों में भद्रा का त्याग करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा,** तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं.

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुखं, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं.

तिथेः पूर्वार्धा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात कार्येऽत्यावश्यके सति॥

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता हैं. जैसे :

तिथि पूवार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥

दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो-दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा यदि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है. **पीयूषधारानुसार -** दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है.

रात्रिभद्रा यदाह्नि स्याद दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा - भद्र दायिनी॥

"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धो निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्।।" उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है. ●

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः इन वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए. अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौ खाकर या दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है.

यात्रा प्रारंभ के समय चल रही नासिका के श्वास की ओर का कदम पहले रखें, इसी तरह सवारी पर चढ़ें, यात्रा सफल होगी. •

ज्योतिष में गो-महिमा



• ज्योतिष में गोधूलि का समय विवाह के लिए सर्वोत्तम माना गया है.

• यदि यात्रा के प्रारम्भ में गाय सामने पड़ जाए अथवा अपने बछड़े को दूध पिलाती हुई सामने पड़ जाए तो यात्रा सफल होती है. • जिस घर में गाय होती है, उस में वास्तुदोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है. • जन्मपत्री में यदि शुक्र अपनी नीच राशि कन्या पर हो, शुक्र की दशा चल रही हो या शुक्र अशुभ भाव (6, 8, 12) में स्थित हो तो प्रातः काल के भोजन में से एक रोटी सफेद रंग की गाय को खिलाने से शुक्र का नीचत्व एवं शुक्र सम्बन्धी कुदोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है. • यदि बुरे सपने दिखाई दें तो गो माता का ध्यान करे, बुरे स्वप्न दिखने बन्द हो जाएँगे. •

यात्रा विचार

पूर्व दिशा की ओर यात्रा दोपहर में, उत्तर दिशा की ओर प्रातः काल में, दक्षिण दिशा की ओर सायं काल में तथा पश्चिम दिशा की ओर अर्द्धरात्रि में शुभ होती है.

यात्रा न करें : सोमवार, शनिवार व ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व की ओर, गुरुवार व पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में दक्षिण की ओर, शुक्रवार, रविवार व रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम की ओर, मंगलवार, बुधवार और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए. •

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है. यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है.

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करण दोष, नक्षत्र दोष, वार दोष, संक्रान्ति दोष, अशुभ तिथि दोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है. •

विभिन्न योगों का निरुपण

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं.

सर्वार्थसिद्धि योगः अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन, क्रय - विक्रय, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं. वैसे ये समस्त कार्यो के लिए सिद्ध माने गये हैं. सर्वार्थ सिद्धि योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि.

अमृत सिद्धि योगः ये वार और नक्षत्र के योग से बनते हैं, ये सभी कार्यों के लिए प्रशस्त हैं, किंतु रविवार को पंचमी, सोमवार को षष्ठी, मंगलवार को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी से ये अमृत सिद्धि योग, विषयोग हो जाते हैं.

द्विपुष्कर योगः ये भी तिथि-नक्षत्र एवं वार के संयोग से बनते हैं, ये योग लाभ और हानि में दो गुना फल देते हैं.

त्रिपुष्कर योगः ये भी द्विपुष्कर के अनुसार बनते हैं तथा लाभ और हानि में तिगुना फल देते हैं.

राजयोगः ये भी वार, तिथि, नक्षत्र के योग से बनते हैं. ये धार्मिक, मांगलिक एवं पौष्टिक कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं.

व्यतिपात योगः ये सभी शुभ कार्यों के लिए वर्जित हैं.

रवि योगः यह समस्त कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं. ये सूर्य नक्षत्र एवं दैनिक नक्षत्र के योग से बनते हैं. •

रवि योगों मेंः सर्वार्थ सिद्धि योगों की भाँति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं. रवि योग की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी है, तो **रवि योग** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है.

रविपुष्य योगों मेंः जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है. यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं.

गुरुपुष्य योगों मेंः गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है.

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा. अर्थात कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द निर्बल माना जाता है. इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राध्द पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना प्रशस्त होगा. **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्तों में से ही करने कल्याणकारी होंगे.** •

तिथि-क्षय एवं तिथि-वृद्धि

तिथि-क्षय

यदि किसी दिन सूर्योदय से कुछ समय पश्चात् कोई तिथि प्रारम्भ होकर दूसरे दिन के सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो जाए तो उस तिथि को **क्षय** माना जाता है.

तिथि-वृद्धि

यदि किसी दिन सूर्योदय से पूर्व ही कोई तिथि प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय के वाद भी चालू रहती है तो उस दिन तिथि की **वृद्धि** हो जाती है. •

ग्रहों का निरयन राशि प्रवेश - विक्रम संवत् 2073 ग्रह

सूर्य

13-04-2016	मेष
14-05-2016	वृष
14-06-2016	मिथुन
16-07-2016	कर्क
16-08-2016	सिंह
16-09-2016	कन्या
17-10-2016	तुला
15-11-2016	वृश्चिक
15-12-2016	धनु
14-01-2017	मकर
12-02-2017	कुंभ
14-03-2017	मीन

शुक्र

25-04-2016	मेष
19-05-2016	वृष
13-06-2016	मिथुन
07-07-2016	कर्क
31-07-2016	सिंह
25-08-2016	कन्या
18-09-2016	तुला
13-10-2016	वृश्चिक
07-11-2016	धनु
02-12-2016	मकर
28-12-2016	कुंभ
27-01-2017	मीन
04-02-2017	वक्री

केतु

सारा संवत् कुंभ में संचार करेगा.

मंगल

17-04-2016	वक्री
17-06-2016	वक्री तुला
30-06-2016	मार्गी
12-07-2016	वृश्चिक
18-09-2016	धनु
01-11-2016	मकर
11-12-2016	कुंभ
20-01-2017	मीन
01-03-2017	मेष

गुरु

09-05-2016	मार्गी
11-08-2016	कन्या
06-02-2017	वक्री

शनि

13-08-2016	मार्गी
26-01-2017	धनु

राहु

सारा संवत् सिंह में संचार करेगा.

बुध

28-04-2016	वक्री
22-05-2016	मार्गी
08-06-2016	वृष
27-06-2016	मिथुन
11-07-2016	कर्क
27-07-2016	सिंह
19-08-2016	कन्या
30-08-2016	वक्री
09-09-2016	वक्री सिंह
22-09-2016	मार्गी
03-10-2016	कन्या
21-10-2016	तुला
08-11-2016	वृश्चिक
28-11-2016	धनु
19-12-2016	वक्री
08-01-2017	मार्गी
03-02-2017	मकर
22-02-2017	कुंभ
10-03-2017	मीन
27-03-2017	मेष

ग्रह फल कब देते हैं?

सूर्यादि नवग्रह 12 राशियों में गोचर भ्रमण करते हैं. जिनका फल आदि मध्यान्त होता है. क्रम इस प्रकार है. सूर्य एक राशि 1महीने में भोग करता है. प्रथम 5दिन फल देता है. चन्द्रमा एक राशि को सवा दो दिन भोगता है. अन्त की 3 घड़ी फल देता है. मंगल एक राशि को डेढ़ मास भोगता है. पहले आठ दिन फल देता है. बुध एक राशि को एक मास भोगता है, सो अन्त के चार दिन फल देता है. गुरु 1 राशि को तेरह मास भोगता है. यह बीच में चार मास फल देता होता है. शुक्र एक राशि को 1 मास भोगता है. मध्य के सात दिन फल देता है. शनि एक राशि को तीस मास भोगता है. अन्त के सात मास फल देता है. राहु व केतु एक राशि पर अठारह मास तथा मुंथा एक राशि पर एक मास रहती है. क्रम से अन्त के दो मास व दो दिन फलदायक होते हैं. ●

शनि साढ़ेसाती तथा ढैय्या

गतवर्षों से (2 नवम्बर, 2014 ई.) वृश्चिक राशि में संचरणशील शनि देव (वि. संवत् 2073 ई.) के मध्य ता. 26 जनवरी, 2017 ई. तक वृश्चिक राशि में ही संचार करेंगे. वृश्चिक राशि संचरणकाल में शनि देव 25 मार्च, 2016 ई. को वक्री होकर 13 अगस्त, 2016 ई. को मार्गी होंगे. तदुपरान्त 26 जनवरी 2017 ई. को रात्रि 7 बजकर 28 मिनट (19/28) पर पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र एवं धनु राशिस्थ चन्द्र कालीन शनिदेव मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेंगे. संवतान्त 28 मार्च, 2017 ई. तक धनु राशि में ही संचार करेंगे.

शनि के दुष्प्रभाव से बचने के उपाय

लोहवान युक्त बत्ती बनाकर कड़वे तेल के दीपक में डालकर संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे ज्योति जलायें. बन्दरों को प्रत्येक शनिवार, मंगलवार को चना-गुड़ खिलायें. भीगी हुई उड़द पक्षियों को डालें. काले तिल मिश्रित कड़वे तेल की मालिश करें. असहायों को भोजन देकर सेवा के साथ कम्बल, वस्त्रादि दान करें. 11 या 21 कच्चे नारियल संख्या के अनुसार सिर से (ऊपर से) घुमाकर बहते जल में छोड़ दें. ग्रह दोष शांत होकर मस्तिष्क हल्का होगा. उद्योग, व्यवसाय आदि में वृद्धि होगी. सुख समृद्धि तथा मांगलिक कार्य एवं विजय योग बनेगा. चाहे तो शनि के यह दस नामों का जप करें तो और भी शुभ दायक रहेगा. जो इस प्रकार है:

कोणस्थ पिंगलो बभ्रु; कृष्णो रोदन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥
एतानि दश नामानि प्रार्तरूत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चर कृतापीड़ा न कदाचित् भविष्यति॥

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. सं. 2073)

मंगल (2016-17 ई.)			
पूरा संवत् उदय रहेगा.			
बुध (2016 ई.)			
05	अप्रैल	पश्चिमोदय	19.53
01	मई	वक्री पश्चिमास्त	12.17
17	मई	वक्री पूर्वोदय	22.19
25	जून	पूर्व में अस्त	28.19
18	जुलाई	पश्चिमोदय	29.13
06	सितम्बर	वक्री पश्चिमास्त	21.24
19	सितम्बर	वक्री पूर्वोदय	25.28
09	अक्टूबर	पूर्वास्त	17.36
19	नवम्बर	पश्चिमोदय	20.57
23	दिसम्बर	वक्री पश्चिमास्त	08.04
बुध (2017 ई.)			
03	जनवरी	वक्री पश्चिमास्त	10.59
18	फरवरी	पूर्व में अस्त	05.55
20	मार्च	पश्चिमोदय	22.56
गुरू (2016 ई.)			
09	सितम्बर	पश्चिमास्त	20.08
07	अक्टूबर	पूर्वोदय	22.37
शुक्र (2016 ई.)			
28	अप्रैल	पूर्वास्त	27.50
09	जुलाई	पश्चिमोदय	05.40
21	मार्च,17	वक्री पश्चिमास्त	22.54
शनि (2016 ई.)			
23	नवम्बर	पश्चिमास्त	23.50
27	दिसम्बर	पूर्वोदय	09.13

अनबुझे मुहूर्त

वसंत पंचमी	देवशयनी एकादशी	फुलेराबीज	विजयादशमी	रामनवमी
धनतेरस	अक्षय तृतीया	दीपावली	जन्माष्टमी	देवउठनी एकादशी

इन मुहूर्तों में कोई भी शुभ कार्य करने के लिए पंचांग शुद्धि को देखने की आवश्यकता नहीं रहती.
शुभवारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार

1 से 15 अप्रैल 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
चैत्र कृष्ण (बदी) अष्टमी से चैत्र शुक्ल (सुदी) नवमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	शुक्र	अष्टमी 08:53	पूर्वाषाढ़ा 14:18	परिघ 12:03	कौलव 06:25	06:36	18:49	मकर 20:24	शीतलाष्टमी व्रत, मूर्ख दिवस बैंक वार्षिक बंदी
02	शनि	नवमी 08:35	उत्तराषाढ़ा 14:25	शिव 10:37	गर 05.38	06:35	18:49	मकर	
03	रवि	दशमी एकादशी 07:27 29:39	श्रवण 13:49	सिद्ध साध्य 08:34 29:54	विष्टि 02:55	06:34	18:50	कुंभ 25:14	पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
04	सोम	द्वादशी 27:06	धनीष्ठा 12:30	शुभ 26:45	कौलव 25:13	06:34	18:50	कुंभ	पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
05	मंगल	त्र्योदशी 24:05	शतभिषा 10:35	शुक्ल 23:06	गर 18:19	06:33	18:50	मीन 26:47	भौम प्रदोष व्रत
06	बुध	चतुर्दशी 20:38	पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा 08:09 29:19	ब्रह्म 19:07	विष्टि 10:16	06:32	18:50	मीन	मास शिवरात्रि
07	गुरु	अमावस्या 16:53	रेवती 26:22	ऐन्द्र 14:56	चर 01:21	06:31	18:50	मेष 26:21	चैत्र अमावस्या
08	शुक्र	शुक्ल प्रतिपदा 13:05	अश्विन 23:22	वैधृति 10:45	बव 17:10	06:30	18:49	मेष	चैत्र नवरात्र शुरु, घटस्थापना तैलाभ्यङ्ग, ध्वजारोहण
09	शनि	द्वितीया तृतीया 09:24 29:55	भरणी 20:33	विष्कुंभ प्रीति 06:28 26:25	कौलव 08:00	06:31	18:49	वृष 25:54	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयंती
10	रवि	चतुर्थी 26:55	कृत्तिका 18:07	आयुष्मान् 22:46	वणिज 25:38	06:30	18:51	वृष	दमनक चतुर्थी
11	सोम	पंचमी 24:26	रोहिणी 16:13	सौभाग्य 19:30	बव 18:51	06:29	18:50	मिथुन 53:18	श्री लक्ष्मी पंचमी, नाग पंचमी
12	मंगल	षष्ठी 22:40	मृगशिरा 14:55	शोभन 16:50	कौलव 13:37	06:29	18:50	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत
13	बुध	सप्तमी 21:42	आर्द्रा 14:21	अतिगण्ड 14:44	गर 10:12	06:26	18:52	मिथुन	वैशाख संक्रान्ति अर्द्धकुम्भी पर्व-मुख्य स्नान (हरिद्वार)
14	गुरु	अष्टमी 21:30	पुनर्वसु 14:35	सुकर्मा 13:18	विष्टि 08:44	06:27	18:52	कर्क 08:29	श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी डॉ. आंबेडकर जयंती, अन्नपूर्णा पूजन
15	शुक्र	नवमी 22:04	पुष्य 15:36	धृति 12:28	बालव 09:14	06:25	18:51	कर्क	श्री रामनवमी, नवरात्र समाप्त

16 से 30 अप्रैल 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
चैत्र शुक्ल (सुदी) दशमी से वैशाख कृष्ण (बदी) अष्टमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	शनि	दशमी 23:19	आश्लेषा 17:18	शूल 12:11	तैतिल 11:32	06:25	18:51	सिंह 17:16	नवरात्र-पारणा
17	रवि	एकादशी 25:08	मघा 19:32	गण्ड 12:22	वणिज 15:26	06:24	18:53	सिंह	कामदा एकादशी व्रत, दोलोत्सव
18	सोम	द्वादशी 27:18	पूर्वाफाल्गुनी 22:12	वृद्धि 12:58	बव 20:28	06:23	18:53	कर्क 28:57	श्री विष्णु दमनोत्सव
19	मंगल	त्रयोदशी 29:46	उत्तराफाल्गुनी 25:09	ध्रुव 13:47	कौलव 26:22	06:21	18:52	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, महावीर जयंती(जैन) अनङ्ग त्रयोदशी व्रत
20	बुध	चतुर्दशी	हस्त 28:15	व्याघात 14:44	गर 32:44	06:21	18:52	कन्या	श्री शिव-दमनोत्सव
21	गुरु	चतुर्दशी 08:20	चित्रा	हर्षण 15:46	वणिज 05:57	06:20	18:54	तुला 17:46	श्री सत्यनारायण व्रत
22	शुक्र	पूर्णिमा 10:55	चित्रा 07:18	वज्र 16:45	बव 12:22	06:21	18:53	तुला	चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि) श्री हनुमान जयंती
23	शनि	कृष्ण प्रतिपदा 13:21	स्वाति 10:17	सिद्ध 17:39	कौलव 18:29	06:19	18:55	तुला	हर क्षेत्र में कामयाबी के लिए अतिविशिष्ट लचीलेपन की आवश्यकता होती है.
24	रवि	द्वितीया 15:34	विशाखा 13:07	व्यतिपात 18:25	गर 24:10	06:19	18:55	वृश्चिक 06:24	
25	सोम	तृतीया 17:33	अनुराधा 15:39	वरीयान 18:55	विष्टि 19:12	06:18	18:55	वृश्चिक	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
26	मंगल	चतुर्थी 19:12	ज्येष्ठा 17:55	परिघ 19:13	बव 01:16	06:18	18:56	धनु 17:55	सती अनुसूया जयंती
27	बुध	पंचमी 20:25	मूल 19:44	शिव 19:08	कौलव 04:52	06:17	18:55	धनु	जब हम दूसरों को कमजोरियों के लेंस देखते हैं, तो हम उनकी शक्तियों को अप्रासंगिक और उनकी कमजोरियों को ज्यादा स्पष्ट बना देते हैं.
28	गुरु	षष्ठी 21:06	पूर्वाषाढ़ा 21:02	सिद्ध 18:40	गर 07:16	06:15	18:55	मकर 27:16	
29	शुक्र	सप्तमी 21:09	उत्तराषाढ़ा 21:48	साध्य 17:46	विष्टि 08:15	06:15	18:55	मकर	
30	शनि	अष्टमी 20:36	श्रवण 21:55	शुभ 16:21	बालव 07:39	06:14	18:57	मकर	

1 से 15 मई 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
वैशाख कृष्णा (बदी) नवमी से वैशाख शुक्ल (सुदी) नवमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	रवि	नवमी 19:22	धनिष्ठा 21:21	शुक्ल 14:25	तैतिल 05:30	06:16	18:55	कुंभ 09:44	पंचक प्रारंभ
02	सोम	दशमी 17:30	शतभिषा 20:09	ब्रह्म 11:54	वणिज 01:38	06:13	18:55	कुंभ	
03	मंगल	एकादशी 07:59	पूर्वाभाद्रपद 18:20	ऐन्द्र वैधृति 08:54 29:26	बालव 22:59	06:14	18:56	मीन 12:51	वरूथिनी एकादशी व्रत श्री वल्लभाचार्य जयंती
04	बुध	द्वादशी 11:57	उत्तराभाद्रपद 16:02	विष्क 25:35	तैतिल 15:29	06:13	18:58	मीन	प्रदोष व्रत
05	गुरु	त्रयोदशी चतुर्दशी 08:28 28:46	रेवती 13:17	प्रीति 21:30	वणिज 06:52	06:13	18:58	मेष 13:17	पंचक समाप्त, मास शिवरात्रि
06	शुक्र	अमावस्या 25:00	अश्विनी 10:22	आयुष्मान् 17:15	चर 22:55	06:13	18:59	मेष	वैशाख अमावस्या(स्नानदानादि)
07	शनि	शुक्ल प्रतिपदा 21:16	भरणी कृत्तिका 07:24 28:35	सौभाग्य 13:05	किंस्तुघ्न 13:35	06:13	18:59	वृष 12:40	श्री रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती
08	रवि	द्वितीया 17:50	रोहिणी 26:06	शोभन अतिगण्ड 09:01 29:19	बालव 04:41	06:11	18:59	वृष	भगवान श्री परशुराम जयंती चन्द्रदर्शन
09	सोम	तृतीया 14:52	मृगशिरा 24:08	सुकर्मा 26:03	गर 22:59	06:11	19:00	मिथुन 13:04	केदार-बदरी यात्रा प्रारंभ अक्षय तृतीया, मातंगी जयंती
10	मंगल	चतुर्थी 12:30	आर्द्रा 22:52	धृति 23:19	विष्टि 17:06	06:10	19:00	मिथुन	
11	बुध	पंचमी 10:52	पुनर्वसु 22:22	शूल 21:15	बालव 13:06	06:09	19:00	कर्क 16:25	आद्यगुरु श्री शंकराचार्य जयंती
12	गुरु	षष्टी 10:05	पुष्य 22:44	गण्ड 19:54	तैतिल 11:09	06:09	09:00	कर्क	श्री रामानुजाचार्य जयंती श्री गङ्गा जयंती
13	शुक्र	सप्तमी 10:10	आश्लेषा 23:55	वृद्धि 19:12	वणिज 11:24	06:10	19:00	सिंह 23:55	
14	शनि	अष्टमी 11:06	मघा 25:52	ध्रुव 19:07	बव 13:39	06:10	19:01	सिंह	ज्येष्ठ संक्रान्ति, जानकी (सिता) नवमी श्री दूर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
15	रवि	नवमी 12:41	पूर्वाफाल्गुन 28:25	व्याघात 19:33	कौलव 17:44	06:08	19:01	सिंह	

16 से 31 मई 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
वैशाख शुक्ल (सुदी) दशमी से ज्येष्ठ कृष्ण (बदी) दशमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	सोम	दशमी 14:49	उत्तराफाल्गुनी	हर्षण 20:21	गर 23:06	06:08	19:03	कन्या 11:05	
17	मंगल	एकादशी 17:17	उत्तराफाल्गुनी 07:20	वज्र 21:21	विष्टि 29:19	06:08	19:03	कन्या	मोहिनी एकादशी व्रत
18	बुध	द्वादशी 19:53	हस्त 10:26	सिद्धि 22:27	बव 02:30	06:07	19:03	तुला 23:58	
19	गुरु	त्रयोदशी 22:22	चित्रा 13:30	व्यतिपात 23:29	कौलव 08:54	06:07	19:04	तुला	प्रदोष व्रत
20	शुक्र	चतुर्दशी 24:42	स्वाति 16:29	वरीयान् 24:19	गर 14:59	06:07	19:05	तुला	श्री नृसिंह जयंती
21	शनि	पूर्णिमा 26:43	विशाखा 19:09	परिघ 25:00	विष्टि 20:25	06:06	19:04	वृश्चिक 12:30	वैशाख पूर्णिमा, श्री बुद्ध जयंती कुंभ महापर्व
22	रवि	कृष्ण प्रतिपदा 28:28	अनुराधा 21:33	शिव 25:25	बालव 25:08	06:06	19:05	वृश्चिक	
23	सोम	द्वितीया	ज्येष्ठा 23:36	सिद्ध 25:31	तैतिल 28:52	06:06	19:05	धनु 23:36	श्री नारद जयंती, वीणादान
24	मंगल	द्वितीया 05:49	मूल 25:20	साध्य 25:21	गर 00:44	06:05	19:05	धनु	
25	बुध	तृतीया 06:45	पूर्वाषाढ़ा 26:39	शुभ 24:54	विष्टि 03:09	06:05	19:06	धनु	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
26	गुरु	चतुर्थी 07:19	उत्तराषाढ़ा 27:31	शुक्ल 24:06	बालव 04:34	06:05	19:06	मकर 08:55	
27	शुक्र	पंचमी 07:29	श्रवण 27:58	ब्रह्म 22:59	तैतिल 04:54	06:05	19:06	मकर	
28	शनि	षष्ठी 07:10	धनिष्ठा 27:55	ऐन्द्र 21:25	वणिज 04:07	06:05	19:07	कुंभ 16:01	पंचक प्रारंभ
29	रवि	सप्तमी अष्टमी 06:20	शतभिषा 27:21	वैधृति 19:29	बव 02:04	06:05	19:07	कुंभ	
30	सोम	नवमी 27:05	पूर्वाभाद्रपद 26:16	विष्क 17:04	तैतिल 26:18	06:04	19:08	मीन 20:35	
31	मंगल	दशमी 24:39	उत्तराभाद्रपद 24:40	प्रीति 14:14	वणिज 20:59	06:04	19:08	मीन	

बिना कुछ दिए नया दर्शन या जीवनशैली नहीं मिलती. इसके लिए धैर्य तथा कोशिश की कीमत चुकानी पड़ती है.

अहम् नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से जोखिम महसूस करता है और इस तरह का संदेश देने वालों को सजा देता हैं

1 से 15 जून 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
ज्येष्ठ कृष्णा (वदी) एकादशी से ज्येष्ठ शुक्ल (सुदी) दशमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	बुध	एकादशी 21:49	रेवती 22:40	आयुष्मान 11:04	बव 14:25	06:04	19:09	मेष 22:40	पंचक समाप्त, अपरा एकादशी व्रत भद्रकाली एकादशी
02	गुरु	द्वादशी 21:48	अश्विनी 20:15	सौभाग्य शोभन 07:30 27:45	कौलव 06:56	06:04	19:10	मेष	प्रदोष व्रत
03	शुक्र	त्रयोदशी 15:16	भरणी 17:41	अतिगण्ड 23:50	वणिज 24:32	06:04	19:10	वृष 23:03	मासशिवरात्रि व्रत
04	शनि	चतुर्दशी 11:49	कृत्तिका 15:06	सुकर्मा 19:56	शकुनि 15:54	06:04	19:10	वृष	शनैश्वर जयन्ती, अमावस (पितृकार्येषु)
05	रवि	अमावस्या कृ. प्रतिपदा 08:29 29:25	रोहिणी 12:35	धृति 16:14	नाग 07:34	06:04	19:10	मिथुन 23:29	ज्येष्ठ अमावस, श्री गङ्गा स्नान प्रारंभ करवीर व्रत
06	सोम	द्वितीया 26:49	मृगशिरा 10:25	शूल 12:45	बालव 26:39	06:04	19:10	मिथुन	चन्द्रदर्शन
07	मंगल	तृतीया 24:49	आर्द्रा 08:45	गंडमूल 09:45	तैतिल 20:56	06:04	19:11	कर्क 25:57	रम्भा तृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयंती रमज़ान मास प्रारंभ
08	बुध	चतुर्थी 23:35	पुनर्वसु 07:44	वृद्धि ध्रुव 07:14 29:24	वणिज 16:55	06:04	19:11	कर्क	लोगों को प्रोत्साहित करने की आदत को विकसित करना बहुत महत्त्वपूर्ण है.
09	गुरु	पंचमी 23:09	पुष्य 07:29	व्याघात 28:11	बव 14:50	06:04	19:11	कर्क	
10	शुक्र	षष्टी 23:35	आश्लेषा 08:04	हर्षण 27:40	कौलव 14:55	06:04	19:12	सिंह 08:06	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी
11	शनि	सप्तमी 24:49	मघा 09:30	वज्र 27:44	गर 16:54	06:04	19:12	सिंह	
12	रवि	अष्टमी 26:39	पूर्वाफाल्गुनी 11:35	सिद्धि 28:18	विष्टि 20:44	06:04	19:12	कन्या 18:39	श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती
13	सोम	नवमी 28:58	उत्तराफाल्गुनी 14:15	व्यतिपात 29:11	बालव 25:55	06:05	19:12	कन्या	उमा ब्राह्मणी व्रत
14	मंगल	दशमी	हस्त 17:16	वरीयान्	तैतिल 31:54	06:05	19:13	कन्या	गंगा-दशहरा पर्व (हरिद्वार) आषाढ़ संक्राति
15	बुध	दशमी 07:26	चित्रा 20:19	वरीयान् 06:14	गर 04:59	06:05	19:13	तुला 06:49	

16 से 30 जून 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
ज्येष्ठ शुक्ल (सुदी) एकादशी से आषाढ़ कृष्ण (बदी) दशमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	गुरु	एकादशी 09:54	स्वाति 23:16	परिघ 07:15	विष्टि 11:09	06:05	19:13	तुला	निर्जला एकादशी व्रत
17	शुक्र	द्वादशी 12:09	विशाखा 25:58	शिव 08:08	बालव 16:44	06:05	19:14	वृश्चिक 19:18	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ चम्पक द्वादशी
18	शनि	त्रयोदशी 14:04	अनुराधा 28:15	सिद्ध 08:44	तैतिल 21:29	06:05	19:14	वृश्चिक	
19	रवि	चतुर्दशी 15:30	ज्येष्ठा	साध्य 09:04	वणिज 25:09	06:05	19:14	वृश्चिक	वटसावित्री व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत
20	सोम	पूर्णिमा 16:32	ज्येष्ठा 06:06	शुभ 09:00	बव 27:39	06:06	19:14	धनु 06:06	ज्येष्ठ पूर्णिमा, संत कबीर जयंती
21	मंगल	कृष्ण प्रतिपदा 17:06	मूल 07:30	शुक्ल 08:35	कौलव 29:09	06:06	19:15	धनु	
22	बुध	द्वितीया 17:17	पूर्वाषाढ़ा 08:30	ब्रह्म 07:53	गर 29:36	06:06	19:15	मकर 14:44	
23	गुरु	तृतीया 17:04	उत्तराषाढ़ा 09:10	ऐन्द्र 06:49	विष्टि 28:59	06:06	19:15	मकर	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24	शुक्र	चतुर्थी 16:30	श्रवण 09:24	वैधृति विष्कुंभ 05:29 27:55	बालव 29:36	06:06	19:15	कुंभ 21:25	पंचक प्रारंभ
25	शनि	पंचमी 15:36	धनीष्ठा 09:22	प्रीति 26:02	तैतिल 25:19	06:07	19:15	कुंभ	
26	रवि	षष्ठी 14:22	शतभिषा 08:57	आयुष्मान 23:50	वणिज 22:09	06:07	19:16	मीन 26:25	
27	सोम	सप्तमी 12:45	पूर्वाभाद्रपद 08:09	सौभाग्य 21:25	बव 18:09	06:07	19:16	मीन	
28	मंगल	अष्टमी 10:49	उत्तराभाद्रपद 07:05	शोभन 18:39	कौलव 13:14	06:07	19:16	मीन	
29	बुध	नवमी 08:33	रेवती अश्विनी 05:39 27:55	अतिगण्ड 15:43	गर 07:34	06:09	19:15	मेष 05:37	पंचक समाप्त
30	गुरु	दशमी एकादशी 06:00 27:15	भरणी 25:59	सुकर्मा 12:29	विष्टि 01:14	06:09	19:15	मेष	योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)

सभी सफल लोगों में अनुशासन का गुण होता है.

यह एक गलत अवधारणा है कि व्यक्ति की योग्यता ही उसकी प्रतिभा है. दरअसल योग्यताएँ प्रतिभाएं नहीं होती.

1 से 15 जुलाई 2015, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
आषाढ़ कृष्णा (बदी) द्वादशी से आषाढ़ शुक्ल (सुदी) एकादशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	शुक्र	द्वादशी 24:22	कृत्तिका 23:57	धृति 09:09	कौलव 09:30	06:08	19:17	वृष 07:29	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
02	शनि	त्रयोदशी 21:35	रोहिणी 21:58	शूल गंड 05:46 20:27	गर 13:39	06:08	19:17	वृष	शनि प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत
03	रवि	चतुर्दशी 18:54	मृगशिरा 20:07	वृद्धि 23:15	विष्टि 06:43	06:09	19:16	मिथुन 08:58	आषाढ़ी व सोमवती अमावस्या
04	सोम	अमावस्या 24:44	आर्द्रा 18:34	ध्रुव 20:20	चतुष्पाद 00:25	06:09	19:16	मिथुन	गुप्त नवरात्र प्रारंभ
05	मंगल	शुक्ल प्रतिपदा 14:35	पुनर्वसु 17:29	व्याघात 17:49	बव 22:37	06:11	19:15	कर्क 11:42	रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी), चन्द्रदर्शन
06	बुध	द्वितीया 13:15	पुष्य 17:00	हर्षण 15:47	कौलव 19:19	06:11	19:15	कर्क	कोई दूसरी चीज इतनी तेजी से विश्वास को नष्ट नहीं करती, जितना कि वादा करके उसे तोड़ना.
07	गुरु	तृतीया 12:37	आश्लेषा 17:13	वज्र 14:17	गर 17:39	06:11	19:15	सिंह 17:13	
08	शुक्र	चतुर्थी 14:55	मघा 18:09	सिद्धि 13:25	विष्टि 17:59	06:12	19:16	सिंह	
09	शनि	पंचमी 13:38	पूर्वाफाल्गुनी 19:50	व्यतिपात 13:09	बालव 20:06	06:12	19:16	कन्या 26:21	स्कन्द षष्ठी
10	रवि	षष्टी 15:10	उत्तराफाल्गुनी 22:10	वरीयान 13:24	तैतिल 23:54	06:12	19:16	कन्या	उन्नति चाहते हैं तो बदलने के लिए तैयार रहें.
11	सोम	सप्तमी 17:12	हस्त 24:59	परिघ 14:05	वणिज 28:59	06:12	19:15	कन्या	
12	मंगल	अष्टमी 19:33	चित्रा 27:55	शिव 15:00	विष्टि 01:59	06:13	19:15	तुला 14:25	श्रीदूर्गाष्टमी
13	बुध	नवमी 21:59	स्वाति	सिद्ध 16:00	बालव 07:58	06:13	19:15	तुला	गुप्त नवरात्रि समाप्त
14	गुरु	दशमी 24:14	स्वाति 06:53	साध्य 16:54	तैतिल 13:48	06:13	19:15	वृश्चिक 26:58	
15	शुक्र	एकादशी 26:09	विशाखा 09:35	शुभ 17:34	वणिज 18:55	06:13	19:15	वृश्चिक	देवशयनी एकादशी व्रत

16 से 31 जुलाई 2015, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
आषाढ़ शुक्ल (सुदी) द्वादशी से श्रावण कृष्ण (बदी) त्रयोदशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	शनि	द्वादशी 27:33	अनुराधा 11:55	शुक्ल 17:50	बव 22:59	06:13	19:15	वृश्चिक	श्रावण संक्रांति
17	रवि	त्रयोदशी 28:24	ज्येष्ठा 13:45	ब्रह्म 17:44	कौलव 25:49	06:13	19:15	धनु 13:45	प्रदोष व्रत
18	सोम	चतुर्दशी 28:39	मूल 15:04	ऐन्द्र 17:13	गर 27:09	06:14	19:16	धनु	अंबीका व्रत
19	मंगल	पूर्णिमा 28:26	पूर्वाषाढ़ा 15:47	वैधृति 16:15	विष्टि 27:05	06:14	19:16	मकर 21:55	आषाढ़ी व गुरु पूर्णिमा, कोकीला व्रत व्यास पूजा, श्रीसत्यनारायण व्रत
20	बुध	कृष्ण प्रतिपदा 27:44	उत्तराषाढ़ा 16:05	विष्कुंभ 14:53	बालव 25:55	06:16	19:15	मकर	
21	गुरु	द्वितीया 26:40	श्रवण 15:56	प्रीति 13:09	तैतिल 23:49	06:15	19:15	कुंभ 27:43	पंचक प्रारंभ
22	शुक्र	तृतीया 25:18	धनिष्ठा 15:26	आयुष्मान् 11:10	वणिज 20:44	06:15	19:15	कुंभ	
23	शनि	चतुर्थी 23:39	शतभिषा 14:39	सौभाग्य 08:54	बव 16:54	06:16	19:14	कुंभ	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24	रवि	पंचमी 21:46	पूर्वाभाद्रपद 13:38	शोभन अतिगण्ड 06:30 27:55	कौलव 12:30	06:16	19:14	मीन 07:54	नागपंचमी (राजस्थान व बंगाल)
25	सोम	षष्ठी 19:45	उत्तराभाद्रपद 12:27	सुकर्मा 25:12	गर 07:39	06:17	19:13	मीन	
26	मंगल	सप्तमी 17:35	रेवती 11:07	धृति 22:23	विष्टि 02:24	06:17	19:13	मेष 11:05	पंचक समाप्त
27	बुध	अष्टमी 15:21	अश्विनी 09:42	शूल 19:29	कौलव 24:04	06:17	19:13	मेष	देवशयनी एकादशी, चातुर्मास प्रारंभ
28	गुरु	नवमी 13:05	भरणी 08:12	गण्ड 16:34	गर 18:14	06:18	19:12	वृष 13:47	प्रेम किए जाने से विश्वास किया जाना ज्यादा बड़ी प्रशंसा है.
29	शुक्र	दशमी 10:46	कृत्तिका रोहिणी 06:40 29:15	वृद्धि 13:39	विष्टि 12:34	06:18	19:12	वृष	
30	शनि	एकादशी 08:35	मृगशिरा 27:55	ध्रुव 10:49	बालव 06:59	06:18	19:12	मिथुन 16:35	कामिका एकादशी व्रत
31	रवि	द्वादशी त्रयोदशी [illegible] 28:43	आर्द्रा 26:51	व्याघात हर्षण 08:07 29:37	तैतिल 01:49	06:19	19:11	मिथुन	प्रदोष व्रत

1 से 15 अगस्त 2015, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
श्रावण कृष्ण (बदी) चतुर्दशी से श्रावण शुक्ल (सुदी) द्वादशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	सोम	चतुर्दशी 27:16	पुनर्वसु 26:10	वज्र 27:24	विष्टि 25:27	06:19	19:11	कर्क 20:18	मासशिवरात्रि व्रत, तिलक पुण्य तिथि
02	मंगल	अमावस्या 26:14	पुष्य 25:53	सिद्धि 25:34	चतुष्पाद 22:22	06:19	19:10	कर्क	हरियाली (भौमवती) अमावस्या
03	बुध	शुक्ल प्रतिपदा 25:46	अश्लेषा 26:06	व्यतिपात 24:09	किंस्तुघ्न 20:29	06:20	19:10	सिंह 26:07	मेला छिन्नमस्तिका
04	गुरु	द्वादशी 25:56	मघा 26:57	वरीयान 23:11	बालव 20:05	06:20	19:09	सिंह	चन्द्रदर्शन
05	शुक्र	तृतीया 26:41	पूर्वाफाल्गुनी 28:27	परिघ 22:45	तैतिल 21:12	06:20	19:09	सिंह	मधुस्त्रवा, हरियाली, सिंधारा तीज
06	शनि	चतुर्थी 28:06	उत्तराफाल्गुनी	शिव 22:49	वणिज 23:53	06:20	19:08	कन्या 10:55	दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी
07	रवि	पंचमी	उत्तराफाल्गुनी 18:49	सिद्ध 23:15	बव 27:54	06:21	19:08	कन्या	नाग पंचमी
08	सोम	पंचमी 06:00	हस्त 09:02	साध्य 24:01	बालव 00:14	06:21	19:07	तुला 22:24	श्री कल्कि जयंती
09	मंगल	षष्ठी 08:15	चित्रा 11:54	शुभ 24:59	तैतिल 05:54	06:21	19:06	तुला	
10	बुध	सप्तमी 10:40	स्वाति 14:53	शुक्ल 25:56	वणिज 11:54	06:22	19:06	तुला	गोस्वामी तुलसीदास जयंती
11	गुरु	अष्टमी 12:59	विशाखा 17:45	ब्रह्म 26:41	बव 17:46	06:22	19:05	वृश्चिक 11:03	श्रीदुर्गाष्टमी
12	शुक्र	नवमी 15:03	अनुराधा 20:18	ऐन्द्र 27:12	कौलव 22:49	06:22	19:04	वृश्चिक	जल्दी से पता करें, आपको जाना कहाँ है?
13	शनि	दशमी 16:34	ज्येष्ठा 22:19	वैधृति 27:12	गर 26:39	06:22	19:04	धनु 22:20	
14	रवि	एकादशी 17:33	मूल 23:45	विष्कुंभ 26:46	विष्टि 28:59	06:23	19:03	धनु	पवित्रा एकादशी व्रत
15	सोम	द्वादशी 17:50	पूर्वाषाढ़ा 24:34	प्रीति 25:49	बालव 29:39	06:23	19:03	धनु	भारत स्वतंत्रता दिवस, सोम प्रदोष व्रत

16 से 31 अगस्त 2015, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
श्रावण शुक्ल (सुदी) त्रयोदशी से भाद्रपद कृष्ण (बदी) चतुर्दशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	मंगल	त्रयोदशी 17:25	उत्तराषाढ़ा 24:44	आयुष्मान् 24:18	तैतिल 28:39	06:23	19:02	मकर 06:40	भाद्रपद संक्राति
17	बुध	चतुर्दशी 16:26	श्रवण 24:08	सौभाग्य 22:22	वणिज 26:12	06:23	19:02	मकर	श्रीसत्यनारायण व्रत, ऋग्वेद उपाकर्म
18	गुरु	पूर्णिमा 14:56	धनिष्ठा 23:21	शोभन 19:59	बव 22:24	06:23	19:01	कुंभ 11:54	रक्षा बंधन, श्रावण पूर्णिमा, कोकिला-व्रत समाप्त, ऋषि तर्पण, गायत्री जयंती
19	शुक्र	कृष्ण प्रतिपदा 13:02	शतभिषा 22:05	अतिगण्ड 17:17	कौलव 17:34	06:24	19:00	कुंभ	
20	शनि	द्वितीया 10:46	पूर्वाभाद्रपद 20:29	सुकर्मा 14:21	गर 11:54	06:24	18:59	मीन 14:55	कज्जली तृतीया
21	रवि	तृतीया चतुर्थी 08:17 29:43	उत्तराभाद्रपद 18:47	धृति 11:15	विष्टि 05:44	06:25	18:59	मीन	श्रीगणेश बहुला चतुर्थी
22	सोम	पंचमी 27:10	रेवती 16:59	शूल गण्ड 08:05 28:54	कौलव 26:05	06:25	18:58	मेष 16:59	पंचक समाप्त, शरद् ऋतु प्रारंभ
23	मंगल	षष्ठी 24:40	अश्विनी 15:14	वृद्धि 25:47	गर 19:43	06:25	18:57	मेष	चन्दन षष्ठी व्रत
24	बुध	सप्तमी 22:18	भरणी 13:35	ध्रुव 22:46	विष्टि 13:35	06:25	18:56	वृष 19:10	शीतला सप्तमी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)
25	गुरु	अष्टमी 20:09	कृत्तिका 12:07	व्याघात 19:56	बालव 07:55	06:25	18:54	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव), गोकुलाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत, नन्दोत्सव
26	शुक्र	नवमी 18:13	रोहिणी 10:53	हर्ष 17:21	तैतिल 02:50	06:25	18:55	मिथुन 22:22	श्रीगुग्गा नवमी
27	शनि	दशमी 16:39	मृगशिरा 09:56	वज्र 14:56	विष्टि 26:24	06:27	18:54	मिथुन	
28	रवि	एकादशी 15:21	आर्द्रा 09:17	सिद्धी 12:50	बालव 23:14	06:26	18:53	कर्क 27:06	अजा एकादशी व्रत
29	सोम	द्वादशी 14:29	पुनर्वसु 09:02	व्यतिपात 11:04	तैतिल 21:04	06:27	18:51	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा), सोम प्रदोष व्रत
30	मंगल	त्रयोदशी 14:04	पुष्य 09:12	वरीयान् 09:36	वणिज 19:54	06:27	18:51	कर्क	मासशिवरात्रिव्रत, कैलाश यात्रा प्रारंभ अघोरा-डाकिनी चतुर्दशी
31	बुध	चतुर्दशी 14:05	अश्लेषा 09:50	परिघ 08:30	शकुनि 19:54	06:27	18:50	सिंह 09:50	

1 से 15 सितंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
भाद्रपद कृष्ण (वदी) अमावस्या से भाद्रपद शुक्ल (सुदी) चतुर्दशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	गुरु	अमावस्या 14:34	मघा 10:54	शिव 07:46	नाग 21:06	06:28	18:49	सिंह	भाद्रपद अमावस्या, लोहार्गल यात्रा कुशग्रहणी-पिठोरी अमावस्या
02	शुक्र	शुक्ल प्रतिपदा 15:34	पूर्वाफाल्गुणी 12:27	सिद्ध 07:25	बव 23:34	06:28	18:48	कन्या 18:53	
03	शनि	द्वितीया 17:02	उत्तराफाल्गुणी 14:28	साध्य 07:26	कौलव 27:14	06:28	18:47	कन्या	चन्द्रदर्शन
04	रवि	तृतीया 18:54	हस्त 16:55	शुभ 07:49	गर 31:54	06:28	18:46	कन्या	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया श्रीवराह जयंती
05	सोम	चतुर्थी 21:11	चित्रा 19:41	शुक्ल 08:28	वणिज 04:44	06:28	18:45	तुला 06:16	श्रीसिद्धिविनायक व्रत, कलंक चतुर्थी
06	मंगल	पंचमी 23:35	स्वाति 22:39	ब्रह्म 09:20	बव 10:34	06:28	18:45	तुला	ऋषि पंवमी पर्व सम्वत्सरी महापर्व (जैन)
07	बुध	षष्ठी 26:04	विशाखा 25:39	ऐन्द्र 10:19	कौलव 16:39	06:29	18:44	वृश्चिक 18:52	सूर्य षष्ठी व्रत
08	गुरु	सप्तमी 28:07	अनुराधा 28:27	वैधृति 11:13	गर 22:29	06:29	18:43	वृश्चिक	मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत
09	शुक्र	अष्टमी 30:12	ज्येष्ठा	विष्कुंभ 11:54	विष्टि 27:40	06:29	18:42	वृश्चिक	श्री राधाष्टमी, श्री दधीची जयंती श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ
10	शनि	नवमी	ज्येष्ठा 06:51	प्रीति 12:16	बालव 31:35	06:29	18:41	धनु 06:51	श्रीचंद्र नवमी
11	रवि	नवमी 07:28	मूल 08:45	आयुष्यमान 12:09	कौलव 03:09	06:29	18:41	धनु	
12	सोम	दशमी 08:07	पूर्वाषाढ़ा 09:57	सौभाग्य 11:30	गर 04:39	06:29	18:40	मकर 16:08	पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयंती श्रवण द्वादशी
13	मंगल	एकादशी 07:58	उत्तराषाढ़ा 19:39	शोभन 10:15	विष्टि 04:17	06:29	18:40	मकर	पंचक प्रारंभ, प्रदोष व्रत
14	बुध	द्वादशी 07:04 त्रयोदशी 29:26	श्रवण 10:09	अतिगण्ड 08:26 सुकर्मा 30:02	बालव 01:59	06:29	18:39	कुंभ 21:45	
15	गुरु	चतुर्दशी 27:15	धनिष्ठा 09:09	धृति 27:08	विष्टि 19:12	06:29	18:36	कुंभ	अनन्त चतुर्दशी व्रत, कदली व्रत

16 से 30 सितंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
भाद्रपद शुक्ल (सुदी) पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण (बुदी) अमावस्या

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्राशि (अंत)	विवरण
16	शुक्र	पूर्णिमा 24:36	शतभिषा पूर्वाभाद्रपद 07:39 29:40	शूल 23:49	विष्टि 19:12	06:30	18:37	मीन 24:12	भाद्रपद पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध, आश्विन संक्राति
17	शनि	कृष्ण प्रतिपदा 21:33	उत्तराभाद्रपद 27:21	गंड 20:15	बालव 12:02	06:30	18:36	मीन	महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन
18	रवि	द्वितीया 21:35	रेवती 24:56	वृद्धि 16:30	तैतिल 04:14	06:30	18:35	मेष 24:56	पंचक समाप्त, द्वितीया का श्राद्ध
19	सोम	तृतीया 15:08	अश्विनी 22:30	ध्रुव 12:45	विष्टि 22:04	06:30	18:35	मेष	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध
20	मंगल	चतुर्थी 11:59	भरणी 20:10	व्याघात हर्षन 09:01 29:29	बालव 14:09	06:30	18:34	वृष 25:40	भरणी श्राद्ध, पंचमी का श्राद्ध
21	बुध	पंचमी 09:03	कृत्तिका 18:09	वज्र 26:12	तैतिल 06:47	06:31	18:33	वृष	चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध
22	गुरू	षष्ठी सप्तमी 06:27 28:20	रोहिणी 16:33	सिद्धि 23:16	वणिज 00:24	06:31	18:32	मिथुन 27:54	सप्तमी का श्राद्ध
23	शुक्र	अष्टमी 26:40	मृगशिरा 15:21	व्यतिपात 20:41	बालव 22:56	06:31	18:31	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध
24	शनि	नवमी 25:37	आर्द्रा 14:44	वरीयान् 18:35	तैतिल 19:30	06:31	18:29	मिथुन	सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध मातृ-नवमी
25	रवि	दशमी 25:04	पुनर्वसु 14:38	परिघ 16:55	वणिज 17:28	06:32	18:29	कर्क 08:35	दशमी का श्राद्ध
26	सोम	एकादशी 25:04	पुष्य 15:05	शिव 15:40	बव 16:45	06:32	18:28	कर्क	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी व्रत
27	मंगल	द्वादशी 25:33	आश्लेषा 15:59	सिद्ध 14:53	कौलव 17:23	06:32	18:27	सिंह 15:59	सन्यासी श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध
28	बुध	त्रयोदशी 26:33	मघा 17:26	साध्य 14:25	गर 19:13	06:32	18:26	सिंह	प्रदोष व्रत, मघा श्राद्ध त्रयोदशी का श्राद्ध
29	गुरू	चतुर्दशी 27:55	पूर्वाफाल्गुनी 19:16	शुभ 14:18	विष्टि 22:08	06:32	18:25	कन्या 25:45	शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध मासशिवरात्रि व्रत
30	शुक्र	अमावस्या 29:41	उत्तराफाल्गुनी 21:28	शुक्ल 14:29	चतुष्पाद 26:04	06:32	18:24	कन्या	सर्वपितृ व चतुर्दशी/अमावस तिथी का श्राद्ध आश्विन (महालय) अमावस्या, श्राद्ध समाप्त, पितृ विसर्जन

1 से 15 अक्टूबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
आश्विन शुक्ल (सुदी) प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल (सुदी) चतुर्दशी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	शनि	शुक्ल प्रतिपदा	हस्त 23:59	ब्रह्म 14:55	बव 08:15	06:33	18:24	कन्या	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापना महाराजा अग्रसेन जयंती, दूर्गा पूजा मातामह (नाना) का श्राद्ध
02	रवि	प्रतिपदा 07:45	चित्रा 26:45	ऐन्द्र 15:33	तैतिल 16:45	06:33	18:23	तुला 13:20	महात्मा गांधी जयंती, चन्द्रदर्शन
03	सोम	द्वितीया 10:06	स्वाती 29:40	वैधृति 16:25	वणिज 15:18	06:33	18:22	तुला	मुहर्रम (हिजरी सन 1438 प्रारंभ)
04	मंगल	तृतीया 12:35	विशाखा	विष्कुंभ 17:20	बव 14:38	06:33	18:20	वृश्चिक 25:56	पता करें, आखिर आप चाहते क्या हैं?
05	बुध	चतुर्थी 15:07	विशाखा 08:44	प्रीति 18:15	कौलव 14:45	06:33	18:20	वृश्चिक	
06	गुरू	पंचमी 17:33	अनुराधा 11:40	आयुष्यमान् 19:08	गर 15:37	06:34	18:20	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत
07	शुक्र	षष्ठी 19:41	ज्येष्ठा 14:25	सौभाग्य 19:45	विष्टि 17:09	06:34	18:20	धनु 14:27	सरस्वती आवाहन
08	शनि	सप्तमी 21:24	मूल 16:46	शोभन 20:05	बालव 19:13	06:34	18:17	धनु	
09	रवि	अष्टमी 22:32	पूर्वाषाढ़ा 18:33	अतिगण्ड 19:55	कौलव 08:23	06:34	18:17	मकर 24:54	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती पूजन
10	सोम	नवमी 22:53	उत्तराषाढ़ा 19:39	सुकन्या 19:10	गर 10:57	06:35	18:15	मकर	नवरात्र समाप्त, महानवमी सरस्वती बलिदान
11	मंगल	दशमी 22:29	श्रवण 19:59	धृति 17:52	विष्टि 13:37	06:35	18:16	मकर	विजयादशमी (दशरहा), नवरात्र पारणा सरस्वती विसर्जन, आयुध पूजा शमी पूजा, अपराजिता पूजन
12	बुध	एकादशी 21:14	धनिष्ठा 19:33	शूल 15:52	चतुष्पाद 16:17	06:35	18:15	कुंभ 07:53	पंचक प्रारंभ, पापांकुशा एकादशी व्रत भरतमिलाप
13	गुरू	द्वादशी 19:14	शतभिषा 18:18	गंड 13:16	किंस्तुघ्न 18:50	06:35	18:15	कुंभ	प्रदोष व्रत, पद्मनाभ द्वादशी गुरु हस्त
14	शुक्र	त्रयोदशी 16:25	पूर्वाभाद्रपद 16:27	वृद्धि ध्रुव 10:08 30:30	बव 08:01	06:36	18:12	मीन 10:56	
15	शनि	चतुर्दशी 13:25	उत्तराभाद्रपद 14:02	व्याघात 26:29	कौलव 10:11	06:36	18:12	मीन	शरद् पूर्णिमा व्रत, कोजागर व्रत श्रीसत्यनारायण व्रत

16 से 31 अक्टूबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
आश्विन शुक्ल (सुदी) पूर्णिमा से कार्तिक शुक्ल (सुदी) प्रतिपदा

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	रवि	पूर्णिमा कृ. प्रतिपदा 10:08 30:30	रेवती 11:15	हर्ष 22:19	बव 08:14	06:36	18:12	मेष 11:15	आश्विन पूर्णिमा, कार्तिक संक्रांति पंचक समाप्त, महर्षि वाल्मीकि जयंती
17	सोम	द्वितीया 26:25	अश्विनी भरणी 08:15 29:20	वज्र 18:03	तैतिल 24:14	06:37	18:11	मेष	पुण्य कार्तिक संक्रांति
18	मंगल	तृतीया 22:49	कृत्तिका 26:31	सिद्धि 13:49	वणिज 14:59	06:37	18:10	वृष 10:35	
19	बुध	चतुर्थी 19:34	रोहिणी 24:09	व्यतिपात वरीयान् 09:52 30:14	बव 16:21	06:37	18:09	वृष	करवा चौथ (करक चतुर्थी) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी
20	गुरू	पंचमी 16:46	मृगशिरा 22:16	परिघ 27:01	तैतिल 25:24	06:38	18:08	मिथुन 11:08	
21	शुक्र	षष्ठी 14:39	आर्द्रा 21:01	शिव 24:24	वणिज 19:59	06:38	18:07	मिथुन	स्कन्द षष्ठी
22	शनि	सप्तमी 13:10	पुनर्वसु 20:28	सिद्ध 22:20	बव 16:19	06:38	18:07	कर्क 14:30	अहोई अष्टमी व्रत, दम्पत्य अष्टमी हेमन्त ऋतु प्रारंभ
23	रवि	अष्टमी 12:30	पुष्य 20:40	साध्य 20:52	कौलव 14:34	06:39	18:06	कर्क	राधाष्टमी, कालाष्टमी
24	सोम	नवमी 12:30	अश्लेषा 21:33	शुभ 19:55	गर 14:34	06:39	18:06	सिंह 21:33	हर समस्या की एक ही दवा है, मुस्कराते रहें.
25	मंगल	दशमी 13:12	मघा 23:04	शुक्ल 19:30	विष्टि 16:19	06:39	18:05	सिंह	
26	बुध	एकादशी 14:30	पूर्वाफाल्गुनी 25:05	ब्रह्म 19:30	बालव 19:34	06:40	18:05	सिंह	रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी
27	गुरू	द्वादशी 16:15	उत्तराफाल्गुनी 27:30	ऐन्द्र 19:50	तैतिल 23:54	06:40	18:04	कन्या 07:37	धन त्रयोदशी पर्व प्रारंभ
28	शुक्र	त्रयोदशी 18:20	हस्त 30:12	वैधृति 20:24	वणिज 29:04	06:41	18:04	कन्या	धन त्रयोदशी, श्री हनुमान जयंती मासशिवरात्रि व्रत, श्रीधनवन्तरी जयंती
29	शनि	चतुर्दशी 20:39	चित्रा	विष्कुंभ 21:10	विष्टि 01:57	06:41	18:04	तुला 19:34	नरक चतुर्दशी, रूप चौदस
30	रवि	अमावस्या 23:07	चित्रा 09:04	प्रीति 22:01	चतुष्पाद 07:54	06:41	18:04	तुला	कार्तिक अमावस्या, श्रीमहालक्ष्मी पूजन श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), दीपावली, काली पूजन, कूबेर पूजा,
31	सोम	शुक्ल प्रतिपदा 25:39	स्वाति 12:02	आयुष्यमान 22:54	किंस्तुघ्न 14:08	06:42	18:03	तुला	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट पूजा, गोक्रीड़ा बलि व मार्गपाली पूजा

1 से 15 नवंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
कार्तिक शुक्ल (सुदी) द्वितीया से मार्गशीर्ष कृष्ण (बदी) प्रतिपदा

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	मंगल	द्वितीया 28:12	विशाखा 14:59	सौभाग्य 23:45	बालव 20:24	06:42	18:01	वृश्चिक 08:14	चन्द्रदर्शन, भाई दूज, यम द्वितीया विश्वकर्मा पूजन, कलम-दवात पूजन
02	बुध	तृतीया 30:36	अनुराधा 17:56	शोभन 24:35	तैतिल 26:33	06:43	18:02	वृश्चिक	
03	गुरू	चतुर्थी	ज्येष्ठा 20:45	अतिगण्ड 25:20	वणिज 32:22	06:43	18:02	धनु 20:45	दूर्वा गणपति व्रत, नाग व्रत
04	शुक्र	चतुर्थी 08:53	मूल 23:22	सुकर्मा 25:49	विष्टि 05:09	06:44	18:01	धनु	
05	शनि	पंचमी 08:37	पूर्वाषाढ़ा 25:32	धृति 25:59	बालव 09:54	06:44	18:01	धनु	जया पंचमी, ज्ञान पंचमी
06	रवि	षष्ठी 12:18	उत्तराषाढ़ा 27:14	शूल 25:46	तैतिल 13:34	06:44	17:59	मकर 08:02	स्कन्द षष्ठी, वह्निमहोत्सव
07	सोम	सप्तमी 13:09	श्रवण 28:17	गंड 25:05	वणिज 15:46	06:44	17:59	मकर	
08	मंगल	अष्टमी 13:20	धनिष्ठा 28:36	वृद्धि 23:46	बव 16:09	06:45	17:59	कुंभ 16:34	पंचक प्रारंभ, गोपाष्टमी
09	बुध	नवमी 12:45	शतभिषा 28:10	ध्रुव 21:50	कौलव 14:39	06:46	17:59	कुंभ	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड (धात्री) नवमी आरोग्य व्रत
10	गुरू	दशमी 11:23	पूर्वाभाद्रपद 26:55	व्याघात 19:19	गर 11:09	06:46	17:59	मीन 21:17	भीष्मपंचक प्रारम्भ हरिप्रबोधिनी एकादशी (स्मार्त)
11	शुक्र	एकादशी 09:14	उत्तराभाद्रपद 24:59	हर्ष 16:09	विष्टि 05:44	06:47	17:58	मीन	हरिप्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव), तुलसी विवाह, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, चातुर्मास्य व्रत,
12	शनि	द्वादशी त्रयोदशी 09:14 30:25	रेवती 22:29	वज्र 12:32	कौलव 24:30	06:48	17:57	मेष 22:29	
13	रवि	चतुर्दशी 23:19	अश्विनी 19:35	सिद्धि व्यतिपात् 08:26 28:08	गर 15:35	06:48	17:57	मेष	पंचक समाप्त, शनि प्रदोष व्रत
14	सोम	पूर्णिमा 19:21	भरणी 16:26	वरीयान् 23:39	विष्टि 05:56	06:49	17:56	वृष 21:40	वैकुण्ठ चतुर्दशी
15	मंगल	कृष्णा प्रतिपदा 15:28	कृत्तिका 13:18	परिघ 19:14	कौलव 21:09	06:49	17:56	वृष	मार्गशीर्ष संक्रांति

16 से 30 नवंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
मार्गशीर्ष कृष्णा (बदी) द्वितीया से मार्गशीर्ष शुक्ल (सुदी) प्रतिपदा

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	बुध	द्वितीया 11:42	रोहिणी 10:19	शिव 15:02	गर 11:47	06:50	17:55	मिथुन 20:55	सौभाग्य सुंदरी व्रत
17	गुरू	तृतीया चतुर्थी 08:24 29:35	मृगशिरा आर्द्रा 07:40 29:38	सिद्ध 11:09	विष्टि 03:26	06:50	17:54	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
18	शुक्र	पंचमी 27:32	पुनर्वसु 28:18	साध्य शुभ 07:45 28:54	कौलव 23:50	06:51	17:54	कर्क 22:33	जीवन में ज्यादा कुछ न करें, सिर्फ और सिर्फ आज का दिन पूरी ईमानदारी और उत्साह के साथ गुजारें.
19	शनि	षष्ठी 26:19	पुष्य 27:43	शुक्ल 26:44	गर 19:46	06:51	17:55	कर्क	
20	रवि	सप्तमी 25:55	आश्लेषा 28:03	ब्रह्म 25:15	विष्टि 17:41	06:52	17:55	सिंह 28:03	
21	सोम	अष्टमी 26:24	मघा 29:10	ऐन्द्र 24:25	बालव 17:45	06:53	17:54	सिंह	कालभैरवाष्टमी
22	मंगल	नवमी 27:36	पूर्वाफाल्गुनी 30:59	वैधृ 24:12	तैतिल 19:50	06:53	17:54	सिंह	हर क्षण अंतिम क्षण है. नया क्षण मिलने को बेताब है. आप हर क्षण का स्वागत करें.
23	बुध	दशमी 29:25	उत्तराफाल्गुनी	विष्क 24:25	वणिज 23:47	06:54	17:54	कन्या 13:30	
24	गुरू	एकादशी	उत्तराफाल्गुनी 09:20	प्रीति 24:59	बव 28:50	06:54	17:54	कन्या	
25	शुक्र	एकादशी 07:40	हस्त 12:07	आयुष्मान् 25:44	बालव 01:24	06:55	17:54	तुला 25:33	उत्पन्ना एकादशी व्रत
26	शनि	द्वादशी 10:12	चित्रा 15:05	सौभाग्य 26:39	तैतिल 14:52	06:55	17:54	तुला	शनि प्रदोष व्रत
27	रवि	त्रयोदशी 12:46	स्वाति 18:06	शोभन 27:33	वणिज 14:06	06:56	17:54	तुला	मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयंती
28	सोम	चतुर्दशी 15:22	विशाखा 21:05	अतिगण्ड 28:20	शकुनि 20:29	06:56	17:54	वृश्चिक 14:21	
29	मंगल	अमावस्या 17:49	अनुराधा 23:55	सुकर्मा 29:06	नाग 26:34	06:57	17:54	वृश्चिक	मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस्या
30	बुध	शुक्ल प्रतिपदा 20:06	ज्येष्ठा 26:36	धृति 29:39	बव 32:14	06:58	17:54	धनु 26:36	

1 से 15 दिसंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
मार्गशीर्ष शुक्ल (सुदी) द्वितीया से पौष कृष्ण (वदी) द्वितीया

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	गुरू	द्वितीया 22:09	मूल 29:06	शूल 30:05	बालव 04:47	06:58	17:55	धनु	चन्द्रदर्शन
02	शुक्र	तृतीया 23:56	पूर्वाषाढ़ा	गंड 30:14	तैतिल 09:36	06:59	17:55	धनु	जोश आग है, ईच्छा है, विश्वास की शक्ति है.
03	शनि	चतुर्थी 25:24	पूर्वाषाढ़ा 07:16	वृद्धि 30:09	वणिज 13:40	07:00	17:55	मकर 13:45	
04	रवि	पंचमी 26:25	उत्तराषाढ़ा 09:06	ध्रुव 29:44	बव 16:44	07:00	17:55	मकर	नागपंचमी, श्रीपञ्चमी श्रीराम विवाहोत्सव
05	सोम	षष्ठी 26:56	श्रवण 10:33	व्याघात 28:54	कौलव 16:35	07:01	17:56	कुंभ 23:04	पंचक प्रारंभ, स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी गुह षष्ठी
06	मंगल	सप्तमी 26:52	धनिष्ठा 11:26	हर्ष 27:38	गर 19:05	07:02	17:56	कुंभ	मित्र (विष्णु) सप्तमी
07	बुध	अष्टमी 26:04	शतभिषा 11:42	वज्र 25:46	विष्टि 17:59	07:02	17:56	मीन 29:26	श्रीदुर्गाष्टमी
08	गुरू	नवमी 24:36	पूर्वाभाद्रपद 20:55	सिद्धि 23:24	बालव 15:10	07:03	17:56	मीन	नन्दानवमी
09	शुक्र	दशमी 22:30	उत्तराभाद्रपद 10:13	व्यतिपात 20:29	तैतिल 10:38	07:04	17:57	मीन	
10	शनि	एकादशी 19:46	रेवती अश्विनी 08:30 30:15	वरीयान् 17:05	वणिज 04:30	07:04	17:57	मेष 08:30	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयंती पंचक समाप्त
11	रवि	द्वादशी 16:33	भरणी 27:35	परिघ 13:18	बालव 22:59	07:05	17:57	मेष	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी अनङ्ग त्रयोदशी व्रत
12	सोम	त्रयोदशी 12:58	कृत्तिका 24:40	शिव सिद्ध 09:10 28:54	तैतिल 14:06	07:06	17:58	वृष 08:52	पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत
13	मंगल	चतुर्दशी पूर्णिमा 09:16 29:35	रोहिणी 21:40	साध्य 24:40	वणिज 04:47	07:06	17:58	वृष	मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्री दत्तोत्रय जयंती त्रिपुरभैरव जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत
14	बुध	कृष्ण प्रतिपदा 26:09	मृगशिरा 18:53	शुभ 20:32	बालव 21:16	07:07	17:58	मिथुन 08:15	
15	गुरू	द्वितीया 23:06	आर्द्रा 16:24	शुक्ल 16:39	तैतिल 13:04	07:07	17:58	मिथुन	पौष संक्रांति

16 से 31 दिसंबर 2016, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
पौष कृष्ण (बदी) तृतीया से पौष शुक्ल (सुदी) द्वितीया

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	शुक्र	तृतीया 20:37	पुनर्वसु 14:26	ब्रह्म 13:14	वणिज 06:09	07:08	18:01	कर्क 08:50	
17	शनि	चतुर्थी 18:51	पुष्य 13:10	ऐन्द्र 10:25	बव 00:49	07:08	18:01	कर्क	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
18	रवि	पंचमी 17:58	आश्लेषा 12:39	वैधृति 08:09 विष्कुंभ 30:39	तैतिल 26:19	07:09	18:02	सिंह 12:39	ध्यान ही चीजों को महत्त्वपूर्ण बनाता है. और फिर यह महत्त्वदृष्टि महत्त्वपूर्ण बनाती है.
19	सोम	षष्ठी 17:54	मघा 13:04	प्रीति 29:45	वणिज 26:12	07:09	18:02	सिंह	
20	मंगल	सप्तमी 18:45	पूर्वाफाल्गुनी 14:16	आयुष्यमान् 29:29	बव 28:14	07:10	18:03	कन्या 20:39	
21	बुध	अष्टमी 20:19	उत्तराफाल्गुनी 16:11	सौभाग्य 29:44	बालव 00:13	07:10	18:03	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध शिशिर ऋतु प्रारंभ
22	गुरू	नवमी 22:26	हस्त 18:43	शोभन 30:21	तैतिल 04:48	07:11	18:04	कन्या	सबसे पहले परिवार, बाद में और कुछ.
23	शुक्र	दशमी 24:54	चित्रा 21:34	अतिगण्ड 31:13	वणिज 10:30	07:11	18:04	तुला 08:07	
24	शनि	एकादशी 27:33	स्वाति 24:36	सुकर्मा	बव 16:55	07:12	18:05	तुला	सफला एकादशी व्रत
25	रवि	द्वादशी 30:08	विशाखा 27:36	सुकर्मा 08:07	कौलव 23:22	07:12	18:05	वृश्चिक 20:53	क्रिसमस डे (बड़ा दिन), नाताल
26	सोम	त्रयोदशी	अनुराधा 30:26	धृति 08:56	गर 29:33	07:13	18:06	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत
27	मंगल	त्रयोदशी 08:29	ज्येष्ठा	शूल 09:39	वणिज 02:34	07:13	18:06	वृश्चिक	मासशिवरात्रि व्रत
28	बुध	चतुर्दशी 10:36	ज्येष्ठा 09:03	गंड 10:08	शकुनि 07:47	07:13	18:07	धनु 09:03	अमावस्या (पितृकार्येषु)
29	गुरू	अमावस्या 12:24	मूल 11:18	वृद्धि 10:22	नाग 12:12	07:14	18:07	धनु	पौष अमावस्या
30	शुक्र	शुक्ल प्रतिपदा 13:50	पूर्वाषाढ़ा 13:12	ध्रुव 10:20	बव 15:47	07:14	18:08	मकर 19:39	चन्द्रदर्शन
31	शनि	द्वितीया 14:53	उत्तराषाढ़ा 14:49	व्याघात 10:02	कौलव 18:24	07:14	18:08	मकर	आरोग्य व्रत, नववर्ष पूर्व संध्या नववर्ष 2017 ई. स्वागत

1 से 15 जनवरी 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
पौष शुक्ल (सुदी) तृतीया से माघ कृष्ण (बदी) तृतीया

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	रवि	तृतीया 15:33	श्रवण 16:02	हर्ष 09:27	गर 20:09	07:15	18:07	कुंभ 08:30	पंचक प्रारंभ, गौरी पूजन
02	सोम	चतुर्थी 15:50	धनिष्ठा 16:53	वज्र सिद्धि 08:35 31:20	विष्टि 20:49	07:15	18:08	कुंभ	श्रीविनायक चतुर्थी
03	मंगल	पंचमी 15:44	शतभिषा 17:16	व्यतिपात 29:49	बालव 20:29	07:15	18:09	कुंभ	अपनी खुशी किसी के अधीन न रखें.
04	बुध	षष्ठी 15:08	पूर्वाभाद्रपद 17:14	वरीयान् 27:54	तैतिल 19:01	07:16	18:09	मीन 11:17	
05	गुरू	सप्तमी 14:02	उत्तराभाद्रपद 16:46	परिघ 25:35	वणिज 16:14	07:16	18:10	मीन	मार्तण्ड सप्तमी श्रीगुरु गोविंद सिंह जयंती
06	शुक्र	अष्टमी 07:25	रेवती 15:46	शिव 22:50	बव 12:14	07:16	18:10	मेष 15:46	पंचक समाप्त, श्रीदूर्गाष्टमी
07	शनि	नवमी 10:21	अश्विनी 14:17	सिद्ध 19:46	कौलव 07:04	07:16	18:11	मेष	
08	रवि	दशमी एकादशी 07:54 29:05	भरणी 12:26	साध्य 16:25	गर 00:54	07:16	18:11	वृष 17:55	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)
09	सोम	द्वादशी 26:02	कृत्तिका 10:16	शुभ 12:46	बव 20:01	07:16	18:12	वृष	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव) सुजन्य द्वादशी
10	मंगल	त्रयोदशी 22:53	रोहिणी मृगशिरा 07:57 29:34	शुक्ल ब्रह्म 09:01 29:15	कौलव 12:20	07:17	18:13	मिथुन 18:45	भौम प्रदोष व्रत
11	बुध	चतुर्दशी 19:53	आर्द्रा 27:16	ऐन्द्र 25:36	गर 04:37	07:17	18:13	मिथुन	श्रीसत्यनारायण व्रत, ईशान व्रत
12	गुरू	पूर्णिमा 17:05	पुनर्वसु 25:19	वैधृति 22:10	बव 23:49	07:17	18:14	कर्क 19:47	पौष पूर्णिमा, शाकम्भरी जयंती स्वामी विवेकानंद जयंती
13	शुक्र	कृष्ण प्रतिपदा 14:39	पुष्य 23:49	विष्कुंभ 19:05	कौलव 17:49	07:18	18:15	कर्क	लोहड़ी पर्व
14	शनि	द्वितीया 12:49	आश्लेषा 22:54	प्रीति 16:25	गर 13:14	07:18	18:16	सिंह 22:54	माघ (मकर) संक्रांति
15	रवि	तृतीया 11:39	मघा 22:43	आयुष्यमान् 14:23	विष्टि 10:19	07:18	18:16	सिंह	श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व सुन्दरी व्रत गौरी व वक्रतुण्ड चतुर्थी

16 से 31 जनवरी 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
माघ कृष्ण (वदी) चतुर्थी से माघ शुक्ल (सुदी) चतुर्थी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	सोम	चतुर्थी 11:15	पूर्वाफाल्गुनी 23:19	सौभाग्य 12:55	बालव 09:24	07:18	18:17	कन्या 29:34	जब हम सब पर ध्यान देते हैं तो सब हम पर ध्यान देते हैं.
17	मंगल	पंचमी 11:39	उत्तराफाल्गुनी 11:39	शोभन 12:04	तैतिल 10:24	07:18	18:17	कन्या	
18	बुध	षष्ठी 12:50	हस्त 26:39	अतिगण्ड 11:45	वणिज 13:14	07:18	18:18	कन्या	शीतला षष्ठी
19	गुरू	सप्तमी 14:39	चित्रा 14:39	सुकर्मा 11:58	बव 17:47	07:18	18:19	तुला 15:50	स्वामी विवेकानंद जयंती (मतान्तरे)
20	शुक्र	अष्टमी 16:56	स्वाति	धृति 12:34	कौलव 23:34	07:18	18:29	तुला	सामने वाले के बारे में आप जैसा सोचते हैं, वह भी आपके बारे में वैसा ही सोचता है.
21	शनि	नवमी 19:26	स्वाति 08:03	शूल 13:24	गर 29:54	07:18	18:20	वृश्चिक 28:19	
22	रवि	दशमी 21:59	विशाखा 11:04	गण्ड 14:15	वणिज 03:05	07:18	18:21	वृश्चिक	
23	सोम	एकादशी 24:21	अनुराधा 13:55	वृद्धि 14:59	बव 09:15	07:18	18:21	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती
24	मंगल	द्वादशी 26:24	ज्येष्ठा 16:34	ध्रुव 15:33	कौलव 14:45	07:18	18:22	धनु 16:34	तिल द्वादशी
25	बुध	त्रयोदशी 27:56	मूल 18:46	व्याघात 15:45	गर 19:15	07:18	18:22	धनु	प्रदोष व्रत
26	गुरू	चतुर्दशी 29:03	पूर्वाषाढ़ा 20:33	हर्ष 15:40	विष्टि 32:35	07:17	18:23	मकर 26:55	भारतीय गणतंत्र दिवस (68 वाँ) मासशिवरात्रि व्रत
27	शुक्र	अमावस्या 29:36	उत्तराषाढ़ा 21:49	वज्र 15:10	चतुष्पाद 24:39	07:17	18:23	मकर	माघ अमावस्या, मेला हरिद्वार
28	शनि	शुक्ल प्रतिपदा 29:45	श्रवण 22:40	सिद्धि 14:16	किंस्तुघ्न 25:35	07:17	18:24	मकर	
29	रवि	द्वितीया 29:25	धनिष्ठा 23:04	व्यतिपात 13:04	बालव 25:23	07:17	18:24	कुंभ 10:55	चंद्रदर्शन, पंचक प्रारंभ
30	सोम	तृतीया 28:45	शतभिषा 23:05	वरीयान 11:30	तैतिल 24:09	07:17	18:25	कुंभ	गौरी तृतीया व्रत
31	मंगल	चतुर्थी 27:40	पूर्वाभाद्रपद 22:44	परिघ 09:40	वणिज 21:59	07:17	18:26	मीन 16:50	अङ्गारकी श्रीगणेश तिल चतुर्थी वरद् (कुन्द) चतुर्थी

1 से 15 फरवरी 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
माघ शुक्ल (सुदी) पंचमी से फाल्गुन कृष्णा (बदी) पंचमी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	बुध	पंचमी 26:19	उत्तराभाद्रपद 22:08	शिव 07:34 सिद्ध 29:14	बव 18:58	07:18	18:27	मीन	वसंत (श्री) पंचमी, सरस्वती पूजन वागेश्वरी जयंती
02	गुरू	षष्ठी 24:44	रेवती 21:13	साध्य 26:43	कौलव 15:19	07:18	18:27	मेष 21:11	पंचक समाप्त
03	शुक्र	सप्तमी 22:49	अश्विनी 20:03	शुभ 23:58	गर 10:58	07:18	18:28	मेष	रथ-आरोग्य व अचला-भानु सप्तमी पुत्र सप्तमी व्रत, श्रीमाधवाचार्य जयंती
04	शनि	अष्टमी 20:44	भरणी 18:40	शुक्ल 21:04	विष्टि 06:03	07:17	18:28	वृष 24:18	भीष्माष्टमी
05	रवि	नवमी 18:29	कृत्तिका 17:08	ब्रह्म 18:02	बालव 00:39	07:17	18:29	वृष	
06	सोम	दशमी 16:09	रोहिणी 15:30	ऐन्द्र 14:55	गर 22:04	07:17	18:29	मिथुन 26:40	
07	मंगल	एकादशी 13:49	मृगशिरा 18:28	वैधृति 11:44	विष्टि 16:10	07:16	18:30	मिथुन	जया एकादशी व्रत, भीष्म द्वादशी
08	बुध	द्वादशी 20:08	आर्द्रा 12:15	विष्कुंभ 08:39 प्रीति 29:41	बालव 10:24	07:16	18:30	कर्क 29:07	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी
09	गुरू	त्रयोदशी 09:23	पुनर्वसु 10:49	आयुष्मान् 26:55	तैतिल 05:08	07:15	18:31	कर्क	
10	शुक्र	चतुर्दशी 07:32 पूर्णिमा 30:04	पुष्य 09:39	सौभाग्य 24:30	वणिज 00:34	07:15	18:31	कर्क	माघ पूर्णिमा, श्रीगुरु रविदास जयंती श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीललिता जयंती
11	शनि	कृष्ण प्रतिपदा 29:06	अश्लेषा 08:54	शोभन 22:22	बालव 25:41	07:14	18:32	सिंह 08:54	
12	रवि	द्वितीया 28:41	मघा 08:39	अतिगण्ड 20:44	तैतिल 24:03	07:14	18:32	सिंह	फाल्गुनी संक्रांति
13	सोम	तृतीया 28:56	पूर्वाफाल्गुनी 09:00	सुकर्मा 19:34	वणिज 23:54	07:13	18:33	कन्या 15:09	
14	मंगल	चतुर्थी 29:51	उत्तराफाल्गुनी 09:58	धृति 18:55	बव 25:24	07:13	18:33	कन्या	अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
15	बुध	पंचमी	हस्त 11:33	शूल 18:45	कौलव 28:32	07:12	18:34	तुला 24:34	

सिर्फ निर्णय लेने में देरी होती है.
निर्णय का मतलब शुभारंभ.

16 से 28 फरवरी 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
फाल्गुन कृष्णा (बदी) नवमी से फाल्गुन शुक्ल (सुदी) द्वितीया

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	गुरू	पंचमी 07:25	चित्रा 13:40	गण्ड 19:03	बालव 11:42	07:12	18:34	तुला	हमें वह परिवर्तन बनना होगा, जो हम दुनिया में चाहते हैं.
17	शुक्र	षष्ठी 09:25	स्वाति 16:17	वृद्धि 19:39	तैतिल 10:32	07:11	18:35	तुला	
18	शनि	सप्तमी 11:49	विशाखा 19:09	ध्रुव 20:26	वणिज 09:46	07:10	18:35	वृश्चिक 12:27	श्रीनाथ उत्सव, वसंत ऋतु प्रारंभ
19	रवि	अष्टमी 14:17	अनुराधा 22:08	व्याघात 21:16	बव 09:26	07:10	18:36	वृश्चिक	जानकी व्रत
20	सोम	नवमी 16:41	ज्येष्ठा 24:54	हर्ष 21:56	कौलव 09:33	07:09	18:36	धनु 24:52	रामदास नवमी
21	मंगल	दशमी 18:45	मूल 27:18	वज्र 22:23	गर 10:06	07:09	18:36	धनु	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
22	बुध	एकादशी 20:19	पूर्वाषाढ़ा 29:12	सिद्धि 22:26	विष्टि 11:08	07:08	18:37	धनु	विजया एकादशी व्रत
23	गुरू	द्वादशी 24:20	उत्तराषाढ़ा 30:29	व्यतिपात 22:04	बालव 12:37	07:07	18:37	मकर 11:33	
24	शुक्र	त्रयोदशी 21:40	श्रवण	वरीयान 21:10	तैतिल 14:32	07:07	18:37	मकर	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत
25	शनि	चतुर्दशी 21:20	श्रवण 07:12	परिघ 19:47	वणिज 16:50	07:06	18:38	कुंभ 19:17	पंचक प्रारंभ
26	रवि	अमावस्या 20:29	धनिष्ठा शतभिषा 07:15 30:49	शिव 17:55	बव 19:22	07:05	18:38	कुंभ	फाल्गुन अमावस्या
27	सोम	शुक्ल प्रतिपदा 19:07	पूर्वाषाढ़ा 29:56	सिद्ध 15:41	बालव 08:42	07:04	18:38	मीन 24:13	
28	मंगल	द्वितीया 17:20	उत्तराषाढ़ा 28:45	साध्य 13:09	तैतिल 11:20	07:04	18:38	मीन	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती चन्द्रदर्शन

1 से 15 मार्च 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
फाल्गुन शुक्ल (सुदी) सप्तमी से चैत्र कृष्ण (बदी) तृतीया

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
01	बुध	तृतीया 15:19	रेवती 27:15	शुभ 10:21	बव 20:49	07:03	18:39	मेष 15:51	पंचक समाप्त
02	गुरू	चतुर्थी 13:05	अश्विनी 25:40	शुक्ल ब्रह्म 07:20 28:18	विष्टि 15:17	07:02	18:39	मेष	अविघ्नकर व्रत
03	शुक्र	पंचमी 10:45	भरणी 24:05	वैधृति 25:13	बालव 09:29	07:02	18:40	वृष 29:39	याज्ञवल्क्य जयंती
04	शनि	षष्ठी सप्तमी 08:25 30:09	कृत्तिका 22:30	ऐन्द्र 22:10	तैतिल 03:44	07:01	18:40	वृष	
05	रवि	अष्टमी 27:59	रोहिणी 21:02	विष्कुंभ 19:10	विष्टि 25:23	07:01	18:41	वृष	होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णा अष्टमी
06	सोम	नवमी 26:03	मृगशिरा 19:41	प्रीति 16:20	बालव 20:20	07:00	18:41	मिथुन 08:19	जिम्मेदारी लेने और काम कर देने के विचार में बहुत बड़ी शक्ति है.
07	मंगल	दशमी 24:19	आर्द्रा 18:36	आयुष्यमान् 13:43	तैतिल 15:45	06:59	18:41	मिथुन	
08	बुध	एकादशी 22:49	पुनर्वसु 17:45	सौभाग्य 11:15	वणिज 11:50	06:58	18:42	कर्क 11:56	आमलकी एकादशी व्रत
09	गुरू	द्वादशी 21:39	पुष्य 17:13	शोभन 09:00	बव 08:35	06:57	18:42	कर्क	गोविंद द्वादशी
10	शुक्र	त्रयोदशी 20:49	आश्लेषा 16:58	अतिगण्ड सुकर्मा 07:01 29:17	कौलव 06:08	06:56	18:43	सिंह 16:58	प्रदोष व्रत
11	शनि	चतुर्दशी 21:11	मघा 17:08	धृति 27:55	गर 04:35	06:55	18:43	सिंह	महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
12	रवि	पूर्णिमा 20:25	पूर्वाफाल्गुनी 17:40	शूल 26:55	विष्टि 04:05	06:54	18:43	कन्या 23:55	श्रीचैतन्य महाप्रभु जयंती, होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन, होली पर्व, फाल्गुन पूर्णिमा
13	सोम	कृष्ण प्रतिपदा 20:53	उत्तराफाल्गुनी 18:41	गण्ड 26:14	बालव 04:45	06:54	18:43	कन्या	वसन्तोत्सव, ध्वजारोहन, धुलण्डी
14	मंगल	द्वितीया 21:49	हस्त 20:11	वृद्धि 26:00	तैतिल 06:35	06:53	18:43	कन्या	चैत्र संक्रांति
15	बुध	तृतीया 23:19	चित्रा 22:12	ध्रुव 26:06	वणिज 09:40	06:52	18:43	तुला 09:07	

16 से 31 मार्च 2017, विक्रम संवत् 2073, शक संवत् 1938
चैत्र कृष्ण (बदी) अष्टमी से चैत्र शुक्ल (सुदी) चतुर्थी

दिनांक	वार	तिथि (अंत)	नक्षत्र (अंत)	योग (अंत)	करण (अंत)	सूर्योदय	सूर्यास्त	चंद्रराशि (अंत)	विवरण
16	गुरू	चतुर्थी 25:13	स्वाती 24:36	व्याघात 26:30	बव 10:02	06:52	18:43	तुला	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत श्रीभगवान्नारायण जयंती
17	शुक्र	पंचमी 27:26	विशाखा 27:20	हर्ष 27:13	कौलव 09:32	06:51	18:43	वृश्चिक 20:35	श्रीरंग पंचमी मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारंभ
18	शनि	षष्ठी 29:54	अनुराधा 30:15	वज्र 28:04	गर 25:05	06:50	18:44	वृश्चिक	एकनाथ षष्ठी
19	रवि	सप्तमी	ज्येष्ठा	सिद्धि 28:55	विष्टि 31:15	06:49	18:44	वृश्चिक	शीतला सप्तमी
20	सोम	सप्तमी 08:20	ज्येष्ठा 09:08	व्यतिपात 29:35	बव 04:19	06:48	18:44	धनु 09:10	शीतला पूजन, महाविषुव दिवस
21	मंगल	अष्टमी 10:33	मूल 11:52	वरीयान 30:02	कौलव 09:54	06:47	18:44	धनु	शीतलाष्टमी
22	बुध	नवमी 12:17	पूर्वाषाढ़ा 14:08	परिघ 29:58	गर 14:22	06:46	18:45	मकर 20:35	जब हम अपनी सोच बदल लेते हैं, तो हम अपनी जिंदगी बदल लेते हैं.
23	गुरू	दशमी 13:27	उत्तराषाढ़ा 15:46	शिव 29:24	विष्टि 17:19	06:46	18:45	मकर	
24	शुक्र	एकादशी 13:53	श्रवण 16:44	सिद्ध 28:15	बालव 18:29	06:45	18:45	कुंभ 28:56	पंचक प्रारंभ, पापमोचिनी एकादशी व्रत
25	शनि	द्वादशी 13:53	धनिष्ठा 16:59	साध्य 26:30	तैतिल 17:44	06:45	18:46	कुंभ	शनि प्रदोष व्रत
26	रवि	त्रयोदशी 12:30	शतभिषा 16:29	शुभ 24:11	वणिज 15:04	06:44	18:46	कुंभ	मासशिवरात्रि व्रत
27	सोम	चतुर्दशी 10:46	पूर्वाभाद्रपद 15:19	शुक्ल 21:25	शकुनि 10:44	06:43	18:46	मीन 09:39	अमावस्या (पितृकार्येषु)
28	मंगल	अमावस्या 08:26 शु. प्रतिपदा 29:46	उत्तराभाद्रपद 13:40	ब्रह्म 18:14	नाग 05:04	06:42	18:47	मीन	चैत्र अमावस्या, चैत्र नवरात्र प्रारंभ घटस्थापना व श्रीदुर्गा पूजा
29	बुध	द्वितीया 26:48	रेवती 11:39	ऐन्द्र 14:42	बालव 16:20	06:42	18:47	मेष 11:39	चंद्रदर्शन, पंचक समाप्त शृंगार(सिंधारा)
30	गुरु	तृतीया 23:46	अश्विनी 09:22	वैष्णव 11:05	तैतिल 13:19	06:42	18:47	मेष	अरुन्धती व्रत, गणगौरी पूजा
31	शुक्र	चतुर्थी 20:42	भरणी 28:50	विष्टि 27:48	वणिज 10:12	06:41	18:46	वृष 12:30	

विक्रम संवत् 2073, एक नजर में चतुर्थी, एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, प्रदोष और संक्रांति

व्रत मास	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	एकादशी व्रत	अमावस्या व्रत	सत्यनारायण व पूर्णिमा व्रत	प्रदोष व्रत	संक्रांति व्रत
अप्रैल	25 सोमवार	03/17 रवि/रवि	07 गुरुवार	22 शुक्रवार	05/19 मंगल/मंगल	13 बुधवार
मई	25 बुधवार	03/17 मंगल/मंगल	06 शुक्रवार	21 शनिवार	04/19 बुध/गुरु	14 शनिवार
जून	23 गुरुवार	01/16 बुध/गुरु	05 रविवार	20 सोमवार	02/17 गुरु/शुक्र	14 मंगलवार
जुलाई	23 शनिवार	01/15/30 शुक्र/शुक्र/शनि	04 सोमवार	19 मंगलवार	02/17/31 शनि/रवि/रवि	16 शनिवार
अगस्त	21 रविवार	14/28 रवि/रवि	02 मंगलवार	17/18 बुधवार/गुरुवार	15/29 सोम/सोम	13 मंगलवार
सितम्बर	19 सोमवार	13/26 मंगल/सोम	01/30 गुरुवार/शुक्रवार	16 शुक्रवार	14/28 बुध/बुध	16 शुक्रवार
अक्टूबर	19 बुधवार	12/26 बुध/बुध	30 रविवार	15 शनिवार	13/28 गुरु/शुक्र	15 शनिवार
नवम्बर	17 गुरुवार	11/25 शुक्र/शुक्र	29 मंगलवार	25 शुक्रवार	12/26 शनि/शनि	15 मंगलवार
दिसम्बर	17 शनिवार	10/24 शनि/शनि	29 गुरुवार	13 मंगलवार	11/26 रवि/सोम	15 गुरुवार
जनवरी	15 रविवार	08/23 रवि/सोम	27 शुक्रवार	11 बुधवार	10/25 मंगल/बुध	14 शनिवार
फरवरी	14 मंगलवार	07/22 मंगल/बुध	26 रविवार	10 शुक्रवार	08/24 बुध/शुक्र	12 रविवार
मार्च	16 गुरुवार	08/24 बुध/शुक्र	28 मंगलवार	12 रविवार	10/25 शुक्र/शनि	14 मंगलवार

विक्रम संवत् 2073 में पुष्य नक्षत्र

राशि खण्ड में कर्क राशि के 3 अंश 20 कला से 16 अंश से 40 कला तक का भाग **पुष्य नक्षत्र** का माना जाता है. पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनि ग्रह और इसका अधिष्ठाता देवता वृहस्पति है. यह दर्शन पांडित्य का सुन्दर योग है. पुष्य नक्षत्र, नक्षत्रों में सबसे श्रेष्ठ है जो सिंह के समान माना गया है. अतः पुष्य नक्षत्र में हर प्रकार के शुभ कार्य सम्पन्न करने के निर्देश हैं, पुष्य नक्षत्र में केवल विवाह एवं गुरु पुष्य वाणिज्य कर्म एवं साधना कर्म करने के लिए विशेष रूप से शुभ माना गया है.

प्रारम्भ

वार	मास	दिनांक	समय
गुरु	अप्रैल	14	14.35
बुध	मई	11	22.22
बुध	जून	08	07.44
मंगल	जुलाई	05	17.29
सोम	अगस्त	01	26.10
सोम	अगस्त	29	09.02
रवि	सितम्बर	25	14.38
शनि	अक्टूबर	22	20.28
शुक्र	नवम्बर	18	28.18
शुक्र	दिसम्बर	16	14.26
गुरु	जनवरी	12	25.19
गुरु	फरवरी	09	10.49
बुध	मार्च	08	17.45

समाप्त

वार	मास	दिनांक	समय
शुक्र	अप्रैल	15	15.36
गुरु	मई	12	22.44
गुरु	जून	09	07.29
बुध	जुलाई	06	17.00
मंगल	अगस्त	02	25.53
मंगल	अगस्त	30	09.12
सोम	सितम्बर	11	15.05
रवि	अक्टूबर	23	20.40
शनि	नवम्बर	19	27.43
शनि	दिसम्बर	17	13.10
शुक्र	जनवरी	13	23.49
शुक्र	फरवरी	10	09.39
गुरु	मार्च	09	17.13

चैत्रादि 12 मासों के नाम

मास नाम	चैत्र बैकुण्ठ	वैशाख जनार्दन	ज्येष्ठ उपेन्द्र	आषाढ़ यज्ञपुरूष	श्रावण वासुदेव	भाद्रपद त्रिविक्रम
मास नाम	आश्विन योगीश	कार्तिक पुण्डरीकाक्ष	मार्गशीर्ष कृष्ण	पौष अनंत	माघ अच्युत	फाल्गुन चक्रधर

चैत्रादि मासों में गृहनिर्माण का फल

चैत्र शोक	वैशाख धन-धान्य	ज्येष्ठ मृत्यु	आषाढ़ पशु हानि	श्रावण द्रव्य वृद्धि	भाद्रपद नाश
आश्विन युद्ध	कार्तिक भृत्य क्षय	मार्गशीर्ष धन-लाभ	पौष लक्ष्मी प्राप्ति	माघ अग्नि भय	फाल्गुन लक्ष्मी प्राप्ति

स्मार्त एवं वैष्णव

स्मार्तः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य गृहस्थ जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक हैं, ये सभी स्मार्त हैं.

वैष्णवः जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख, चक्र अंकित करवाये हैं, साधु संन्यासी, विधवा स्त्री, विष्णु उपासक को ही शास्त्र में वैष्णव कहा गया है. ●

पंचदेव

भगवान् विष्णु, शिव, गणेश, शक्ति तथा सूर्य पंचदेव कहलाते हैं.

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर 1 जमा करें फिर कुल जोड़ को 4 द्वारा भाग देवें. यदि शेष शून्य (0) अथवा 3 बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा. इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है. यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है. इसी दिन होम करने से धन का नुकसान होता है. यदि 4 का भाग देने से 1 शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है. **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए. तदुपरान्त ग्रह के मुख से आहुति चक्र का विचार करना चाहिए. ●

नींव में रखने योग्य सामग्री

* तांबे की गड़वी (छोटे लोटे) में चावल, सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध ले.
* पांच नई ईटें.
* पांच पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ.
* एक जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा.
* पांच कौड़ियां, सिंदूर, पांच सुपारी साबुत.
* दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा एक पाव कच्चा दूध. यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है.
* नारियल.

॥ विशेष ॥

* भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए.
* फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो.
* ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो.
* मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए. ●

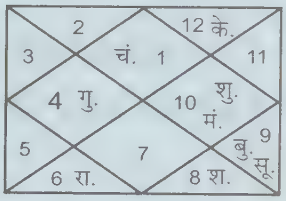
गृहारंभ में नक्षत्र वार की विशेषता

यदि गृहारंभ करते समय गुरु से युक्त पुष्य, ध्रुव संज्ञक नक्षत्र मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा या पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तथा गुरुवार भी हो तो वह घर पुत्र और राज्य की वृद्धि करने वाला होता है. इसी तरह शुक्र युक्त विशाखा, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा या आर्द्रा नक्षत्र हो तथा शुक्रवार भी हो तो वह घर धन-धान्य से परिपूर्ण तथा हर प्रकार के सुखादि देने वाला होता है. ●

ज्योतिष एक प्रामाणिक शास्त्र है • डॉ. श्रीमती पुष्पारानीजी गर्ग

(कल्याण से साभार)

मैं स्वयं ज्योतिषशास्त्रकी ज्ञाता नहीं हूँ, परंतु मेरे बाबूजी स्वतन्त्रतासेनानी होनेके साथ-साथ बहुत बड़े ज्योतिषाचार्य, योगाचार्य, शास्त्रके ज्ञाता तथा भगवद्भक्त थे. उनके द्वारा बताये गये ग्रह-योगादिको मैंने सदा प्रमाणित होते देखा है. यद्यपि ज्योतिषशास्त्र के विषय में प्रायः लोगोंको यह भ्रम रहता है कि यह पण्डितोंका पैसा कमाने का साधन है, ये लोग भोले-भाले लोगों को ग्रहदशा का भय दिखलाकर तरह-तरह से उनसे पैसा लूटते हैं, आदि-आदि.



परंतु मैंने बाबूजीके बताये ग्रहयोग आदि को सदैव सत्य प्रमाणित होते देखा है. उनकी बतायी गणना और फलित कभी गलत नहीं हुए. जहाँ तक मेरा अनुभव और विश्वास है, ज्योतिषीय गणना सही है, इसके लिये आवश्यक है कि ज्योतिषी स्वयं ईमानदार, निर्लोभी, सत्यान्वेषी, कुशल गणितज्ञ, ईश्वरीय अस्तित्व के प्रति आस्थावान्, आध्यात्मिक प्रकृति का, निरहंकारी, निःस्वार्थ तथा आत्मबल से युक्त हो. बाबूजी में ये गुण विद्यमान थे. वे जन्मपत्रिका देखने का शुल्क भी नहीं लेते थे. उनका ज्योतिषज्ञान स्वान्तःसुखाय था और वे पत्रिका देखकर जन्मपत्रिका दिखानेवाले व्यक्ति को ऐसे सरल, अचूक तथा अनोखे उपाय बताते थे कि उसे आश्चर्य होता था. बाबूजी का बताया उपाय करने पर उसका कष्ट दूर हो जाता था. इस आलेख में ऐसी ही कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं-

•

एक बार बाबूजी के एक मित्र बाबूजी से बोले- पोद्यारजी! मेरे पैरों में बहुत दिनों से दर्द है. चलने-फिरने में भी तकलीफ होती है. मैं बहुत इलाज करा चुका हूँ, ठीक ही नहीं होता. बाबूजीने कहा- भाई! तुम अपनी जन्मपत्री लाना, देखकर कुछ बताऊँगा. दोस्त उनकी बात सुनकर हँस पड़े, पैरदर्द और जन्मपत्री का क्या रिश्ता? बाबूजी बोले- तुम लाना तो सही, फिर बताऊँगा. आखिर वे अपनी जन्मपत्री ले ही आए. बाबूजीने ध्यानसे पत्रिका देखी और बोले, देखो दोस्त! मैं जो उपाय बताता हूँ, वह अगर कर लोगे तो पैरदर्द ठीक हो जाएेगा. दोस्त ने कहा- इतने इलाज करा चुका, अब तुम्हारा उपाय भी कर लूँगा, बताओ.

बाबूजीने बताया, शुक्रवार के दिन एक सुन्दर-सी पूरे छापे की रंगीन साड़ी लाकर अपनी पत्नी को देना. उस समय शुक्र ग्रह को प्रसन्न करने के लिए मन में '**ॐ शुं शुक्राय नमः**' यह मन्त्र जपते रहना. हाँ, साड़ी ऐसी लाना कि पत्नी देखकर खुश हो जाए. मित्र बोले- वाह! यह तो बड़ा बढ़िया उपाय बताया. पैसा भी खर्च हुआ तो घरका घरमें ही. उन्होंने यह उपाय किया तो सचमें ही उनके पैरों का दर्द गया.

•

बाबूजी के पास एक महाशय अपने बेटे की जन्मपत्री लेकर आए. उनके बेटे को नकल करने के अपराध में 12वीं बोर्ड की परीक्षा से उस वर्ष के लिए निकाल दिया गया था. बेटे का साल खराब होने के कारण पिता बहुत परेशान थे. बाबूजीने उनके बेटेकी जन्मपत्री देखी, फिर उस बेटे को भी बुलवाया. बेटा आया. वह बाबूजी के पैरोंपर गिरकर रो पड़ा. बाबूजीने उसको सान्त्वना देते हुए कहा- देखो बेटा! मैं तुम्हें उपाय बता रहा हूँ, तुम्हारा साल खराब होने से बच सकता है, लेकिन पहले तुम्हें वचन देना पड़ेगा. उस लड़केने तुरंत कहा- मैं आपकी हर बात मानूँगा. आप मेरा साल बर्बाद होने से बचा लीजिए. **क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 65**

बाबूजीने कहा- पहले यह प्रतिज्ञा करो कि आगे से मैं कभी नकल नहीं करूँगा, पूरी मेहनत से पढ़ूँगा, अपने शिक्षकों का पूरा आदर करूँगा. लड़का बोला- मैं सच्चे मनसे आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ, फिर बाबूजीने उसे मंगल का मन्त्र '**ॐ अं अंगारकाय नमः**' का जाप करने को कहा तथा छोटे भाई से झगड़ना बन्दकर, उसे प्रसन्न करने के लिए कुछ गुड़-चॉकलेट आदि लाल रंगकी वस्तुएँ खाने को देनेके लिए कहा.

उस लड़के ने पूरी ईमानदारी से विश्वास के साथ वह उपाय किया. कुछ ही दिनों में बड़े चमत्कारिक ढंग से उसे पुनः परीक्षा देने का अवसर मिल गया और उसका साल खराब होने से बच गया.

•

इसी प्रकार हमारी बुआजी, जिन्होंने हाथरस शहर में एक कन्या विद्यालय खोला उन्हें किसी झूठे आक्षेप में कुछ लोगोंद्वारा मुकदमे में फँसा दिया गया. बुआजी बहुत परेशान हो गयीं. उन दिनों हाथरस में केवल तहसील थी. उन्हें मुकदमे की तारीख पर हर बार अलीगढ़ जाना पड़ता था. जिला न्यायालय तब अलीगढ़ में था. अलीगढ़ में बुआजी मुकदमा हार गयीं. उन्हें इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपील करनी पड़ी. परेशान होकर बुआजी बाबूजी के पास आयीं और कहने लगीं मुरली! अब तू ही कुछ उपाय बता.

बाबूजी ने बुआजी की जन्म पत्रिका देखी. उसमें राहुकी दशा थी. पाँच के अंक से उसका कुछ सम्बन्ध था (इसकी स्थिति विस्तारसे बताना मेरे लिए कठिन है; क्योंकि मैं स्वयं ज्योतिष नहीं जानती). उन्होंने बुआजी को कहा- तू '**ॐ रां राहवे नमः**' का जप करते हुए रविवारको लाल चर्च में पाँच लाल गुलाब का गुच्छा ईसा मसीह के साथ चढ़ा देना. बस तू इस बार जीत जाएगी. एक बात बताना चाहती हूँ कि बाबूजी पत्रिका देखकर जो भी उपाय बताते थे, उन्होंने स्वयं पूरी आस्था तथा विश्वास के साथ बताते थे. उन्होंने बुआजी से कहा- तू एक रात पहले चर्च जाकर पता कर लेना कि मेरे फूल चढ़ानेपर पादरी को कोई आपत्ति तो नहीं है. उनकी स्वीकृति लेकर ही फूल चढ़ाना.

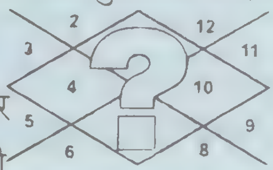
बुआजीने रातमें चर्च जाकर पादरी साहबसे फूल चढ़ाने की अनुमति ले ली. पादरी ने लाल फूलोंके गुच्छे चढ़ाने को कहा. बोले-खुले फूल न चढ़ाएं. बुआजी ने अगली सुबह राहु के बीज मन्त्र का मनमें जप करते हुए पाँच लाल गुलाबों का गुच्छा चढ़ाया और प्रार्थना की कि कृपा करके मेरा संकट दूर करें और अन्ततः उन शत्रुभावी लोगों ने अगली तारीख पर अपना मुकदमा वापस ले लिया. बुआजी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ, परंतु उन्हें भाई के बताये उपाय पर विश्वास भी था.

तात्पर्य यह है कि बाबूजी पत्रिका देखकर बड़े साधारण उपाय बताते थे, जिससे व्यक्ति की परेशानियाँ तथा कष्ट दूर हो जाते थे. ऐसी अनेक घटनाएँ हैं, जिनका उल्लेख करना इस आलेख में सम्भव नहीं. बाबूजी प्रश्नकुण्डली बनाकर पूर्णतः सही-सही विवरण देते और कोई कठिनाई होनेपर उसका जो समाधान देते, वह भी सही ही बैठता.

•

एक घटना तब की है, जब मैं स्कूल में पढ़ती थी. किसी त्योहार का अवसर था. शायद गंगादशहरा था. एक वृद्ध विधवा ब्राह्मणी घर पर माँ से मिलने आयी. जब वह वापस लौटने लगी तो उसकी चप्पलें घर में से गायब थीं. चप्पलें न मिलनेपर वह आँखों में आँसू लाकर बाबूजी से **क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 66**

बोली- मैं तो पड़ोसन से चप्पल उधार माँगकर पहन आयी थी, अब मैं गरीब उसकी चप्पल कहाँसे लाकर दूँगी ? उसको दुःखी देखकर हम बच्चे बाबूजी से मजाक के लहजे में बोले- बाबूजी! प्रश्न कुण्डली से इन मिश्रानी जी की चप्पल मिलने का उपाय बता दीजिए न...



बाबूजीने सचमुच पंचांग निकाला और कुण्डली बनाने लगे. फलित निकाला और मिश्रानीजी से बोले- 'बाई! आपकी चप्पलें अभी घर से बाहर नहीं गयीं. घरमें ही छिपी हैं, ढूँढ़ों.' उसने सब जगह चप्पलें ढूँढ़ी, लेकिन नहीं मिलीं. हम बच्चे फिर बाबूजी के पीछे लगे, बाबूजी और बताईए, कहाँ हैं, किस दिशा में हैं? बाबूजीने कुण्डली देखकर विचार किया और बोले- चप्पलें नीचेकी मंजिल में हैं, पूर्व दिशा में हैं, लोहे के पास हैं. फिर विचारकर बोले- छोटे बालक छोटी जाति का, साँवले रंग का आ रहा है. इतना सुनकर सबको अन्दाज हो गया कि चप्पलें किसने चुरायी हैं. बाबूजी फिर बोले- चप्पलें चोर की माँ को मिलेंगी.

सब सोच-विचारकर उन्होंने नौकर को भेजकर हमारी बर्तनवाली महरी को बुलवाया. महरी नौकर के साथ ही घर आ गयी. उसे सारी बात बतायी. वह तो सब सुनकर तैशमें आ गयी और गंगा मैया की कसम खाकर बोली- लालाजी, मेरा लड़का चप्पलें घर नहीं ले गया. भले ही मेरे हाथ पर गंगाजल रख दो. बाबूजीने उसे काफी समझाया और कहा- देखो भाई, चप्पलें तो तुम्हारे लड़के ने ही उठयी हैं. उसने यहीं हमारे घरमें ही छिपा दी हैं. तुम कोशिश करो, ढूँढ़ों, शायद तुम्हें कहीं मिल जाए. उसने हो सकता है कि नीचे के कमरे में छिपा दी हों.

उस बाई ने काफी ढूँढा. तब उसे लोहेकी आलमारी के नीचे कुछ काला-सा दिखा. वह आलमारी नीचेके कमरे में वर्षों से अप्रयुक्त रखी थी. बाईने आलमारी के नीचे बाँस डाला तो वे चप्पलें निकल आयीं. वह ब्राह्मणी चप्पलें मिलने पर खुशी-खुशी उन्हें पहनकर चली गयी. बर्तनवाली बाई शर्मिन्दा होकर माफी माँगने लगी.

बाबूजी का प्रश्नकुण्डली का गणित स्वयं प्रमाणित हो गया. ऐसे अनेक अवसर आए जब उनका बताया ग्रहों का उपाय सफल हुआ और प्रश्नकुण्डली का गणित भी सही बैठा. ●

गण्डमूलादि शान्ति आवश्यक क्यों?

केवल गण्डान्त नक्षत्र (आश्ले, मघा, ज्येष्ठ, मूल, रेवती एवं अश्विनी) ही अरिष्ट प्रभावोत्पादक नहीं होता, बल्कि कुछ अन्य नक्षत्र भी किसी विशेष आयु में अशुभ फल प्रकट करते हैं. यदि किसी कारणवश जन्म काल से लगभग 27 वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डान्त शान्ति न करवाई जा सकी हो, तो जातक के जन्मदिन के आसपास, अथवा 27 वें मास या 27 वें वर्ष में विवाह से पूर्व उसी गण्डमूल नक्षत्र में शान्ति करवा लेनी चाहिए. यदि किसी कारणवश गण्डान्त शान्ति करवाने वाले सुयोग्य पण्डित न उपलब्ध हो सकें, तो फिर उसी नक्षत्र में जातक द्वारा महामृत्युंजय का पाठ या अमोघ शिव कवच का पाठ अथवा श्री दुर्गा सप्तशती का दुर्गा कवच सहित पाठ करके जातक द्वारा तुलादान करवाकर, उस अनाज को अन्ध विद्यालय आदि किसी सामाजिक संस्था में वस्त्र-फल आदि सहित लंगर करवा देना चाहिए. अभुक्त मूल गण्डान्त की स्थिति में तो यथाशक्ति गौओं एवं कुष्ठों की सेवा करने का भी विधान है. ग्रह-नक्षत्रों का प्रतीकात्मक रूप से ध्यान, अर्चन, होमादि करना वास्तव में उस विराट, परमपुरुष परमात्मा की ही पूजा है. ●

शरीर के शकुन

अनेक बार हमारे शरीर के विभिन्न अंग फड़कते हैं या हथेलियों अथवा पैरों के तलों में खुजली होती है. ये बातें शरीर में वायु आदि दोष से भी होती हैं और शकुन के रूप में भी. प्रायः शकुन के रूप में ये लक्षण तब प्रकट होते हैं, जब हम किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति के सम्बन्ध में सोच रहे हों. ये शकुन उसी सम्बन्ध में सूचना देते हैं. बिना हमारी ईच्छा के या हम किसी सम्बन्ध में न सोचते हों, तो भी अंग-स्फुरणादि शकुन हो सकते हैं. ऐसे समय वे प्रभाव की महत्ता सूचित करते हैं.

जैसे विश्व के समस्त पदार्थों के विभिन्न अधिष्ठाता देवता हैं, वैसे ही हमारे शरीर के भिन्न-भिन्न अंगो के भी अधिष्ठाता देवता हैं. समष्टि में व्यापक रूप से कोई अद्भुत घटना होनी होती है तो उसमें उस देवता का प्रभाव प्रकट होता है. कारण दोनों स्थानों पर एक ही है. दोनों ही स्थानों पर क्रिया देवशक्ति से हुई है. जैसे समष्टि में घटना की महत्ता तथा अल्पता के अनुसार लक्षण प्रकट होते हैं, वैसे ही शरीर में भी छोटे या बड़े लक्षण दीख पड़ते हैं.

अंगस्फुरण, हथेलियों अथवा पादतल की खुजलाहट और छींक- ये सामान्य लक्षण हैं. इनके अतिरिक्त और भी लक्षण शरीर में प्रकट होते हैं; परंतु जैसे संसार में रक्त वर्षण या मूर्ति-हास्यादि कभी-कभी होते हैं. वैसे ही शरीर के ये लक्षण भी कभी-कभी किसी में प्रकट होते हैं. पहने हुए आभूषण अकारण टूट या गिर जाएँ, फूलों की माला अस्वाभाविक ढ़ंग से म्लान हो जाए, किसी अंग से स्वेद बहने लगे, बिना कारण रुलायी आए और अश्रु गिरें, शरीर से अकारण रक्त निकले, कार्यारम्भ में हाथ के उपकरण गिर पड़ें, शरीर फिसल जाए- इस प्रकार के शकुन के रूप में प्रकट होते हैं और कभी-कभी प्राकृतिक कारणों से- जैसे प्रमादवश हाथ के उपकरण गिर सकते हैं या पैर फिसल सकता है. सब समय इनको शकुन मानना भी ठीक नहीं होता. •

शनि-पाद-विचार

जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम् । त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम् ॥
लौहे धनविनाशः स्यात्सर्वसौख्यं च काञ्चने । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् ॥

शनि के-परिवर्तन के समय यदि चन्द्रमा 1, 6, 11 स्थानमें हो तो स्वर्ण पाद 2, 5, 9 में हो तो रजत पाद 3, 7, 10 स्थान में हो तो ताम्र पाद तथा 4, 8, 12 में हो तो लौह पद होता है. स्वर्णपाद सभी प्रकार के सुखों को देनेवाला, रजतपाद सुख-सौभाग्य देनेवाला, ताम्रपाद मध्यम फल देनेवाला एवं लौहपाद धन-धान्यका नाशक होता है. •

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है - पहला जनना शौच जिसे 'सूतक' और दूसरा मरणा शौच जिसे पातक कहते हैं.

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं. पांचवें, छठे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है. तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं. पितादि सपिण्डों को तीन दिन का 'सूतक' होता है. **क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 68**

जनना शौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को दस दिन, क्षत्रिय को बारह दिन, वैश्य को पंद्रह दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकलने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, बीस दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता. नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता.

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है. बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाए तो माता को दस दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को तीन दिन का जननाशौच (सूतक) होता है. नाल-छेदन के बाद दस दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है. पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता है.

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् दस दिन के बाद छः महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को तीन दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं. कन्या के मरने पर पिता को एक दिन का पातक होता है. स्मरण रखना चाहिए सातवें महीने से अर्थात दांत निकलने के पीछे तीन वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को तीन दिन, सपिण्डों को एक दिन तक पातक हो जाता है और तीन वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए.

कन्या शौच व्यवस्था

सगाई होने के पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक एक दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को तीन दिन का पातक होता है. यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर से मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाइयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को एक दिन का अशौच होता है. परंतु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है.

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को तीन दिन, नानी मरने पर एक दिन का पातक होता है. यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को तीन दिन, बिना यज्ञोपवीत के डेढ़ दिन का पातक होता है.

क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 69

सास-ससुर तथा जामातु पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से 3 दिन, बिना समीप होने से डेढ़ दिन का पातक होता है. जामाई के मरने पर 1 दिन का पातक होता है.

बन्धुत्रय-विचार

बुआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं. पिता की बूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं. माता की बूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं. इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है. इनकी बहन मरे तो 1 दिन का पातक होता है और विवाहित कन्या के मरने पर 1 दिन का. •

शीघ्र विवाह के उपाय

सही उम्र में विवाह यदि हो जाए तो तन-मन संबंधी कई परेशानियाँ स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं. लेकिन ऐसा हो नहीं पाता. कइयों की बात ही शुरू नहीं हो पाती, जबकि कइयों की बात बनते-बनते बिगड़ जाती है. ऐसे में ग्रह चाल और प्रारब्ध को ही कारण माना जाता है.



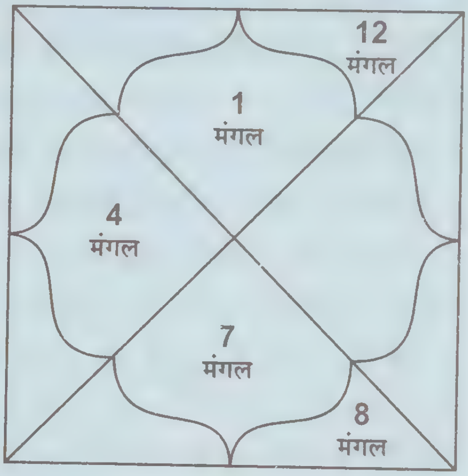
- जिस कन्या का विवाह न हो पा रहा हो, वह भगवती पार्वती के/चित्र अथवा मूर्ति के सामने शुद्ध घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन निम्न मंत्र का 11 माला जाप 10 दिनों तक करे-

  हे गौरि शंकरार्द्धांगि यथात्वम् शंकरप्रिया। तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्।।

- गुरूवार के दिन आटे के 2 पेडों पर थोड़ी-सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ तथा चने की दाल गाय को खिलाएं. इससे विवाह का योग शीघ्र बनता है.
- शीघ्र विवाह के लिए शुक्ल पक्ष के पहले बृहस्पतिवार की संध्या में 5 तरह की मिठाई के साथ-साथ छोटी इलायची व शुद्ध घी का एक दीपक जलाकर जल में प्रवाहित करें.
- यदि किसी कन्या की कुंडली में 'मंगलीक' योग होने के कारण उसका विवाह नहीं हो पा रहा है तो मंगलवार को 'मंगल चंडिका स्त्रोत' का तथा शनिवार को 'सुन्दरकांड' का पाठ करें.
- यदि किसी लड़के या लड़की के विवाह में किसी प्रकार की बाधा आ रही है, तो दीपावली को किसी भी श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में जाकर श्री हरि (विष्णु) को कलंगी और मां भगवती (लक्ष्मी) को सिंदूर के साथ बेसन के तीन लड्डू अर्पित करें. इससे विवाह में आने वाली बाधाएं नष्ट हो जाती हैं. •

क्या है मांगलिक दोष?

जन्मकुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें भाव में यदि मंगल स्थित हो तो वर अथवा कन्या को मंगली कहा जाता है तथा उनका विवाह मंगली वर, कन्या से करना शुभ समझा जाता है. मंगल ग्रह को ज्योतिष ग्रंथों में रक्तप्रिय एवं हिंसा तथा विवाद का कारक कहा गया है. सातवां भाव जीवन साथी एवं गृहस्थ-सुख का है. इस भाव में स्थित मंगल अपनी दृष्टि या स्थिति से गृहस्थ सुख को हानि पहुंचाता है. ज्योतिषियों की एक बड़ी संख्या जन्मकुण्डली में उपर्युक्त स्थानों पर मंगल को देखकर वर या कन्या को तत्काल मंगली घोषित कर देती है, फिर चाहे मंगल नीच राशि में हो या उच्च में, मित्र राशि में हो या शत्रु में. मंगल दोष के परिहार को या तो अनदेखा किया जाता है या शास्त्रीय नियमों की अवहेलना करने वाले परिहार वाक्यों को लागू करके त्रुटियुक्त मिलान कर दिया जाता है.



क्या कहते हैं ज्योतिष के शास्त्रीय मूलभूत नियमः फलित ज्योतिष के सर्वमान्य ग्रंथों के अनुसार जो ग्रह अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, मित्रराशि, नवांश में स्थित हो तथा वर्गोत्तम, षड्बली, शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वह सदैव शुभकारक होता है. इसी प्रकार नीचस्थ, शत्रुराशिस्थ, पापयुक्त, पापदृष्ट, षड्बलविहीन हो तो वह अशुभ कारक होता है.

नीचस्थो रिपुराशिस्थः खेटो भावविनाशकः।

मूलस्वतुङ्गमित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत् ॥ (जातकपारिजात 11/3)

पाप ग्रह भी यदि स्व, उच्च, मित्रराशिस्थ, नवांश, वर्गोत्तम, शुभयुक्त, शुभदृष्ट हों तो शुभ कारक होते हैं.

उपर्युक्त संदर्भों से यह स्पष्ट है कि जन्मकुण्डली के 1, 4, 7, 8, 12वें भाव में स्थित मंगल यदि स्व, उच्च, मित्र आदि राशि नवांश का, वर्गोत्तम, षड्बली हो तो मांगलिक दोष नहीं होता. प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों एवं फलित सूत्रों के अनुसार जन्मकुण्डली के 1, 4, 7, 8, 12वें भाव में स्थित मंगल भी निम्नलिखित परिस्थितियों में दोष कारक नहीं होताः

1. यदि मंगल इन भावों में स्व, उच्च, मित्रराशि नवांश का हो.
2. यदि मंगल इन भावों में वर्गोत्तम नवांश का हो.
3. यदि इन भावों में स्थित मंगल पर बलवान शुभ ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो.

मांगलिक दोष का विचार भावकुण्डली से भी करना चाहिये. क्योंकि चलित कुण्डली में संधि-स्थान पर स्थित मंगल का भावफल शून्य होता है. सप्तम भाव का स्वामी बलवान हो तथा अपने भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो मांगलिक दोष का परिहार हो जाता है. ●

कालसर्प योग के उपाय

- कालसर्प योग का सर्वमान्य शान्ति- उपाय रुद्राभिषेक है. श्रावण मास में अवश्य नियमित करें.
- बहते जलमें विधान सहित पूजनकर दूधसे पूरितकर चाँदी के नाग-नागिन के जोड़े को प्रवाहित करें.
- तीर्थराज प्रयाग में तर्पण एवं श्राद्ध कर्म सम्पन्न करें.
- कालसर्प योग में राहु की शान्ति का उपाय रात्रि के समय किया जाए. राहु के सभी पूजन शिव मन्दिर में रात्रि के समय या राहुकाल में करें.
- राहु के हवन हेतु दूर्वा का उपयोग आवश्यक है. राहु के पूजन में धूप एवं अगरबत्ती का उपयोग न करें. इसके स्थानपर कपूर, चन्दन का इत्र उपयोग करें.
- शिवलिंग पर मिसरी एवं दूध अर्पित करें. शिवताण्डवस्तोत्र का नियमित पाठ करें.
- घर के पूजास्थल में भगवान् श्री कृष्ण की मोरपंख युक्त मूर्ति का नियमित पूजन करें.
- पंचाक्षर मन्त्र का नियमित जप करें. नियमित मूलीदान एवं बहते जल में कोयले प्रवाहित करते रहने से स्थायी शान्ति प्राप्त होती है.
- मसूर की दाल एवं कुछ पैसे सफाई कर्मचारी को प्रातः काल दें.
- निम्न नवनाग स्तोत्र के नौ पाठ प्रतिदिन करें.

अनन्तं वासुकिं शेष पद्मनाभं च कम्बलम् ।
शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम् ।
सायङ्काले पठेन्नित्यं प्रातः काले विशेषतः ॥

- प्रथम भाव- गले में हमेशा चाँदी का चौकोर टुकड़ा धारण करें.
- द्वितीय भाव- घर के उत्तर-पश्चिम कोण में सफाईकर मिट्टि के बर्तन में पानी भर दें. प्रतिदिन पानी बदलें. बदले हुए पानी को चौराहे में डालें.
- तृतीय भाव- अपने जन्मदिनपर गुड़, गेहूँ एवं ताँबे का दान करें.
- चतुर्थ भाव- प्रतिदिन बहते हुए जल में दूध बहायें.
- पंचम भाव- घर के ईशान कोण में सफेद हाथी की मूर्ति रखें.
- षष्ठ भाव- प्रत्येक माह की पंचमी तिथि को एक नारियल बहते हुए जल में प्रवाहित करें.
- सप्तम भाव- मिट्टी के बर्तन में दूध भरकर निर्जन स्थान में रख आएं.
- अष्टम भाव- प्रतिदिन काली गाय को गुड़, रोटी, काले तिल एवं उड़द खिलायें.
- नवम भाव- शिवरात्रि के दिन 18 नारियल सूर्योदय से सूर्योस्त तक 18 मन्दिरों में रखें. यदि 18 मन्दिर पास में न हों तो दुबारा उसी क्रम से मन्दिरों में दान कर सकते हैं.
- दशम भाव- किसी महत्त्वपूर्ण कार्य को घर से जाते समय काली उड़द के दाने सिर से सात बार घुमाकर बिखेर दें.
- एकादश भाव- प्रत्येक बुधवार को घर की सफाईकर कचरा बाहर फेंक दें. उस दिन फटा वस्त्र पहनें.
- द्वादश भाव- प्रत्येक अमावस्या को काले कपड़े में काला तिल, दूध में भीगे जौ, नारियल एवं कोयला बाँधकर जल में बहायें.

शिवपंचाक्षर मन्त्र एवं शिवपंचाक्षर स्तोत्र का नियमित जप करने एवं कालसर्प यन्त्र के नियमित पूजन शिवलिंग तथा चित्रपर चन्दन का इत्र लगाने से शान्ति प्राप्त होती है. लगातार 45 दिन का अनुष्ठान निश्चित शान्ति देता है. अनुष्ठान के समय अथवा मन्त्र जप के दौरान केवल इत्र एवं कपूर का प्रयोग ही करें. अगरबत्ती के धुएँ एवं दीप से शिवपंचाक्षर मन्त्र एवं शिवपंचाक्षर स्तोत्र का नियमित जप करने एवं कालसर्प यन्त्र के नियमित पूजन शिवलिंग तथा चित्रपर चन्दन का इत्र लगाने से शान्ति प्राप्त होती है. लगातार 45 दिन का अनुष्ठान निश्चित शान्ति देता है. अनुष्ठान के समय अथवा मन्त्र जप के दौरान केवल इत्र एवं कपूर का प्रयोग ही करें. अगरबत्ती के धुएँ एवं दीप से नागों को गर्माहट मिलती है,

क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 72

जिससे वे क्रोधित होते हैं, अतः इन वस्तुओं का उपयोग न करें.

शिव पंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
पञ्चाक्षीमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधी।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

शिवकृपा से कुछ भी अप्राप्य नहीं है. माँ नर्मदा का नाम जप करते हुए शिवलिंग पर नर्मदा जल की निरन्तर धार छोड़ते हुए निम्न मन्त्रका जप करने से कालसर्प योग, पितृदोष, शापित कुण्डली के दोषों का पूर्णतः शमन सम्भव हो जाता है.

नर्मदायै नमः प्रातर्नदायै नमो निशि।
नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः।।

दैनिक कार्यों को करने के दिन

कार्य	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ
बाल (सिर) धोना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
नाखून काटना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
साफ-सफाई करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम
कपड़ा धोना	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ

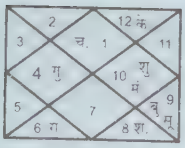
किस दिन क्या कार्य करना शुभ

वार	यात्रा में शुभ दिशाएँ	यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	शिक्षा सम्बन्धी	व्यापार एवं नौकरी सम्बन्धी कार्य
रविवार	पूर्व उत्तर आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	पश्चिम, वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मेडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी.	राज्य प्रशासनिक कार्य, सेनाधिकारी, ज्वेलर्स, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मेडिकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि.
सोमवार	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	लेखनादि कार्य, मेडिकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी.	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगंधी (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि.
मंगलवार	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	उत्तर पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चिम)	बिजली, सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि.	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी, खेल के सामान, इलेक्ट्रोनिक्स, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य.
बुधवार	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	उत्तर पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक, वकालत, तकनीक, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना.	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय.
गुरुवार	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि.	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य.
शुक्रवार	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम)	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा.	संगीत, सिनेमा, विदेश संबंधित, टेलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रुई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित दव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय,
शनिवार	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना.	मशीनरी, लोहा, लकड़ी, चमड़ा, सीमेंट, तेल, पेट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं ऑपरेशन कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य.

वार्षिक राशिफल - विक्रम संवत् 2073

मेषः चु चे चो ला ली लू ले लो अ

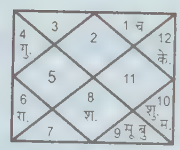




वर्ष की शुरुआत गुरु की दृष्टि शुभ होने के कारण बहुत अच्छी होगी. अर्थात् नयी उन्नति के योग के साथ-साथ पुराने और अटके हुए काम भी बनेंगे. आमदनी में उछाल संभव है, और जहाँ तक नौकरी में प्रमोशन या व्यापार में नयी योजनाओं का सवाल है वह भी 10 अगस्त तक कुछ न कुछ सकरात्मक प्रभाव दिखलाएगा. लेकिन यहाँ आपके ध्यान में एक बात लानी होगी कि वर्षभर खूब मेहनत और व्यर्थ की दौड़धूप करनी पड़ सकती है. आपका उत्साह ही अच्छे रिजल्ट ला सकता है.

वृषः ई उ ए ओ वा वी वृ वे वो

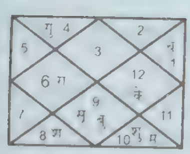




नये वर्ष की शुरुआत से लेकर 18 जनवरी तक ग्रहों की स्थिति बहुत अनुकूल है, अनुकूलता का साम्राज्य आपको सुख-शांति, धन-वैभव और यश-प्रतिष्ठा के नये-नये योग संपादित करेगा, जिससे आत्मविश्वास में जोरदार वृद्धि होगी. जिसके फलस्वरुप नये-पुराने संम्पर्कों से हर तरह का सहयोग मिलेगा. ता.19 जनवरी कुछ समय के लिए शुक्र अष्टमस्थ होने के कारण कार्यों में व्यवधान व कुछ व्यर्थ की परेशानी आ सकती है. ग्रहों के समीकरण एक बार फिर आपको प्रसन्न करने से नहीं चूकेंगे.

मिथुनः क की कु घ ड छ के को ह

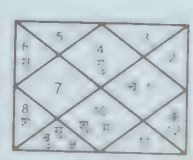




ग्रहों के योग-संयोग एवं बुध अष्टम भाव गत होने के कारण इस वर्ष की शुरुआत शारीरिक तौर पर ढीली ढाली रहेगी. इसलिए स्वास्थ्य संबंधी किसी भी शिकायत पर आपको पूरा ध्यान देना होगा अन्यथा इसका दुषप्रभाव जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है आपके व्यक्तित्व की विशेषता पर यह साल पूरा निर्भर रहेगा. अतिथि अपना व्यवहार सामने वाले के आधार पर न करते हुए अपने सद्गुणों के तहत करें, जिसका, सुखद परिणाम यह होगा कि आपको न सिर्फ लाभ होगा बल्कि प्रसंशा भी मिलेगी.

कर्कः हि हु हे हो डा डी डू डे डो



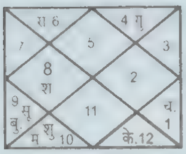


वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक दृष्टि से आपके पक्ष में रहेगा. सोच-समझ कर खर्च करें. समय का नियोजन करें व सदुपयोग करें. पत्नी का स्वास्थ्य आपकी परेशानी का कारण बन सकता है. वाहन सुख प्राप्त होगा. ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा. अजनबी या किसी परदेशी पर भरोसा न रखें विश्वासघात हो सकता है. भावुक होना या भावुक स्वाभाव आपको परेशानी में डाल सकता है. किसी लालच में न फंसे. याद रखें कि प्ररिश्रम का फल मीठा होता है, और परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता.

वार्षिक राशिफल - विक्रम संवत् 2073



सिंहः मा मी मु मे मो टा टि टू टे

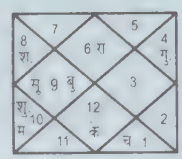


भाग्य दुर्बल होने कारण यह वर्ष थोड़ा कठिन गुजरेगा. पारिवारिक अशांति एवम् मित्रों से अनबन की वजह से मन क्षुब्ध रहेगा. आर्थिक हानि की संभावनाएँ है. शेअर बाजार से दूर रहें. इस वर्ष भी विवाह के कमजोर आसार हैं. माता-पिता की सेवा करें व उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें. पानी से बच कर रहें. पेट संबंधित बिमारी हो सकती है अतः खान पान पर विशेष ध्यान देने की अवश्यकता है. हौसला मजबूत रखें एवम् सकारात्मक सोच रखें.

कन्याः टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

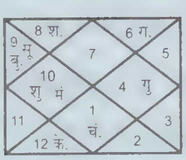


साल के पहले भाग में बृहस्पति की लाभ भाव में उपस्थिति यह दर्शा रही है कि इस वर्ष आपको कई तरह के लाभ मिल सकते हैं. वर्ष 2015 के राशिफल के अनुसार घर-परिवार के लोग भी ख़ुशहाल होंगे, लेकिन राहु की प्रथम भाव में उपस्थिति को देखते हुए स्वास्थ्य का ख़्याल रखना बहुत ज़रूरी होगा. भविष्यफल 2015 के दृष्टिकोण से प्रेम या शादी और संतान सभी के लिए साल का पहला भाग काफी बेहतर रहने वाला है. राशिफल 2015 की तुलना से काम-धंधे व शिक्षा के लिए भी साल का पहला भाग शुभ है.





तुलाः रा री रू रे रो ता ती तू ते

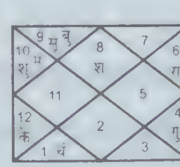


तरक्की भरपूर होने के आसार प्रबल हैं. मन चाहे जीवन साथी की मनोकामना पूरी होगी. मित्रों से भरपूर सहयोग मिलेगा. व्यवसाय में मनचाही सफलता मिलेगी. नौकरी में प्रमोशन होगा. समाज में प्रसिध्दि प्राप्त होगी. समाज सेवा में आपका रुझान आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बनायेगा. परिवार के साथ आप पर्यटन यात्रा पर जा रहे हैं. ससुराल पक्ष से आदर-सम्मान प्राप्त होगा. प्रापर्टी में वृध्दि के लक्षण हैं. इस वर्ष का भाग्य आपके अनुकूल होने से आप प्रसन्न रहेंगे.

वृश्चिकः तो ना नी नू ने नो या यी यू



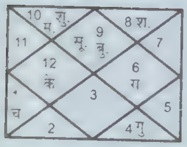
मानसिक रूप से मजबूत बनेंगे. आप यह जान सकेंगे कि आपकी असफलता की वजह क्या है. यदि आप वही करते रहेंगे जो करते आये हैं तो परिणाम भी वही रहेगा. जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता है. अच्छी पुस्तकें पढ़िये और अपने विचारों को बदलें. कड़वा बोल न बोलें एवम् जीवन में अनुशासन लायें. बुरी आदतों का त्याग करें. भाग्य दुर्बल है, इस कारण व्यवसाय में नुकसान हो सकता है. नौकरी छूट सकती है. समय प्रतिकूल होने पर भी धीरज रखने से पीड़ा कम हो सकती है.



वार्षिक राशिफल-विक्रम संवत् 2073



धनुः ये यो भा भी भू धा फ ढ भे

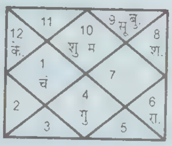


राजनीति क्षेत्र में उपालब्धियाँ प्राप्त होंगी, साथ ही साथ विरोधियों की संख्या भी बढ़ेगी. संतान सुख की प्राप्ति होगी. पत्नी से मनमुटाव हो सकता है. रोमांस में भी कुछ खास सफलता मिलती नहीं दिख रही. आपके लिए नौकरी से ज्यादा लाभ दायक व्यापार करना है. नियमित दिनचर्या पर ध्यान दें. स्वास्थ्य नरम बना रहेगा. शेअर में निवेश कर सकते है., लाभ होगा. बिल्डींग मटेरियल व्यावसायियों का समय ठीक रहेगा. किसी तरह की बड़ी रिस्क न लें.

मकरः भो जा जी जू जे जो खा खू खे खो गा गी

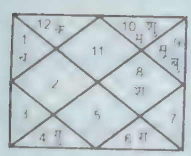


सुगम एवम् यशस्वी भविष्य की दस्तक इस वर्ष मिल रही है. मार्ग के हर एक अवरोध दूर होंगे. जिस किसी कार्य में हाथ लगायेंगे, अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे. माता-पिता से अनबन हो कसती है. पत्नी से भी विवाद हो सकता है. अति उत्साह व अति आत्मविश्वास नुकसान देगा. शांत रहना ही आपके लिए लाभदायक रहेगा. पानी एवम् सड़क दुर्घटना की संभावना है अतः सावधानी बरतें. गहरे रंग के कपड़े आपको व्यक्तित्व को निखारेंगे. लेखन में रूचि रखने वाले इसे अपना कैरियर भी बना सकते हैं.





कुम्भः गु गे गो सा सी सू से सो दा

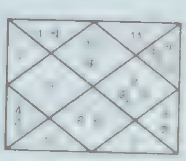


शुभ ही शुभ, आनन्द ही आनन्द. यह वर्ष आपके लिए बहुत ही मंगलदायी है. जो भी कार्य करेंगे वह सफल होगा. समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी. परिवार का वातावरण भी सुखद रहेगा. मुकदमे का परिणाम आपके पक्ष में रहेगा. एक्टिंग को अपना कैरिअर बना सकेंगे. महिलायें फैशन डिजाइनिंग में आपना भाग्य आजमा सकती हैं. हर किसी पा भरोसा न करें, अन्यथा धोखा हो सकता है. धन धान्य व प्रतिष्ठा से भरपूर इस वर्ष का लाभ उठायें, समय का सदुपयोग करें.

मीनः दी दू थ झ ञ दे दो चा चि



वर्ष के प्रारंभ में सफलता आपके कदम चूमेगी. वैसे पूरे वर्ष में भी भाग्य ठीक ही रहेगा. इस वर्ष अपने सभी नियोजित कार्यों को आप पूरा कर पायेंगे. किसी तीर्थ यात्रा पर जा सकेंगे. माता की ओर से कष्ट हो सकता है. आपका जीवनसाथी हर मुश्किल समय में आपका साथ देगा. गीत-संगीत में रुचि बढ़ेगी. किसी खेल में भी अपना कैरियर बना सकते हैं. समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी मुकदमे के नतीजे में विलम्ब होने की संभावना है. सावधान रहें, किसी नजदीकी महिला से कुछ समय के लिए कष्ट हो सकता है. इसलिए मन छोटा न करें.



श्री सिद्धि विनायक अष्टोत्तरशतनामावली

ॐ गजाननाय नमः
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ विघ्नराजाय नमः
ॐ विनायकाय नमः
ॐ द्वैमातुराय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ प्रमुखाय नमः
ॐ सन्मुखाय नमः
ॐ कृतिने नमः
ॐ ज्ञानदीपाय नमः
ॐ सुखनिधये नमः
ॐ सुराध्यक्षाय नमः
ॐ सुरारिभिदे नमः
ॐ महागणपतये नमः
ॐ मान्याय नमः
ॐ महन्मान्याय नमः
ॐ मृडात्मजाय नमः
ॐ पुराणाय नमः
ॐ पुराणाय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ पूष्णे नमः
ॐ पुष्करिणे नमः
ॐ पुण्यकरिणे नमः
ॐ पुण्य कृते नमः
ॐ अग्रगण्याय नमः
ॐ अग्रपूज्याय नमः
ॐ अग्रगामिने नमः
ॐ मन्त्रकृते नमः

ॐ चामीकरप्रभाय नमः
ॐ सर्वस्मै नमः
ॐ सर्वोपास्याय नमः
ॐ सर्वकर्त्रे नमः
ॐ सर्वनेत्रे नमः
ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः
ॐ सर्व सिद्धाय नमः
ॐ सर्ववन्द्याय नमः
ॐ महाकालाय नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ हेरम्बाय नमः
ॐ लम्बजठराय नमः
ॐ हस्वग्रीवाय नमः
ॐ महोदराय नमः
ॐ मदोत्कटाय नमः
ॐ महावीराय नमः
ॐ मन्त्रिणे नमः
ॐ मंगलदाय नमः
ॐ प्रमथार्च्याय नमः
ॐ प्राज्ञाय नमः
ॐ प्रमोदाय नमः
ॐ मोदकप्रियाय नमः
ॐ धृतिमते नमः
ॐ मतिमते नमः
ॐ कामिने नमः
ॐ कपित्थप्रियाय नमः
ॐ ब्रह्मचारिणे नमः
ॐ ब्रह्मरूपिणे नमः

ॐ ब्रह्मविदे नमः
ॐ ब्रह्मवन्दिताय नमः
ॐ जिष्णवे नमः
ॐ विष्णुप्रियाय नमः
ॐ भक्तजीविताय नम;
ॐ जितमन्मथाय नमः
ॐ ऐश्वर्यदायिने नमः
ॐ गुहज्यायसे नमः
ॐ सिद्धसेविताय नमः
ॐ विघ्नकर्त्रे नमः
ॐ विघ्नहर्त्रे नमः
ॐ विश्वनेत्रे नमः
ॐ विराजे नमः
ॐ स्वराजे नमः
ॐ श्रीपतये नमः
ॐ वाक्तपतये नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ शृंगारिणे नमः
ॐ श्रीवत्सलाय नमः
ॐ शिवप्रियाय नमः
ॐ शीघ्रकारिणे नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ शिवनन्दनाय नमः
ॐ बलोद्धताय नमः
ॐ भक्तनिधये नमः
ॐ भावगम्याय नमः
ॐ भवात्मजाय नमः

ॐ महते नमः
ॐ मंगलदायिने नमः
ॐ महेशाय नमः
ॐमहिताय नमः
ॐ सत्वधर्मिणे नमः
ॐ सदाधाराय नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ सत्यपराक्रमाय नमः
ॐ शुभांगाय नमः
ॐ शुभ्रदन्ताय नमः
ॐ शुभदाय नमः
ॐ शुभविग्रहाय नमः
ॐ पन्चपातकनाशिने नमः
ॐ पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः
ॐ विश्वेशाय नमः
ॐ विबुद्याराध्यपदाय नमः
ॐ वीरवराग्रजाय नमः
ॐ कुमारगुरुवन्धाय नमः
ॐ कुंजरासुरभंजनाय नमः
ॐ वल्लभावल्लभाय नमः
ॐ वराभयकराम्बुजाय नमः
ॐ सुधाकलशहस्ताय नमः
ॐ सुधाकरकलाधराय नमः
ॐ पंचहस्ताय नमः
ॐ प्रधानेशाय नमः
ॐ पुरातनाय नमः
ॐ श्रीवरसिद्धिविनायकाय नमः

श्री कृष्ण स्तुति



वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥1॥
वेणु विभूषितकरान्नवनीरदाभात,
पीताम्बरादरुणबिम्ब फलाधरोष्ठात्,
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादरविन्द नेत्रात्,
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं, न जाने ॥2॥
कस्तुरीतिलकं ललाटपटले वक्षः स्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥3॥



श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेत देव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥1॥
विक्रेतुकामाखिल गोपकन्या मुरारिपादार्पित चित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥2॥
गृहे गृहे गोपवधू कदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगे ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥3॥
सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्या ।
ते निश्चितं तन्मयतां ब्रजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति ॥4॥
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्त भक्तार्तिविनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥5॥
सुखावसाने इदमेवसारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥6॥
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृत देव देव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥7॥
जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रियात्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि ।
आवर्णयेथा ममदेहि जिह्वे गोविन्द दामोदर माधवेति ॥8॥
त्वामेव याचे ममदेहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते ।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्तया गोविन्द दामोदर माधवेति ॥9॥

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्त महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥1॥

नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुरभयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥2॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्व सुष्टभयंकरि । सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥3॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्ति-मुक्ति प्रदायिनि । मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥4॥

आद्यन्तरहिते देवि अद्यशक्ति महेश्वरि । योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि मनोऽस्तु ते ॥5॥

स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे । महापाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥6॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥7॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥8॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः । सर्व सिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥9॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् । द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्य समन्वितः ॥10॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् । महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥11॥

श्रीनवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणरोऽस्मि दिवाकरम् ॥1॥

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥2॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥3॥

प्रियङ्गकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥4॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥5॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तांर भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥6॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥7॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रदित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहु प्रणमाम्यहम् ॥8॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम् ॥9॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः । दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥10॥

नरनारीनृपणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् । ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम ॥11॥

(महिर्षव्यासविपचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

विनती पद

इतना तो करना स्वामी! जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥1॥
श्रीगंगाजी का तट हो, यमुना का बंशी-वट हो ।
मेरे सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥2॥
श्रीवृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो ।
विष्णु-चरण का जल हो, जब प्राण तनसे निकले ॥3॥
सन्मुख सांवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥4॥
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥5॥
केसर तिलक हो आला, मुख चन्द्र-सा उजाला ।
डालूं गले में माला, जब प्राण तन से निकले ॥6॥
कानों जड़ाऊँ बाली, लटकी लटें हों काली ।
देखूं छटा निराली, जब प्राण तन से निकले ॥7॥
पीताम्बरी कसी हो, होठों पै कुछ हंसी हो ।
छबि यह ही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले ॥8॥
पचरंगी काछनी हो, पट-पीत से तनी हो ।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले ॥9॥
पग धो तृषा मिटाऊँ, तुलसी का पत्र पाऊँ ।
सिर चरण-रज लगाऊँ, जब प्राण तन से निकले ॥10॥
आना अवश्य आना, राधे को साथ लाना ।
दर्शन मुझे दिखाना, जब प्राण तन से निकले ॥11॥
जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे ।
यम दरश न दिखावे, जब प्राण तन से निकले ॥12॥
मेरा प्राण निकले सुखसे, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले ॥13॥
उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम! भूल जान ।
मुरली की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ॥14॥
सुधि होवे नाहिं तनकी, तैयारी हो गमन की ।
लकड़ी हो ब्रज-वन की, जब प्राण तन से निकले ॥15॥
यह नेक-सी अरज है, मानो तो क्या हरज है?
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले ॥16॥

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥1॥
मेरा निश्चय है बस एक यही, एक बार तुम्हे पा जाऊ मैं ।
अर्पण करदूँ दुनिया भर का, अब भार तुम्हारे हाथों में ॥2॥
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, साकार तुम्हारे हाथों में ॥3॥
यदि मानव का मुझे जन्म मिले तो श्री चरणों का पुजारी बनूँ ।
इस पूजन की इक-इक राग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ॥5॥
मुझे में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥6॥

भगवान् तुम्हारे चरणों में, मैं तुम्हें रिझाने आई हूं ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूं ॥1॥
प्रभू का चरणामृत लेने को, हैपास मेरे कोई पात्र नहीं ।
आंखों के दोनों प्यालों में, कुछ भीख मांगने आई हूं ॥2॥
थुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान्। आपके चरणों में ।
मैं भिक्षुक हूं तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आई हूं ॥3॥
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो ।
रो-रोकर आज आंसुओं का, मैं हार चढ़ाने आई हूं ॥4॥

भगवान! मोरी नैया, उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ॥
छल बल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर ।
तो देखते न रहना, झट आकर छुड़ा लेना ॥
संभव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ दया करके, मुझको न भुला देना ॥

श्री गणेश जी की आरती



जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूषक की सवारी॥
अंधन को आँख देत, कोढ़ियन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे संत करे सेवा॥
सुर श्याम शरण आए, सफल कीजै सेवा॥

संकटनाशक गणेश स्तोत्र

ॐ गं गणपतये नमः

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामा-ऽर्थसिद्धये ॥1॥
प्रथम वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥2॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव त ।
सप्तमं विघ्नराजं च धुम्रवर्ण तथाऽष्टमम् ॥3॥
नवमं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥4॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥5॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥6॥
जपेद् गणपतिस्त्रोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नाऽत्र संशयः ॥7॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥8॥

गणपति की सेवा, मंगल मेवा सेवा से सब विघ्न टरे।
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े सब अरज करे ॥
ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण बामविराजे, उरआनन्द से चँवर करे।
धूप दीप और लिये आरती, भक्त खड़े जयकार करै॥
गुड़ के मोदक भोग लगत है, मूषक वाहन चढया फिरै।
सौम्य रूप सेवा गणपति की, विघ्न भागज्या दूर परे॥
भादौं मास और शुक्ल चतुर्थी, दोपार दिन पूर परे।
लियो जन्म गणपति प्रभुजीने, दुर्गा मन आनन्द भरे॥
अद्भुत बाजा बज्या इंद्र का, देव बंधु जहाँ गान करे।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो, नाम सुने सब विघ्न टरे॥
आन विधाता बैठै आसन, इंद्र अप्सरा नृत्य करें।
देख वेद ब्रह्माजी जाको, विध्नविनाशक नाम धरे॥
एकदन्त गजबदन विनायक, त्रिनयन रुप अनुप धरे।
पग खम्बासा उदर पुष्ठ हैं, देख चंद्रमा हास्य करे॥
देय श्राप श्री चंद्रदेव को, कलाहीन तत्काल करें।
चौंदह लोक में फिरें गणपति, तीन भुवन में राज करे॥
उठ प्रभात जो आरती गावें, ताके सिर यश छत्र फिरें।
गणपति की पूजा पहले करनी, काम सभी निर्विघ्न सरे।

श्री महालक्ष्मी जी की आरती



ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शुलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मी सरोजस्थिताम् ॥
जय त्वं पद्मपलाशाक्षि, जय त्वं श्रीपर्ति प्रिये।
जय त्व मार्तमहालक्ष्मी, संसारार्णव तारिणी॥

ॐ जय लक्ष्मीमाता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसदिन ध्यावत हर विष्णु धाता ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग की माता।
सूर्य चंद्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥
दुर्गारुप निरंजनी सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता।
तू है पाताल-निवासिनि, तू ही है शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुम से आता॥
शुभ-गुण-मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोइ नहिं पाता॥
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता॥

श्री विष्णु जी की आरती



सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं।
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्॥
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं।
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावै, दुःख विनसे मन का।
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का ॥ॐ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करुँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण पति।
किस बिधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीनबन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ॐ॥
तन-मन-धन जीवन प्रभु सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ॥ॐ॥
श्याम सुन्दर जी की आरति, जो कोई नर गावें ।
कहें शिवा नन्द स्वामी, सुख सम्पति पावें ॥ॐ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

श्री शिवशंकर जी की आरती

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥



जय शिव ॐ कारा, हो मन भज शिव ॐ कारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धंगी धारा ॥ॐ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजै ॥ॐ॥
दोभुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहै ॥ॐ॥
अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चँदा, भोले शुभकारी ॥ॐ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे ॥ॐ॥
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ॥ॐ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ॐ॥
त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवाञ्छित पावै ॥ॐ॥

॥ द्वादस ज्योतिर्लिंगानि॥

सौराष्ट्रे सोमानाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकाल॥
ॐ कार ममलेश्वरम्॥ परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीमशंकम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारूका बने॥ वाराणस्यां तु विश्वेशं,
त्र्यम्बकं गौतमी तटे। हिमालये तु केदारं, घुश्मेशं च शिवालये॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति॥

माँ जगदम्बा जी की आरती

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनी,
बिभ्राणामलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजें॥



ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा, शिव री॥ ॐ जय...
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रबदन नीको॥ ॐ जय...
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कंठन पर साजे॥ ॐ जय...
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर मुनी जन सेवत तिनके दुखहारी॥ जय अम्बे..
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत सम ज्योती॥ जय अम्बे..
शुंभ निशुंभ बिडारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ जय अम्बे...
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय अम्बे...
ब्रह्माणी, रूद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे...
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरुं।
बाजत ताल मृदंगा अरू बाजत डमरु॥ जय अम्बे...
भुजा चार अति शोभित वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ जय अम्बे...
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती॥ जय अम्बे...
माँ अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावें।
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पति पावै॥ जय अम्बे..

आरती श्री श्यामबाबा जी की



ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे।।
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे।
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे।
मोदक खीर चुरमा, सुवरण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे।
भक्त आरती गावे, जय जयकार करे।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे।
सेवकजन निजमुख से, श्री श्याम उच्चरे।।
श्री श्याम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत मनोहर स्वामी, मनवांछितफल पावे।।
ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे।।

आरती श्री राणीसती दादी जी की



ॐ जय श्री राणी सतीजी मैया, जय आनन्द मोरी
अपने भक्त जनों की, दूर करो विपती।
अवनी अनन्त ज्योति अखण्डित, मंडित चहुँ कुकुभ
दुर्जन दलन खड़ग की, विद्युत सम प्रतिभा।
मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न पड़े
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे।
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग घुरे
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे।
सप्त मातृका करे आरती, सुरगण ध्यान धरे।
विविध प्रकार के व्यंजन, श्रीफल भेंट धरे।
संकट विकट विदारिणी नाशिनी हो कुमति
सेवक जन हृदय पटले, मृदुल करण सुमति।
अमल कमल दल लोचनी, मोचनी त्रय तापा
सेवक आयो शरण आपकी, लाज रखो माता।
श्री राणी सती मैयाजी की आरती जो कोई नर गावे
सदन सिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे।

॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

॥ दोहा ॥



श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥



॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर-बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।
संकर सुवन केसरी-नंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

क्रमशः पृष्ठ क्रमांक 87

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटे सब पीरा। जो सुमरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।

।। सियावर रामचन्द्र की जय। बोलो वीर बजरंग बली की जय ।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की ।। टेक ।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै ।। 1 ।।
अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई ।। 2 ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।। 3 ।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवन सुत बार न लाई ।। 4 ।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काँज सँवारे ।। 5 ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे ।। 6 ।।
पैठी पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे ।। 7 ।।
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे ।। 8 ।।
सुरनरमुदि जन आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारै ।। 9 ।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई ।। 10 ।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि वैकुंठ परमपद पावै ।। 11 ।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।।
देवन आनि करी बिनती तब, छांड़िं दियो रबि कष्ट निवारो।
को नाहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो....
बालि की त्रास कपिस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो।।
कै द्विज रुप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो, को नहि जानत...
अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सौं जू, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्रान ऊबारो, को नहिं जानत...
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो, को नहिं जानत...
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो, को नहिं जानत...
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो, को नहिं जानत...
बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो, को नहिं जानत...
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखी बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कुछ संकट होय हमारो, को नहिं जानत...

।। दोहा ।।

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्रीमन्त्रपुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि

धर्माणि प्रथमान्यास न।

ते ह नाकम्महिमानः सचन्त

यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥1॥

ॐ राजधिराजाय प्रसह्य साहिने

नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे

स मे कामान्कामाय मह्यं

कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥2॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं

पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं

समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः

सार्वायुषाआन्तादापरार्धात् ॥3॥

पृथिव्यै समुद्रर्यन्ताया

एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगतो

मरूतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे

आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥4॥

॥ मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरम् हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥1॥
वचनं मधुरं चरित मधुरं वसनं मधुरम् वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥2॥
वेणुर्मधरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥3॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥4॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिल मधुरम् ॥5॥
गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥6॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्त मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्ट मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥7॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिमधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥8॥

(इति श्रीमद् वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम)

सन्तान गोपाल मंत्र

मनुष्य पर तीन ऋण जन्म के समय से ही रहते हैं. देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण से मनुष्य तभी उऋण हो सकता है, जब वंश वृद्धि के लिए, सुयोग्य संतान उत्पन्न कर लें. कई स्त्रियाँ इस मातृ सुख से लम्बे काल तक वंचित रहती हैं. जिसके कई कारण है, शास्त्रों के अनुसार संतान प्राप्ति के लिए हरिवंश पुराण, संतान-गोपाल मंत्र, शतचंडी का विधान, पार्थिव शिवपूजन, महारूद्र प्रयोग, सपात्र पितृ-श्राद्ध, पितृ-स्तोत्र का पाठ आदि कई उपाय बताये हैं. इससे सर्वाधिक सरल उपाय संतान गोपाल मंत्र का जाप और दशांश हवन आदि कर्म है.

यह मंत्र सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र पहनें. एक पाटे पर बालगोपाल स्वरूप कृष्ण की तस्वीर या मूर्ति लाल वस्त्र बिछाकर रखें. पूर्वाभिमुख बैठकर, अपने दायीं तरफ दीपक प्रज्वलित करें. भगवान को पहले स्नान करायें. उसके बाद चन्दन, अक्षत, पुष्प, तुलसी-पत्र, धूप-दीप, नैवेद्य आदि से उनकी पूजा करके एकाग्रचित्त से मंत्र जाप करें. जाप के बाद, जाप श्री कृष्ण भगवान को ही अर्पण करे. खुद भी प्रसाद लें. जाप पूर्ण होने पर दशांश हवन भी करें. जाप के समय हमेशा याचक भाव बनाये रखें.

परामर्श: योग्य विद्वान के मार्गदर्शन में उपरोक्त विधि संपन्न करे ताकि पूर्ण रुप से लाभान्वित हो सकें.

पुत्र संतान की कामना करने वाले

पति या पत्नी को चाहिये कि प्रात: शौच-स्नानादि से निवृत हो शिवजी का पूजन करे और इस स्तोत्र का आठ या अट्ठाइस बार पाठ करें. इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त पाठ करते रहने से पुत्र की प्राप्ति होती है. मूल स्त्रोत इस प्रकार है-

ॐ देवकी सुत गोविन्द, वासुदेव जगत्पते। देहिमे तनयं कृष्ण, त्वामहं शरणं गतः॥

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचन ।
एको रूद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मोदकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ।।१।।
एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो नाना रूपेष्वेकरूपोस्यरूपः।
यद्वत्प्रत्यर्स्क एकोऽप्यनेक - स्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ।।२।।
रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रूप्यं नैरः पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ ।
यद्वत्तद्वद् विश्वगेष प्रपमूच्चो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ।।३।।
तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः ।
पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्तवां प्रपद्ये ।।४।।
शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रे-रघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् ।
व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ।।५।।
नो वेदास्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताखिलस्य ।
नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ।।६।।
नो ते गोत्रं नेश जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः ।
इत्थंभूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजे त्वाम् ।।७।।
त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः ।
त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बाल - स्तात्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि ।।८।।





नित्य उपासना

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम् सुप्रभातम्।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव! शुभकार्येषु सर्वदा।।

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने। जन्मान्तरसहस्त्रेषु दारिद्रं नोपजायते।।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृपातृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे! सर्वार्थसाधिके! शरण्ये त्र्यंबके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तुते।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।

काषायवस्त्रं करदंडधारिणं कमंडलुं पद्मकरेण शंखम्।
चक्रंगदाभूषित भूषणाढ्यं श्रीपादराजं शरणं प्रपद्ये।।

आदौ रामतपोवनाधिगमनं हत्वा मृगं कांचनम्, वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम्। पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननं ह्येतद्धि रामायणम्।।

आदौ देवकिदहेगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम्, मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम्, एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्, नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः।।

फुल्लेन्दीवरकांतिमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियम्, श्रीवत्सांकमुदार कौस्तुभधरं पीतांबरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं, गोविदं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे।।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥
करारविंदेन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनिवेशयंतम्। वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥
अच्युतं केशवं रामनारायणम्, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिमर्म॥ वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम॥
मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वंदे परमानदमाधवम्॥
नमो दैव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून् वसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते!॥
पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः॥
अहल्या द्रौपदी सीता तारा मंदोदरी तथा। पंचकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काँची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥
नारायणं निराकारं नरवीरं नरोत्तमम्। नृसिंहं नागनाथं च तं वन्दे नरकान्तकम्॥
राघवं रामचंद्रं च रावणारिं रमापतिम्। राजीवलोचनं रामं तं वन्दे रघुनंदनम्॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः गुरुः साक्षात्परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
तुलसि! श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे। नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेवाविद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणोम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये
सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मोशानजनार्दनः।

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा, कावेरी सरयू महेंद्रतनया चर्मण्वती वेदिका।
क्षिप्रा वेत्रवति महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी, पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगल

प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड शुंभासुर प्रमुख दैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलाम् चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरुपाम्।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगदव्यापिनीं, वीणापुस्तकधारणीमभयदां जाडयांधकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विद्धतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरी भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदा

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्ये, नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुम्, चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम।।
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसम् रत्नाकल्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याधिकृति वसानम्,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

प्रातर्नामामि गिरिशं गिरिजार्धदेहम्, सर्गस्थिति-प्रलयका-रणमादिदेवम्।
विश्वेश्वरं विजितविश्व-मनोऽभिरामं, संसार रोग हर मौषधमद्वितीयम्।।

शुभं करोति कल्याणमारोग्यं धनसंपदः। शत्रुबुद्धिविनाशाय दीप्ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिः जनार्दनः। दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोस्तु ते।।

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः। अटव्यां नारसिंहश्च, सर्वतः पातु केशवः।।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्। तत्संर्व क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर! यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे।।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

आदिदेव! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः दिवाकर नमस्तुभयं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।

शरणागतदीनार्त-परित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि! नारायणि। मनोऽस्तुते।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयुथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

DR. PREM GUPTA

VASTU | PALMIST | LIFE CONSULTANCY

शुभ विवाह! एक ऐसा **जीवन उत्सव** जहां आत्मा भी नृत्य करती है. हम ऐसे उत्सवों को आपके लिए सिर्फ बनाते ही नहीं सजाते भी हैं.



Designed by: 9Dzine - 9833219322

योतिष विज्ञान | हस्तरेखा | वास्तु | अंक विज्ञान | फेस रीडिंग | जीवन उत्सव | लाइफ कोचिंग | कॉर्पोरेट डिजाइन
लाभदायक टिप्स | पूजा अनुष्ठान | कालदर्शन | मिनी कालदर्शन | समय पंचांग

5, 3rd फ्लोर, कमला स्पेसेस, कोहिनूर शोरूम के ऊपर, खीरा नगर के पास, एस. वी. रोड, सांताक्रुज (प.), मुंबई-400 054

www.drpremgupta.com | info@drpremgupta.com

9022031009 • 9820045774 • 26607001 - 6


Rajendraprasad K Jhunjhunwala